प्रस्तावना

गीता आध्यात्मिक ज्ञान का मूल शास्त्र है परन्तु यथार्थ गीता ज्ञान, ज्ञानसागर निराकार परमपिता परमात्मा शिव ने दिया, जो आधा-पौना कल्प बाद भक्ति मार्ग में आत्मा में नीहित स्मृति के आधार पर लिखा गया तो उसमें कितना सत्य हो सकता है, ये तो कोई भी व्यक्ति स्वयं ही समझ सकता है और उसमें स्मृति-विस्मृति के कारण अनेक भूलें होना भी स्वभाविक ही है। ये भी लिखने वाले की महानता ही कही जायेगी कि उसने 3000-3500 वर्ष पूर्व की घटना को अनेक जन्म लेने के बाद स्मरण किया और उस स्मृति को लिपिबद्ध करने का शुभ पुरुषार्थ किया।

गीता के महावाक्यों के अनुसार अभी पुन: शिवबाबा वही गीता ज्ञान दे रहे हैं, जिसका सन्देश सर्वात्माओं को देना हम सभी ब्रह्मा-वत्सों का पावन कर्तव्य है। बाबा के महावाक्य हैं - गीता ज्ञान प्रत्यक्ष होगा तब गीता ज्ञानदाता परमात्मा प्रत्यक्ष होगा। तो यथार्थ गीता ज्ञान कैसे प्रत्यक्ष हो, उस पर ही यहाँ कुछ विचार किया गया है।

सत्गुरु के रूप में भी बाबा ने हमको इस विश्व नाटक के अनेक गुह्य रहस्यों का यथार्थ ज्ञान दिया है और मुक्ति-जीवनमुक्ति का मार्ग दर्शाया है। इस तरह से बाबा ने हमको अनेक बातों का ज्ञान दिया है परन्तु ये बात सदा याद रखनी ही होगी कि ये विश्व-नाटक अनादि-अविनाशी है और इसके कुछ नियम और सिद्धान्त हैं, जो अविनाशी है, वे सदा ही सत्य है और सदा ही सत्य रहेंगे। उन सभी सत्यों का ज्ञान भी बाबा ने हमको मुरली में दिया है। इसलिए किसी सत्य को निर्णय करने से पहले बाबा ने जो बात कही है, उसकी पृष्ठभूमि क्या है, उसका भाव-अर्थ क्या है, वह जानना भी अति आवश्यक है। उसके लिए मुरली को आगे-पीछे भी पढ़कर देखना होगा, तब ही हम उसकी सत्यता को समझ सकेंगे और जब हम इस विश्व-नाटक के यथार्थ सत्यों को समझेंगे तब ही इस ब्राह्मण जीवन का सुर-दुर्लभ मुक्ति-जीवनमुक्ति का सच्चा सुख अनुभव कर सकेंगे और अन्य आत्माओं को करा सकेंगे। ब्राह्मण जीवन की सफलता का आधार बाबा की मुरली ही है। वही सच्चा गीता ज्ञान है।

जो अनादि-अविनाशी (Eternaal) सत्य हैं, वे सदा ही सत्य हैं। उनमें देश-काल-व्यक्ति के कारण कोई अन्तर नहीं हो सकता है। वे सर्व धर्मों के लिए हैं, सभी को सर्वमान्य होंगे और सभी उनको एकमत से स्वीकार करेंगे। इसमें आत्मा, परमात्मा, विश्व-नाटक के अनादि-अविनाशी नियम और सिद्धान्त मुख्य हैं।

जो स्वेच्छिक विषय हैं, अपने जीवन की धारणाओं से सम्बन्धित हैं, उनके विषय में

वैचारिक भिन्नता होना अवश्य सम्भावी है क्योंकि ये विश्व-नाटक विविधतापूर्ण है। ऐसे विषयों में एक-दो के विचारों को सम्मान देकर यथार्थ सत्य का निर्णय करना ही यथार्थ है। ऐसे विषयों में देश-काल-परिस्थितियों के आधार पर किसी व्यक्ति के अपने ही विचारों में भिन्नता हो सकती है, वे परिवर्तन हो सकते हैं, इसलिए उनकी कोई निश्चित (Hard Fast) सीमा-रेखा नहीं हो सकती है। इनमें धारणायें और सेवा के क्षेत्र विशेष हैं। बाबा की मुरली में भी कई विषयों पर देश-काल-परिस्थिति के अनुसार अलग-अलग उत्तर होते हैं।

गीता ज्ञान और गीता ज्ञानदाता की प्रत्यक्षता के विषय में हमने यहाँ अपने विचार लिखे हैं, किसी के विचार इससे भिन्न हो सकते हैं, उनसे हमारा कोई तर्क नहीं है परन्तु अगर वे हमको अपने विचारों से अवगत करायेंगे और वे अधिक विवेकयुक्त और तर्कसंगत होंगे तो हम उनको अवश्य स्वीकार करेंगे।

विषय सूची

प्रथम अध्याय (Ist Chapter)

सत्य आध्यात्मिक ज्ञान का दर्पण
गीता ज्ञान का लक्ष्य और उद्देश्य
गीता ज्ञान और ब्राह्मण जीवन
गीता ज्ञान दाता कौन?
गीता और महाभारत का सम्बन्ध
Q. गीता ज्ञान कब और कहाँ दिया गया अर्थात् क्या गीता ज्ञान द्वापर के अन्त में युद्ध के लिए अधीर आमने-सामने खड़ी हुई दो सेनाओं के मध्य दिया गया? यदि ऐसा है तो उस गीता ज्ञान का फल क्या निकला? अथवा यथार्थ क्या है?
प्रचलित गीता में वर्णित विविध रहस्य
प्रचलित गीता के कुछ मुख्य महावाक्य
प्रचलित गीता में वर्णित परमात्मा के महावाक्य और उनकी सत्यता
गीता और आत्मा-परमात्मा
गीता और तीन लोक
गीता और कल्प-वृक्ष
गीता और सृष्टि-चक्र
गीता ज्ञान और संगमयुग
गीता और ब्रह्मचर्य व्रत
निराकार गीता ज्ञान-दाता परमपिता परमात्मा शिव द्वारा ब्रह्मा तन से दिया गया सत्य गीता-ज्ञान

1. आत्मा का ज्ञान,
2. परमात्मा का ज्ञान
3. विश्व-नाटक अर्थात् सृष्टि-चक्र का ज्ञान
4. पुरुषोत्तम संगमयुग का ज्ञान
5. त्रिलोक का ज्ञान
6. कल्प-वृक्ष का ज्ञान
7. कर्मों की गहन गति का ज्ञान
8. योग का ज्ञान
9. पवित्रता का ज्ञान

द्वितीय अध्याय (II Chapter)

गीता और स्थापना एवं विनाश
गीता और स्थापना
गीता और विनाश
गीता का आदि और अन्त
गीता का आदि मन्मनाभव और गीता का अन्त नष्टोमोहा-स्मृति स्वरूप।

भगवानोवाच - गीता ज्ञान सिद्ध होगा तब गीता ज्ञान-दाता सिद्ध होगा।
गीता ज्ञान की धारणा का स्वरूप क्या है?
गीता और राजयोग एवं विभिन्न योग
गीता और विभिन्न धर्म एवं धर्मशास्त्र
गीता और आदि सनातन देवी-देवता धर्म
गीता और धर्म एवं राज्य की स्थापना
ईश्वरीय ज्ञान की धार्मिकता और राजनैतिकता
सत्य गीता ज्ञान और प्रचलित गीता ज्ञान का तुलनात्मक अध्ययन
गीता और गीता के महापात्र अर्जुन एवं अन्य पात्र
गीता तथा अन्य धर्म-शास्त्रों में वर्णित परमात्मा के अवतरण के उद्देश्यपरमात्मा का अवतरण
गीता और प्रजापिता ब्रह्मा का सम्बन्ध
गीता और भारत
गीता ज्ञान, भारत और विश्व की रिलीजियो-पोलिटीकल एण्ड स्प्रीचुअल हिस्ट्री-जॉग्राफी (Religio-Political History-Georaphy and Spiritual Knowledge of the World)
काल-चक्र और काल-चक्र की आयु
गीता और विश्व की संरचना एवं विश्व-परिवर्तन का विधि-विधान

तृतीय अध्याय (III Chapter)

विविध बिन्दु
गीता और गीता ज्ञान का राज़ तथा गीता ज्ञान-दाता
यदा यदाहि ... सृजाम्यहं
परमात्मा की प्रत्यक्षता
प्रत्यक्षता और प्रत्यक्ष प्रमाण
मन्मनाभव-मध्याजी भव, नष्टोमोहा - स्मृतिलब्धा
श्रीमत अर्थात् ईश्वरीय मत, दैवी मत और आसुरी मत
निश्चयबुद्धि विजयन्ति और संशयबुद्धि विनश्यन्ति
विनाशकाले परमात्मा से प्रीतबुद्धि विजयन्ति और विप्रीतबुद्धि विनश्यन्ति
प्रश्नावली
परस्पर विचारणीय प्रश्न
स्वयं ही स्वयं से प्रश्न
बाहर वालों से प्रश्न
गीता और साक्षीभाव
गीता और निर्दोश दृष्टि
गीता और कर्म-सिद्धान्त
सारांश

गीता ज्ञान और गीता ज्ञान दाता

गीता ज्ञान की आदि है - अपने को आत्मा समझ, देह सहित देह के सर्व सम्बन्ध छोड़ एक मुझ निराकार बाप को याद करना और अन्त नष्टोमोहा-स्मृतिस्वरूप बनना।

''अभी प्रत्यक्षता का प्लेन है - प्रैक्टीकल जीवन। बाकी प्रोग्राम करते हो, यह तो बिजी रहने के लिए बहुत अच्छा है लेकिन प्रत्यक्षता होगी आपके चलन और चेहरे से।''

अ.बापदादा 15.12.03

''यह 84 का चक्र बुद्धि में तुमको याद रहेगा तो बहुत खुशी रहेगी। तुम जानते हो हम नये विश्व अर्थात् सतयुग के मालिक बनने वाले हैं। गीता में भी है - भगवानुवाच - हे बच्चे, देह सहित देह ... सर्व पापों से मुक्त कर दूँगा। ... यह 84 का चक्र अच्छी रीति बुद्धि में बिठाना है। यह है स्वदर्शन चक्र।''

सा.बाबा 12.8.04 रिवा.

''मैं प्रकृति का आधार लेता हूँ। गीता में भी यह अक्षर हैं। और कोई शास्त्र का नाम बाबा नहीं लेते हैं। एक ही गीता है, जिसमें पहले-पहले लिखा है - भगवानुवाच।''

सा.बाबा 17.8.04 रिवा.

गायन है - असतोमा सद्गमय। तमसोमा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्मा अमृतंगमय।

परन्तु अन्धकार से प्रकाश में ले जाने वाला कौन है और कैसे ले जायेगा, किसको ले जायेगा, इस सत्य का ज्ञान भी बुद्धि में होगा तब ही हम अन्धकार से प्रकार में जा सकेंगे, मृत्यु-दुख और मृत्यु-भय से मुक्त हो अमरत्व का अनुभव कर सकेंगे, जो आत्मा का जन्मसिद्ध अधिकार है।

ये विश्व एक अनादि-अविनाशी नाटक है, जो हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है। सभी आत्मायें इस अनादि-अविनाशी वृहद विश्व-नाटक में अनादि-अविनाशी पार्टधारी हैं। इस विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञाता निराकार ज्ञानसागर परमपिता परमात्मा ही है, वही आकर इसका सत्य ज्ञान देते हैं। मानव जीवन में इस विश्व-नाटक के ज्ञान का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। जब आत्माओं को इसका ज्ञान होता है तो आत्माओं और जगत की चढ़ती कला होती है और जब ये ज्ञान विस्मृत हो जाता है तो आत्माओं और विश्व की उतरती कला होती है। विचारणीय बात है कि इस ज्ञान से जो लक्ष्मी-नारायण बनें और जब उनमें ये ज्ञान विस्मृत हो गया अर्थात् लोप हो गया तो वे ही लक्ष्मी-नारायण उतरती कला में आ गये और स्थिति उतरते-उतरते अभी

कलियुग के अन्त में पहुँच गई। वही लुप्त ज्ञान अभी फिर से ज्ञानसागर परमात्मा शिव दे रहे हैं, जिसको गीता ज्ञान के नाम से जाना जाता है। जितना इस गीता ज्ञान की यथार्थ समझ और उसका जीवन के लिए क्या महत्व है, उसका ज्ञान होगा, उतनी ही उसकी धारणा होगी और उतना ही ये जीवन सुखमय होगा, आत्मा की चढ़ती कला होगी।

यथार्थ गीता ज्ञान निराकार ज्ञानसागर परमपिता परमात्मा, जो सत्-चित्-आनन्द स्वरूप हैं, ने सत्-धर्म की स्थापना के लिए कल्पान्त के पुरुषोत्तम संगमयुग में दिया, जिसको सुनकर, धारण करके आत्मायें सतोप्रधान बनीं और सतयुग की स्थापना हुई। जिन आत्माओं ने ये गीता ज्ञान सुना, उन आत्माओं में से किसी एक ने अपनी आत्मा में संचित स्मृति के आधार पर आधा-पौना कल्प के बाद उस गीता ज्ञान को शास्त्र के रूप में लिखा, जिसमें समयानुसार अनेक प्रकार का परिवर्तन होता आया है। गीता, विशाल महाभारत शास्त्र का एक भाग है। गीता-महाभारत को पढ़ने से यह अनुभव होता है कि जिस समय गीता ज्ञान दिया गया उस समय और भी अनेक प्रकार के ज्ञान दुनिया में प्रचलित थे, जिनसे मनुष्य अज्ञानता और अधर्म की ओर बढ़ते जा रहे थे, उससे बचाने और धर्म की स्थापना के लिए परमात्मा ने गीता ज्ञान दिया। तो जो गीता ज्ञान प्रचलित है और जो अभी परमात्मा प्रत्यक्ष में दे रहे हैं, उन दोनों में क्या सत्य है, वह कसौटी भी हमारी बुद्धि में होगी तब ही सत्य ज्ञान को परख सकेंगे और अपनी अभीष्ठ मंजिल के लिए सत्य पथ का चयन कर सकेंगे। इस विषय में कुछ तथ्य विचार करने के लिए यहाँ लिख रहे हैं।

यहाँ ये भी विचारणीय है कि गीता, भारत के आदि सनातन देवी-देवता धर्म, जिसको आज हिन्दू कहते हैं, उसका शास्त्र है। भारत पर अनेक विदेशी सत्ताओं ने शासन किया है और अपने धर्म और सभ्यता के विस्तार के लिए भारतीय सभ्यता को गिराने का प्रयत्न किया है। भारतीय सभ्यता पर किन्हीं शासकों ने तलवार के जोर पर शासन किया और अपने धर्म और सभ्यता को यहाँ फैलाया। किन्होंने बुद्धिबल से शासन किया, यहाँ के साहित्य में अनेक प्रकार के परिवर्तन किये या धन के प्रलोभन में कराकर यहाँ की सभ्यता को डिग्रेड करके अपना शासन किया, अपने धर्म का प्रचार किया। ऐसा ही गीता और महाभारत के विषय में भी हुआ है, इसलिए वर्तमान प्रचलित गीता और महाभारत को पढ़ने से गीता के मूल लेखक और उसकी भावना को समझना कठिन हो जाता है।

उदाहरण के लिए हम देखें भारत के राष्ट्रीय कवि मैथिलीशरण गुप्त, जो स्वतन्त्रता सेनानी भी थे, उन्होंने जयद्रथ बध नाम की एक पुस्तक लिखी और उसमें यह पद लिखा है -

'अधिकार खोकर बैठ रहना महा दुष्कर्म है,
न्यायार्थ अपने बन्धु को भी दण्ड देना धर्म है।
इस ध्येय पर ही पाण्डवों का कौरवों से रण हुआ,
जो भव्य भारतवर्ष के कल्पान्त का कारण हुआ।'

इस किताब को पढ़कर भारतवासियों में स्वतन्त्रता की भावना बलवती न हो, इसके लिए अंग्रेज शासकों ने उसके प्रकाशन पर प्रतिबन्ध लगा दिया था क्योंकि उसको पढ़कर भारत के लोगों में आत्म-सम्मान और स्वतन्त्रता की भावना जाग्रत होती थी और जितनी ये भावना बलवती होगी, उतना अंग्रेजों का शासन करना कठिन हो जायेगा।

प्रथम अध्याय (Ist Chapter)

सत्य आध्यात्मिक ज्ञान का दर्पण

सत्य आध्यात्मिक ज्ञान क्या है, जो गीता का भगवान आकर देते हैं, उसको देखने का दर्पण क्या है अर्थात् उसकी सत्यता का मापदण्ड क्या है, वह भी परमात्मा स्वयं ही आकर बताते हैं, जिसका कुछ वर्णन यहाँ किया गया है।

''सत्य को सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं है। सत्य ऐसा सूर्य है, जो छिप नहीं सकता। ... सच्चा आदमी कभी अपने को यह नहीं कहेगा कि मैं सच्चा हूँ, दूसरा कहे कि आप सच्चे हो।''

अ.बापदादा 15.4.92

सत्य ज्ञान, उसकी कसौटी और उसके अनुभव

वर्तमान जगत में अनेक सतसंग हैं, अनेक आत्मायें अपने को परमात्मा का अवतार कहते हैं और अनेक प्रकार का ज्ञान देते हैं परन्तु सत्य ज्ञान की परख क्या है, वह परमात्मा ही आकर बताते हैं, जिसके आधार पर हम सत्य ज्ञान और सत्य ज्ञान-दाता परमात्मा को पहचानने में समर्थ होते हैं। सत्यता तो ये है कि परमात्मा स्वयं ही हमको हमारे अपने आत्मिक स्वरूप का अनुभव और अपने स्वरूप का अनुभव कराकर अपना बनाते हैं और पवित्रता, सुख-शान्ति का वर्सा देते हैं। परमात्मा ही हमको सत्य ज्ञान को परखने का दर्पण या कसौटी देते हैं, जिसमें ज्ञान की सत्यता को परख या देख सकते हैं।

सत्य ज्ञान के अनुभव की अथॉर्टी कितनी महान है, इसका यथार्थ आभास भी परमात्मा ही कराते हैं, जिससे आत्माओं में आत्मिक बल भर जाता है और अपनी महानता का आभास होता है।

विचार करो - परमात्मा पिता ने तुमको क्या नहीं दिया है! ये ईश्वरीय ज्ञान परम प्राप्तियों से परिपूर्ण है, इसको यथार्थ रीति समझकर अपने सत्य आत्मिक स्वरूप में स्थित हो जाओ और जीवन के परम आनन्द का अनुभव करो क्योंकि आत्मिक स्वरूप परमानन्दमय है।

सत्य ज्ञान की परख है - सत्य ज्ञान को पाने वाले की भटक या खोज मिट जायेगी और उसको प्राप्ति का सुख अनुभव होगा, उसके लिए अभीष्ट पुरुषार्थ चलेगा। जब तक सत्य की

खोज है, सत्य को प्राप्ति की इच्छा है तब तक समझो सत्य ज्ञान की प्राप्ति नहीं हुई है। जिसको सत्य ज्ञान की प्राप्ति हो जायेगी, वह दूसरों को देने बिगर रह नहीं सकेगा। सत्य ज्ञान की धारणा वाले में अहंकार और हीनता दोनों ही नहीं हो सकती हैं। सत्य ज्ञान का भी अहंकार नहीं होगा। इसीलिए कहा है - विद्या ददाति विनयम्।

प्रचलित गीता में क्या सत्य है और यथार्थ गीता ज्ञान क्या है, उसको समझने के लिए हमारी बुद्धि में सत्य ज्ञान की परख क्या है, वह होना अति आवश्यक है। इसके लिए निम्नलिखित प्रश्न पर विचार करना अति आवश्यक है।

Q. सत्य आध्यात्मिक ज्ञान की परख क्या है अर्थात् उसकी कसौटी क्या है। हमको जो ज्ञान मिला है, वही सत्य है, वह कैसे समझ सकते या किसको कैसे सिद्ध कर सकते हैं?

1. आध्यात्मिक ज्ञान तर्क का विषय नहीं है और अन्धश्रृद्धा से स्वीकार करने का विषय भी नहीं है, यह स्वचिन्तन और आत्मानुभूति का विषय है। यथार्थ ज्ञान का दाता ज्ञानसागर परमात्मा है। जो ज्ञान हमारे पास है या किसी मनुष्य के द्वारा दिया गया है और जो ज्ञान, ज्ञान सागर परमात्मा देता है, उसके विषय में निष्पक्ष भाव और स्व-कल्याण की इच्छा से चिन्तन करने वाला ही यथार्थ निर्णय कर सकता है अर्थात् वही यथार्थ ज्ञान का फल आत्मानुभूति और परमात्मानुभूति कर सकता है और आत्मानुभूति एवं परमात्मानुभूति वाला ही सम्पूर्णता और सम्पन्नता, आत्म-सन्तुष्टि के लिए यथार्थ पुरुषार्थ कर सकता है। जिसको सम्पूर्णता, सम्पन्नता, आत्म-सन्तुष्टि की अनुभूति हो जाती है, उसकी और कुछ जानने की जिज्ञासा समाप्त हो जाती है और उसका सत्य ज्ञान से प्राप्त सुख का पुरुषार्थ चलने लगता है। वह स्वयं को अपने अभीष्ठ लक्ष्य की ओर बढ़ता हुआ अनुभव करता है।

सत्य ज्ञान वाला ही आत्मानुभूति और परमात्मानुभूति कर सकता है और वही ज्ञान सागर परमात्मा द्वारा इस विश्व-नाटक के सभी राज़ों (रहस्यों) अर्थात् विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान, कर्म-सिद्धान्त, योग का ज्ञान अर्थात् आत्मा के ऊपर विकर्मों और विकारों की खाद, लेप-क्षेप, बोझा आदि खत्म करने का ज्ञान प्राप्त करके अपने अभीष्ठ लक्ष्य के लिए पुरुषार्थ करके सम्पूर्णता और सम्पन्नता अर्थात् मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करने लगता है, जिससे उसकी सत्य ज्ञान प्राप्ति की जिज्ञासा समाप्त हो जाती है और यथार्थ ज्ञान को धारण कर मुक्ति-जीवनमुक्ति के अनुभव को स्थाई बनाने का पुरुषार्थ आरम्भ हो जाता है। वह इच्छामात्रम् अविद्या की का अनुभव करता है। उस स्थिति को प्राप्त करके जीवन में सच्ची सुख-शान्ति का अनुभव करने का पुरुषार्थ करने लगता है। मुक्ति-जीवनमुक्ति का यह अनुभव होना ही सत्य ज्ञान की परख है। गीता ज्ञान ही एक सत्य परमात्मा द्वारा दिया हुआ सत्य ज्ञान है।

2. सत्य ज्ञान से आत्मानुभूति होती है और आत्मानुभूति होने के कारण देहाभिमान अर्थात् अहंकार और हीनता समाप्त हो जाता है और विश्व-प्रेम जाग्रत होने लगता है।

3. यथार्थ ज्ञान की प्राप्ति और धारणा करने वाला व्यक्ति मान-अपमान, निन्दा-स्तुति, जय-पराजय में समान स्थिति अनुभव करता है अर्थात् आत्मा अपने को विपरीत परिस्थिति में भी एकरस रखने में समर्थ होती है, जिससे वह विकर्मों से बच जाती है और उसकी स्वयं भी अनुभूति करती है और दूसरे भी उससे वह अनुभूति करते हैं।

4. सत्य ज्ञान अर्थात् जिससे देह भूल जाये, सहज अपने सत्य स्वरूप में स्थित हो जाये, परमशान्ति की अनुभूति हो, ज्ञान प्राप्ति के लिए इच्छामात्रम अविद्या की स्थिति हो, आत्म-कल्याण के लिए ज्ञान की जिज्ञासा समाप्त होकर आत्म-कल्याण का पुरुषार्थ आरम्भ हो जाये।

यथार्थ ज्ञान अर्थात् आत्मानुभूति प्लस परमात्मानुभूति – (जिज्ञासा + अहंकार + अज्ञानता) अर्थात् आत्म सन्तुष्टि अर्थात् सम्पन्नता और भरपूरता की अनुभूति अर्थात् विकर्मों का खाता कम होना आरम्भ हो जाता, संस्कारों की अपवित्रता कम होकर पवित्रता की ओर अग्रसर होने लगता। आत्मा अपने को भरपूर अनुभव करती है और भरपूरता से सन्तुष्टता आती है और सन्तुष्टता प्रसन्नता प्रदान करती है। प्रसन्नता आत्मा का अभीष्ट लक्ष्य है।

यथार्थ ज्ञान दृष्टि को आत्मिक बना देता है, भावना कल्याण की बना देता है, राग-द्वेष, भय-चिन्ता खत्म कर देता है। सत्य ज्ञान वाले को सत्य ज्ञान को सिद्ध करने में अहंकार नहीं आता है और जब निर्मान होकर सत्य ज्ञान को सुनाता है, तब ही सामने वाला ज्ञान की सत्यता को अनुभव करता है, स्वीकार करता। इसीलिए कहा गया है - विद्या ददाति विनयम्, फलों से भरा वृक्ष झुक जाता है।

सत्य ज्ञान एक अंकुश है, जो आत्मा को बुरे कर्मों से रोकता है और एक दिव्य प्रकाश के रूप में श्रेष्ठ कर्मों के लिए मार्ग-दर्शन करता है अर्थात् श्रेष्ठ कर्मों के लिए प्रेरित करता है और श्रेष्ठ कर्म आत्मा को सुख-शान्ति का अनुभव कराते हैं।

सत्य ज्ञान की कसौटी - ज्ञान सत्य है और निश्चय करने के लिए माध्यम सही है तो उससे मन में कोई विरोधाभास (Contradiction) नहीं होगा, इसलिए आत्मा उसे सहज ग्रहण करेगी, उससे सदा सन्तुष्टि की अनुभूति होगी।

सत्य ज्ञान को अर्थात् सत्य मार्ग को प्राप्त करने वाला अपने को अन्धकार से प्रकाश की ओर जाता हुआ अनुभव करेगा, वह अपने जीवन से राग-द्वेष, दुख-अशान्ति, भय-चिन्ता, ईर्ष्या-घृणा, इच्छा-आकांक्षा को मिटता हुआ और जीवन में सुख-शान्ति सम्पन्नता को बढ़ता

हुआ अनुभव करेगा।

सत्य ज्ञान की धारणा वाला हर कर्म में सफलता का और हर परिस्थिति में विजय का अनुभव करेगा, जिससे वह सदा खुशी में रहेगा। सत्य ज्ञान की धारणा वाला सत्य ज्ञान को सिद्ध करने में भी निर्भय होगा परन्तु उसमें जिद्द या अहंकार नहीं होगा, सबके कल्याण की भावना होगी। सत्य ज्ञान की खुमारी अर्थात् नशा उसके चेहरे और चलन से दिखाई देगा।

''गीता में भी ये बातें नहीं हैं। यह है बिल्कुल न्यारा ज्ञान। ड्रामा में यह सब नूँध है। एक सेकेण्ड का पार्ट न मिले दूसरे सेकण्ड से। ... कम बुद्धि वाले तो इतनी धारणा कर न सकें।''

सा.बाबा 20.9.04 रिवा.

''तुम हो ईश्वरीय सम्प्रदाय। प्रजापिता ब्रह्मा के मुख-कमल से तुम पैदा हुए हो ना। ... बाप को कहा जाता है ज्ञान का सागर। ज्ञान सागर बाप तुमको अविनाशी ज्ञान रतनों की थालियां भर-भर कर देते हैं। जो ज्ञान को धारण करते, वे ऊंच पद पाते हैं।''

सा.बाबा 3.11.04 रिवा.

''सबसे बड़े से बड़ी अथॉर्टी आपके साथ है।... आप सभी के पास कौनसी अथॉर्टी है? सबसे बड़ी परमात्म अनुभूति की अथॉर्टी है। अनुभव की अथॉर्टी से श्रेष्ठ और सहज किसी को भी परिवर्तन कर सकते हो।'' अ.बापदादा 13.3.86

''अगर नॉलेज से लाइट-माइट नहीं तो वह नॉलेज ही किस काम की! ... जब ज्ञान बुद्धि में समा जाता है तो बुद्धि के डायरेक्शन अनुसार कर्मेन्द्रियाँ भी वैसा ही कर्म करती हैं। ... भोजन खाना और चीज है, हज़म करना और चीज है। खाने से शक्ति नहीं आयेगी, हजम करने से शक्ति आती है।'' अ.बापदादा 24.1.70

''जितनी जिसमें डिवाइन क्वालिटी होगी, उतना ही वह क्वालिटी वालों को लायेगी। ... जितना ज्ञान की वेल्यू, सर्विस की वेल्यू का मालूम होगा, उतना आप वैल्यूएबुल रत्न बनेंगे। जो ज्ञान रतनों की वेल्यू कम करते तो खुद भी वैल्युएबुल नहीं बन सकते।''

अ. बापदादा 13.11.69

सत्य ज्ञान का दाता एक सत्य परमात्मा ही है और वह आत्माओं को सत्य ज्ञान देकर सत्य बनाता है। सत्य अर्थात् सत्य (Truth) और सत्य अर्थात् अविनाशी (Eternal)। सत्य ज्ञान को पाकर ही आत्मा मृत्यु-भय से मुक्त निर्भय होकर सत्य कर्मों में प्रवृत्त होती है।

''परमात्म-ज्ञान का प्रूफ है आपकी प्रैक्टिकल लाइफ है। एक तरफ धर्म-युद्ध की स्टेज, दूसरी तरफ प्रैक्टिकल धारणामूर्त की स्टेज। ... प्रैक्टिकल में ज्ञान अर्थात् धारणामूर्त, ज्ञानमूर्त, गुणमूर्त। मूर्त से ही वह ज्ञान और गुण दिखाई दें। आजकल डिसकस करने से अपनी मूर्त को

सिद्ध नहीं कर सकते। लेकिन मूर्त से उनको एक सेकण्ड में शान्त करा सकती हो।''

अ.बापदादा 11.4.73

''यह भी भारतवासी ही कहते हैं क्योंकि अभी मैं बापों का बाप, पतियों का पति बनता हूँ। ... बाप के पास ऐसा ज्ञान है, जिससे सारे विश्व की सद्गति होती है। तत्वों सहित सबकी सद्गति हो जाती है।''

सा.बाबा 21.5.05 रिवा.

''सर्विस की रिजल्ट में स्नेह और प्योरिटी तो स्पष्ट दिखाई देता है अथवा आने वाले अनुभव करते हैं लेकिन जो नवीनता वा नॉलेज की विशेषता है, वह है नॉलेजफुल स्टेज वा मास्टर सर्वशक्तिवान की स्टेज वा सर्वशक्तिवान बाप के प्रैक्टिकल कर्तव्य की विशेषता, जो विशेष रूप से अनुभव करने की है, उसकी अभी कमी है।''

अ.बापदादा 20.11.72

''आपके जीवन से, स्नेह और सहयोग से प्रभावित हुए हैं लेकिन श्रेष्ठ नॉलेज और नॉलेजफुल बाप के ऊपर इतना प्रभावित हुए हैं? जितना निमित्त बने हुए ब्राह्मण स्वयं शक्ति रूप का स्वयं में अनुभव करते हो। ... वह स्नेह और सहयोग की तुलना में कम है।''

अ.बापदादा 20.11.72

''कर्म की भी नॉलेज होती है और अपनी रचयिता और रचना की भी नॉलेज होती है। ... नॉलेज सिर्फ रचयिता और रचना की नहीं लेकिन नॉलेजफुल अर्थात् हर संकल्प और हर शब्द हर कर्म में ज्ञान स्वरुप होगा। उसको ही नॉलेजफुल कहते हैं''

अ.बापदादा 27.4.72

''पाण्डवों का गायन क्या है? गुप्त रहने के बाद प्रत्यक्ष हुए ना। ... जब रिवाजी आत्मायें भी निर्भय होकर अपने सिद्धान्त को सिद्ध करने का कितना पुरुषार्थ करते हैं तो आप लोगों को अपने सिद्धान्तों को सिद्ध करने का कितना जोश होना चाहिए।''

अ.बापदादा 9.10.71

''साधारण आत्मायें भी अल्पकाल की सिद्धि प्राप्त कर लेती हैं तो कितनी अथॉरिटी में रहती हैं। ... तो ऐसी सर्व-सिद्धियों को विधि द्वारा प्राप्त करने वाली आत्मायें कितने नशे में रहनी चाहिए? ... जो स्वयं ही लेने वाला है, वह देने वाला दाता नहीं बन सकता। जैसे भिखारी, भिखारी को सम्पन्न नहीं बना सकता।''

अ.बापदादा 26.6.74

''सत्यता की निशानी है सभ्यता। अगर आप सच्चे हो, सत्यता की शक्ति आप में है तो सभ्यता को कभी नहीं छोड़ेंगे। सत्यता को सिद्ध करो लेकिन सभ्यतापूर्वक। ... असभ्यता की निशानी है जिद् और सभ्यता की निशानी है निर्मान।''

अ.बापदादा 15.4.92

गीता ज्ञान का लक्ष्य और उद्देश्य

गीता में है -

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत, अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्। (4-7)

इन महावाक्यों पर विचार करें तो गीता लक्ष्य और उद्देश्य हमारी बुद्धि में स्पष्ट हो जाता है कि गीता ज्ञान देने का लक्ष्य है, अधर्म का नाश करना और एक सत् धर्म की स्थापना करना। दुख-अशान्ति की दुनिया का विनाश करना और सुख-शान्ति सम्पन्न दुनिया की स्थापना करना। मानव जीवन से आसुरी सम्पदा अर्थात् आसुरी संस्कारों का विनाश करके दैवी सम्पदा अर्थात् दैवी गुण-संस्कारों की पुनर्स्थापना करना। पतित दुनिया को पावन दुनिया बनाना। इसके लिए ही ज्ञान सागर परमात्मा ने सारा गीता का ज्ञान दिया और राजयोग की शिक्षा दी।

जो आत्मा इस लक्ष्य को समझ लेता है और अपने बुद्धियोग को परमात्मा के साथ लगाता है, वह इस लक्ष्य को अवश्य पाता है, अनुभव करता है।

गीता ज्ञान और ब्राह्मण जीवन

ज्ञान सागर परमपिता परमात्मा ने गीता ज्ञान देकर हमको ब्राह्मण बनाया अर्थात् गीता ज्ञान से हम ब्राह्मणों का जन्म हुआ है, गीता हमारी माता है और गीता ज्ञानदाता परमात्मा हमारा पिता है। ऐसे ब्राह्मण जन्म को पाकर हमारा कर्तव्य क्या है ?

हमारा ये पावन कर्तव्य है कि हम परमपिता परमात्मा के महावाक्यों पर पूर्ण श्रृद्धा-भावना रखकर गीता ज्ञान को धारण कर, उसका स्वरूप बनकर अपने जीवन को सुख-शान्तिमय बनायें और गीता ज्ञान और गीता ज्ञानदाता परमात्मा को सबके समक्ष प्रत्यक्ष करें, सबको गीता का सन्देश दें, जिससे वे भी अपने जीवन को सुख-शान्तिमय बना सकें। गीता ज्ञान के इस सत्य को प्रत्यक्ष करने के लिए न्यायालय आदि में जो जज आदि गीता को मानते हैं, गीता की कसम उठवाते हैं, जो गीता पाठी हैं, उनको गीता ज्ञान की सत्यता को प्रत्यक्ष करें क्योंकि परमात्मा के महावाक्य हैं - जब ज्ञान प्रत्यक्ष होगा तब ही ज्ञानदाता परमात्मा प्रत्यक्ष होगा। बाबा ने हमको कहा हुआ है - बच्चों का काम है बाप को प्रत्यक्ष करना।

ब्राह्मणों का जन्म इस ज्ञान यज्ञ में हुआ है, इसलिए ब्राह्मणों का यह पावन कर्तव्य है, इस ज्ञान यज्ञ की रक्षा करना अर्थात् इस सत्य गीता ज्ञान को धारण करना, उसका प्रचार व प्रसार करना। इसीलिए बाबा कहते हैं - यज्ञ की सम्भाल करने के लिए ब्राह्मण जरूर चाहिए।

''तुमको पतित से पावन बनाए सुख-शान्ति का वर्सा देता हूँ, बाकी सबको शान्ति का वर्सा मिल जाता है। ... गीता ब्राह्मणों को ही सुनानी है। जब शूद्र से ब्रह्मा मुख वंशावली ब्राह्मण बनें तब उनको गीता सुनाई। ब्राह्मणों का ज्ञान का तीसरा नेत्र खोला। ... शूद्र से ब्राह्मण बनाना शिवबाबा का ही काम है।'' सा.बाबा 24.5.07 रिवा.

गीता ज्ञान दाता कौन?

गीता ज्ञान दाता कौन हो सकता है, इसके विषय में निराकार ज्ञान-सागर परमपिता परमात्मा ने बहुत विस्तार से समझाया है और हम सबको काम दिया है कि ज्ञान-सागर निराकार परमपिता परमात्मा शिव की और श्रीकृष्ण की महिमा, दोनों के गुण-कर्तव्यों पर विचार करके अलग-अलग लिखो फिर विचार करो कि गीता ज्ञान दाता कौन हो सकता है और गीता पाठियों, गीता के विद्वानों से पूछो अर्थात् उनको दोनों की महिमा का अलग-अलग वर्णन करके पूछो कि आप जज करो कि गीता ज्ञान-दाता कौन हो सकता है अर्थात् गीता ज्ञान दाता मनुष्य देहधारी दैवी गुणों से सम्पन्न श्रीकृष्ण या ज्ञान सागर निराकार परमात्मा शिव।

गीता ज्ञान के लक्ष्य और उद्देश्य को समझकर और गीता में वर्णित आत्मा-परमात्मा के स्वरूप के विषय में, सृष्टि चक्र के विषय में, कल्प-वृक्ष के विषय में तीनों लोकों के विषय में, दैवी गुणों की धारणा के विषय में विचार करने के बाद ही हम समझ सकते हैं कि गीता ज्ञान दाता कौन हो सकता है।

विभिन्न दर्शनों एवं धर्मों के विषय में आत्मा, परमात्मा के विषय में जो वर्णन किया गया है, उन सभी रहस्यों पर विचार करके, उनके जीवन पर प्रभाव को समझकर ही हम निर्णय कर सकते हैं कि गीता ज्ञानदाता कौन हो सकता है?

गीता ज्ञान की वास्तविकता पर विचार करते हैं तो हमारी बुद्धि स्वत: ही इस निष्कर्ष पर पहुँचती है कि गीता ज्ञान किसी देहधारी पुरुष ने नहीं दिया है, वह कोई अलौकिक, परम पुरुष ही हो सकता है, जो इन रहस्यों का उद्घाटन कर सकता है। जो इस विश्व-नाटक के आदि-अन्त से भी परे अनादि पुरुष हो और वह तो एक निराकार शिव परमात्मा ही हैं, जो सर्व देवी-देवताओं, धर्म-पिताओं के भी अनादि पिता हैं। भले ही हमको परमात्मा के विषय में यथार्थ ज्ञान न होने के कारण इस सत्य को नहीं समझ सकते कि वह परमात्मा कौन है, उसका स्वरूप क्या है परन्तु इन सब रहस्यों पर विचार करने से बुद्धि इस निष्कर्ष पर अवश्य पहुँच जाती है कि गीता ज्ञान श्रीकृष्ण नहीं दिया है क्योंकि उनका तो अपना साकार शरीर भी था, साकार माता-पिता भी थे, साकार देहधारियों की तरह उन्होंने माता के गर्भ से जन्म भी लिया

और शरीर भी छोड़ा भले उनका जन्म कुछ चमत्कारी अवश्य था। इन सब रहस्यों का उद्घाटन ज्ञान सागर निराकार परमपिता परमात्मा शिव ही ने ब्रह्मा तन में प्रवेश करके किया है, जिससे हमको गीता ज्ञान दाता कौन है, उस सत्य का अनुभव हुआ है।

भक्त लोग मनुष्य शरीरधारी श्रीकृष्ण और ज्ञान सागर निराकार परमपिता परमात्मा शिव की जो महिमा गाते हैं, उसमें जो शब्द प्रयोग करते हैं, वे स्वत: स्पष्ट करते हैं कि गीता ज्ञान दाता कौन हो सकता है। भक्त लोग दोनों की महिमा अलग-अलग शब्दों में गाते हैं।

''परमात्मा ज्ञान का सागर, पतित-पावन है, गीता का भगवान है। वे ही ज्ञान और योगबल से ये कार्य कराते हैं।... भारत का प्राचीन योग मशहूर है। वह तुम अभी सीखते हो।... गीता को माई-बाप कहा जाता है।... इसको ही गीता, अमर कथा, सत्य नारायण की कथा, तीजरी की कथा कहते हैं।'' सा.बाबा 11.1.05 रिवा.

''इस पाठशाला का टीचर शिवबाबा है, श्रीकृष्ण नहीं। शिवबाबा ही दैवी धर्म की स्थापना करते हैं। ... हम परमात्मा से तकदीर बनाने आये हैं। ... गीता ज्ञान से ही तकदीर बनती है। ... संगम पर जिन्होंने अपना तन-मन-धन सब सफल किया वा कर रहे हैं, वे हैं तकदीरवान।''

सा.बाबा 21.1.05 रिवा.

''पहले-पहले तो यह निश्चय चाहिए कि गीता का भगवान निराकार परम पिता परमात्मा शिव है। श्रीकृष्ण को भगवान नहीं कहा जाता है।... भगवान ने यह गीता ज्ञान सुनाकर भारत को स्वर्ग बनाया था।'' सा.बाबा 12.4.07 रिवा.

''परमात्मा है हेविनली गॉड फादर। वह हो गया हेविन रचने वाला, श्रीकृष्ण है हेविन का प्रिन्स। हेविरली प्रिन्स सिर्फ एक तो नहीं होगा। आठ डॉयनेष्टी गिनी जाती हैं। ... हेविनली गॉड फाटर की महिमा अलग है और हेविनली प्रिन्स की महिमा अलग है।''

सा.बाबा 27.7.07 रिवा.

गीता और महाभारत का सम्बन्ध

महाभारत एक विशाल ग्रन्थ है, भारत में उसका बहुत मान है, उसका ही एक अध्याय गीता है अर्थात् गीता महाभारत का एक अंश है अथवा ऐसे कहें कि गीता ज्ञान महाभारत का आधार है अर्थात् गीता ज्ञान से महाभारत हुआ अर्थात पतित सृष्टि का विनाश हुआ और भारत महान बना। उपर्युक्त सत्य पर विचार करें तो समझ में आयेगा कि गीता के विषय में चर्चा करने से पहले महाभारत के विषय में जानना भी अति आवश्यक है, उसको जानने के लिए कुछ विषयों पर विचार करना अति आवश्यक है। महाभारत में पाण्डव, कौरव

और यादव सेना का गायन है तो महाभारत में वर्णित पाण्डव-कौरव और यादव सेनायें क्या है, कौन-कौन उस सेना में हैं। इस राज़ को यथार्थ रीति कोई नहीं जानता है, जो अभी परमात्मा ने बताया है और आत्माओं को कौरव और यादव सम्प्रदाय से निकालकर पाण्डव सम्प्रदाय में आने अर्थात् परमात्मा से प्रीतबुद्धि होकर विजयी बनने का ज्ञान दिया है क्योंकि अन्त समय विजय पाण्डवों की ही होने वाली है। विप्रीतबुद्धि यादव और कौरव तो विनाश को ही प्राप्त होंगे। जो कौरव और यादव सेना से निकलकर पाण्डव सेना में आयेंगे अर्थात् यथार्थ सत्य को समझकर परमात्मा से प्रीतबुद्धि बनेंगे, वे ही विजय को पायेंगे, स्वर्ग के राजभाग को पायेंगे। जैसे महाभारत में यादव, कौरव-पाण्डव सेना के विषय में विचार करना आवश्यक है, वैसे ही गीता ज्ञान देने का स्थान कौन और कहाँ है, उसका ज्ञान भी बाबा ने दिया है, वह भी समझना अति आवश्यक है।

जैसे गीता ज्ञान के स्थान के विषय में विचार करना अति आवश्यक है, वैसे ही गीता ज्ञान का समय क्या है, वह भी विचारणीय है। गीता में है कि गीता ज्ञान अधर्म का नाश और सत धर्म की स्थापना के लिए दिया गया, वह समय क्या हो सकता है।ऐसे ही महाभारत में जो अस्त्रों-शस्त्रों का वर्णन है, वे अस्त्र-शस्त्र क्या थे और वर्तमान में बने हुए अस्द्ध-शस्त्रों से उनकी क्या समानता है, वह भी विचारणीय है।।

Q. क्या महाभारत के पात्र ऐतिहासिक पुरुष थे ? यदि थे तो कब थे, उनको कितना समय हुआ ? उनके जन्म आदि के विषय में जो वर्णन है, वह कहाँ तक विश्वास करने योग्य है या उसमें कोई अन्य रहस्य नीहित है ?

''गायन है पाण्डव पहाड़ों पर गल गये। पहाड़ों पर नहीं लेकिन ऊंची स्थिति अर्थात् निचाई से बिल्कुल ऊपर अव्यक्त स्थिति है, उसमें गल गये अर्थात् अव्यक्त स्थिति में सम्पूर्णता को प्राप्त हुए। ... सम्पूर्ण समर्पण अर्थात् तन-मन-धन, समय और सम्बन्ध सब अर्पण।''

अ.बापदादा 3.10.69

''यह है युधिष्ठिर, युद्ध के मैदान में बच्चों को खड़ा करने वाला। ... पहली मुख्य हिंसा है काम कटारी की। इसलिए काम महाशत्रु कहा है, इन पर ही विजय पानी है।''

सा.बाबा 19.2.05 रिवा.

''गीता में कौरव-पाण्डवों की युद्ध दिखाई है ... पाण्डव उनको कहा जाता है, जो प्रीतबुद्धि हैं और कौरव उनको कहा जाता है जो विप्रीतबुद्धि हैं। अक्षर तो बहुत अच्छे-अच्छे समझने लायक हैं। ... इसमें स्थूल हथियार आदि नहीं है। बाप ज्ञान-योग के अस्त्र-शस्त्र देते हैं।''

सा.बाबा 30.12.04 रिवा.

''अभी तुम बच्चों को स्मृति आई है कि बरोबर हम देवी-देवता थे, जिनकी निशानियां हैं। ... जब हमारा राज्य था तो और कोई नहीं था। अभी फिर और सभी धर्म हैं, हमारा देवता धर्म है नहीं। गीता में अक्षर बड़े अच्छे-अच्छे हैं परन्तु कोई समझ नहीं सकते। ... गीता में युद्ध बताई है परन्तु कौनसी युद्ध बताई है, यह नहीं जानते।''

सा.बाबा 30.12.04 रिवा.

''वर्ल्ड की हिस्ट्री जॉग्राफी तुम बच्चे ही जानते हो, और कोई जान न सके। ... ऐसे भी बहुत लोग कहते हैं कि महाभारत युद्ध को 5 हजार वर्ष हुए। यह फिर से वही लड़ाई है, तो जरूर गीता का भगवान भी होगा।''

सा.बाबा 25.5.07 रिवा.

''देवी-देवता धर्म का धर्म-शास्त्र है गीता। ब्राह्मण धर्म का कोई शास्त्र नहीं है। अब महाभारत लड़ाई का भी वृतान्त गीता में है।... जरूर विनाश हो तब तो सतयुगी राजधानी स्थापन हो। इसको रुद्र ज्ञान यज्ञ कहा जाता है। ज्ञान भी शिवबाबा ही देते हैं।''

सा.बाबा 7.4.07 रिवा.

''यह गीता का एपीसोड रिपीट हो रहा है। ... यह वही महाभारत लड़ाई है, जिसके लिए शास्त्रों में गायन है। महाभारत लड़ाई और नेचुरल केलेमिटीज़ द्वारा पुरानी दुनिया का विनाश होना है। तो जरूर गीता का भगवान आया होगा।''

सा.बाबा 28.12.06 रिवा.

Q. गीता ज्ञान कब और कहाँ दिया गया अर्थात् क्या गीता ज्ञान द्वापर के अन्त में युद्ध के लिए अधीर आमने-सामने खड़ी हुई दो सेनाओं के मध्य दिया गया ? यदि ऐसा है तो उस गीता ज्ञान का फल क्या निकला ? अथवा यथार्थ क्या है ?

प्रचलित गीता में वर्णित विविध रहस्य
प्रचलित गीता के कुछ मुख्य महावाक्य
प्रचलित गीता में वर्णित परमात्मा के महावाक्य और उनकी सत्यता

प्रचलित गीता के महावाक्यों को भी यदि हम विचार करते हैं तो देखते हैं उसमें भी अनेक गुह्य रहस्य छिपे हुए हैं, जिनके सम्बन्ध में ज्ञान सागर परमात्मा शिव ने कहा है गीता में आटे में नमक के समान कुछ सत्य है।

प्रचलित गीता में लिखित महावाक्यों और उसमें वर्णित विविध रहस्यों पर विचार

करें तो प्रश्न उठता है कि ये ज्ञान किसने और कैसे लिखा, उसके मन-बुद्धि में ये रहस्य कहाँ से और कैसे आये। इसके विषय में अभी जब हमको परमात्मा के द्वारा यथार्थ गीता ज्ञान प्रत्यक्ष में मिल रहा है, तब ही विचार कर सकते हैं। भक्त गीता पाठियों के लिए तो ऐसा विचार करना सम्भव नहीं है।

प्रचलित गीता में जो ज्ञान वर्णन किया गया है, वह जिन आत्माओं ने परमात्मा से प्रत्यक्ष में गीता ज्ञान सुना, उसकी स्मृति, उसके संस्कारों के आधार पर द्वापर युग में जब अधर्म की वृद्धि होने लगी, आत्मायें दुख-अशान्ति अनुभव करने लगीं तो उन आत्माओं ने अपनी स्मृति और संस्कारों के आधार पर गीता-ज्ञान का वर्णन किया। तो विचार किया जा सकता है कि कोई आत्मा 3000-3500 वर्ष के बाद कितनी स्मृति रख सकती है और क्या वर्णन कर सकती है अर्थात् अंशमात्र ही वर्णन कर सकती है। इसलिए ही निराकार ज्ञान सागर परमात्मा ने ब्रह्मा-तन से हमको जो ज्ञान दिया है, उसमें भी कहा है कि प्रचलित गीता में यथार्थ ज्ञान आटे में नमक के बराबर है।

जैसे प्रचलित गीता में महाभारत युद्ध के विषय में लिखा हुआ है - धर्म क्षेत्रे कुरुक्षेत्रे..., इससे सिद्ध होता कि गीता ज्ञान किसी हिंसक युद्ध के लिए तैयार खड़ी सेनाओं के मध्य नहीं दिया गया। ये कोई विशेष युद्ध है, जिसको धर्म-युद्ध कहा गया है और उस युद्ध क्षेत्र को धर्म-क्षेत्र कहा गया है, जहाँ गीता ज्ञान दिया गया है।

गीता में है -

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत, अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्। (4-7)

इस तथ्य पर विचार करने से अनुभव कहता है कि गीता ज्ञान द्वापर युग में नहीं दिया गया है क्योंकि सृष्टि-चक्र के क्रमानुसार द्वापर के बाद तो कलियुग आया जो और ही अधर्म का युग है। इसलिए इन महावाक्यों के रहस्य पर विचार करेंगे तो इसी निष्कर्ष पर पहुँचेंगे कि गीता ज्ञान कलियुग के अन्त अर्थात् अधर्म की चरम सीमा के बाद और धर्म के चरमोत्कर्ष अर्थात् सतयुग की आदि के संगमयुग पर दिया गया है। कलियुग के अन्त में ही अधर्म बढ़ा हुआ होता है, जिसको नाश करके धर्म की स्थापना की आवश्यकता होती है और उसके बाद धर्म का युग सतयुग आता है।

प्रचलित गीता और परमात्मा के द्वारा दिया गया सत्य गीता ज्ञान में किसी एक विषय का वर्णन नहीं है, दोनों ही गीताओं में आध्यात्म से सम्बन्धित अनेक विषयों और राज़ों का वर्णन है।

प्रचलित गीता में भी आत्मा-परमात्मा के स्वरूप के विषय में, सृष्टि चक्र के विषय

में, कल्प-वृक्ष के विषय में, तीनों लोकों के विषय में, दैवी गुणों की धारणा के विषय में, विभिन्न दर्शनों एवं धर्मों के विषय में वर्णन किया गया है। परमपिता परमात्मा ने भी हमको जो ज्ञान दिया उसमें सार रूप में इन सभी विषयों के बारे में बताया है। परमात्मा ने आध्यात्म के सभी राज़ों को बीजरूप में हमको समझाया है।

''तुम अपने तन-मन-धन से अपने लिए राजधानी स्थापन करते हो। जो करेगा, वह पायेगा। जो नहीं करते, वे पायेंगे भी नहीं। कल्प-कल्प तुम ही करते हो। तुम ही निश्चयबुद्धि होते हो। तुम समझते हो बाप, बाप भी है, टीचर भी है, वही गीता का ज्ञान भी यथार्थ रीति सुनाते हैं। ... यह लिखना चाहिए - गीता का भगवान कृष्ण नहीं, परमपिता परमात्मा शिव है।''

सा.बाबा 3.9.04 रिवा.

प्रचलित गीता के कुछ विचारणीय महावाक्य अर्थात् श्लोक

आत्मा के विषय में

इदं शरीरं कौन्तेय क्षेत्रमित्यभिधीयते, एतद्यो वेत्ति तं प्राहु: क्षेत्रज्ञ इति तद्विद:। 13-1

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय, नवानि गृह्णाति नरोअपराणि।

तथा शरीराणि विहाय जीर्णन्यन्यानि संयाति नवानि देही। (14)

जैसे पुराने कपड़े को ... ऐसे ही पुराने शरीर को छोड़कर आत्मा नया शरीर धारण करती है।

न जायते म्रियते वा कदाचिन्नायं भूत्वा भविता वा न भूय:, अजो नित्य: शाश्वतोअयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे। 2-20

परमात्मा के विषय में

ज्योतिषामपि तज्ज्योतिस्तमस: परमुच्यते। ज्ञानं ज्ञेयं ज्ञानगम्यं हृदि सर्वस्य विष्ठितम्।(12)

वह परम ज्योति है।

परं ब्रह्म परं धाम पवित्रं परमं भवान्, पुरुषं शाश्वतं दिव्यमादिदेवमजं विभुम्। (16)

परमात्मा परमधाम का निवासी परम पवित्र परम ज्योति है।

न तद्भासयते सूर्यो न शशांको न पावक:, यद्गत्वा न विवर्तन्ते तद्धाम परमं मम्। (32)

वहाँ न सूर्य, न चन्द्रमा, न अग्नि ... वह मेरा परमधाम है।

अन्तवत्तु फलं तेषां तद्भवत्यल्पमेधसाम्, देवान्देवयजो यान्ति मद्भता यान्ति मामपि। (19) ?

सर्व धर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज, अहं त्वा सर्वपावेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुच:। (25)

... मैं तुझे सर्व पापों से मुक्त कर दूँगा।
यान्ति देवव्रता देवान् पितृन्यान्ति पित्रव्रता:, भूतानि यान्ति भूतेज्या यान्ति मद्याजिनोअपि माम्।(28)
देवताओं को पूजने वाले देवताओं को प्राप्त होते हैं, ... मेरे भक्त मेरे को ही प्राप्त होते हैं।
यो यो यां तनुं भक्त: श्रद्धायार्चितुमिच्छति, तस्य तस्याचलां श्रद्धां तामेव विद्धाम्यहम्। (30)
जो भक्त जो इच्छा रखकर जिस देवता को पूजते हैं ... फल मैं ही देता हूँ।
यो मामजन्मनादिं च वेत्ति लोकमहेश्वरम्, असंमूढ: स मत्र्येषु सर्व पापे: प्रमुच्यते। (35)

गीता और तीन लोक,
गीता और कल्प-वृक्ष

प्रचलित गीता में भी सृष्टि को एक उल्टे वृक्ष की संज्ञा दी गई है परन्तु उसकी टार-टारियाँ क्या है, वह वृक्ष कैसा है, उसका आदि-अन्त क्या है, वह स्पष्ट नहीं है।
''इस मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ को कोई नहीं जानता। इसको कहा जाता है कल्प वृक्ष। इसका बस गीता में ही वर्णन है। सब जानते हैं गीता ही नम्बरवन धर्म का शास्त्र है। ... यह भी सिर्फ तुम ही समझते हो - और कोई भी शास्त्र में ज्ञान होता नहीं है। ... अभी बच्चों बुद्धि में सारा झाड़ है।''
सा.बाबा 2.9.04 रिवा.

गीता और सृष्टि-चक्र

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत, अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्। (4-7)
''अभी तुमको डायरेक्ट मत मिलती है। श्रीमत भगवत गीता है ना! और कोई शास्त्र पर श्रीमत अक्षर है नहीं। हर 5 हजार वर्ष बाद यह पुरुषोत्तम संगमयुग, गीता का युग आता है। बेहद के बाप ने रचयिता अर्थात् अपना और रचना का सारा परिचय दिया है।''
सा.बाबा 17.9.04 रिवा.

Q. गीता ज्ञान धर्म की स्थापना और अधर्म के नाश के लिए दिया गया, तो धर्म की स्थापना और अधर्म के विनाश का समय क्या हो सकता है?

गीता ज्ञान के तथ्यों पर विचार करते हैं तो समझ में आता है कि गीता ज्ञान किसी हिंसक युद्ध के लिए नहीं दिया गया और न ही गीता ज्ञान सुनने के बाद उस गीता ज्ञान से कोई हिंसक युद्ध हुआ। ये एक धर्म-युद्ध है, जो हर आत्मा के अन्दर चलता है और आत्मा यथार्थ ज्ञान से उस पर विजय प्राप्त करती है। गीता ज्ञान की धारणा से ही विश्व में धर्म की स्थापना हुई।

यथैधांसि समिद्धोअग्निर्भस्मसात्कुरुतेअर्जुन, ज्ञानाग्नि: सर्व कर्माणि भस्मसात्कुरुते तथा। (36)
जैसे अग्नि लकड़ी को भस्म करती है वैसे ही ज्ञान रूपी अग्नि सर्व कर्मों को भस्म कर देती है।

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जना: पर्युपासते, तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेम वहाम्यहम्।
(55)
जो लोग अनन्य भाव से मेरा निरन्तर ध्यान करते हैं, उपासना करते हैं, ऐसे नित्य युक्त लोगों के योगक्षेम की जिम्मेवारी मैं स्वयं उठाता हूँ।

नष्टोमोहा स्मृतिर्लब्ध: त्वत्प्रसादान्मयाच्युत, स्थतोअस्मि गतसन्देह: करिष्ये वचने तव।
18-73

श्रेयान्स्वधर्मो विगुण: परधर्मात्स्वनुष्ठितात्, स्वधर्मे निधनं श्रेय: परधर्मोभयावह:।
3-35 तथा 18-47
सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज, अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुच:।
18-66

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन, मा कर्म फलहेतुर्भुर्मा ते सन्गोगस्त्वकर्माणि।
2-47

प्रचलित गीता के उपर्युक्त महावाक्यों पर हम विचार करें और अपने को चेक करें कि हम कहाँ तक इन बातों को धारण करने में सफल हुए हैं अर्थात् गीता को पढ़ने से कहाँ तक हमारी वह स्थिति बनी है। क्या वह गीता पढ़ने से हमारी आत्मिक शक्ति बढ़ रही है अर्थात् हमारे जीवन से अधर्म का नाश और धर्म की स्थापना हो रही है ? क्या उस गीता को पढ़ने से हमारे में दैवी गुणों की धारणा और आसरी गुणों का नाश हुआ है ? जब हर एक के व्यक्तिगत जीवन में ये धारणा होगी तब ही सामूहिक जगत में भी अधर्म का नाश होकर एक सत् धर्म की स्थापना हो सकेगी। इन सब बातों पर विचार करते और अनुभव सुनते, जीवन-व्यवहार देखते तो अनुभव करते गाड़ी विपरीत दिशा में ही जा रही है अर्थात् दिनोंदिन रहे-सहे धर्म का भी नाश होता जा रहा है और अधर्म और बढ़ता जा रहा है अर्थात् दुनिया में अधर्म का बोलबाला

बढ़ता जा रहा है। आज की दुनिया के व्यवहार और व्यक्तियों के जीवन को देखें तो वे अधर्म को ही धर्म समझ बैठे हैं और उस दिशा में ही आगे बढ़ते जा रहे हैं, जिसके फलस्वरूप दुनिया में दुख-अशान्ति, भय-चिन्ता बढ़ती जा रही है। इस सत्य को विचार कर देखें तो प्रचलित गीता ज्ञान का क्या परिणाम हुआ है और क्या होगा या होने वाला है।

गीता और ब्रह्मचर्य व्रत एवं दैवी गुणों की धारणा

ध्यायतोविषयान् पुंसः सन्गस्तेषूपजायते, सन्गात्संजायते कामः कामात्क्रोधोअभिजायते।
क्रोधाभ्दवति संमोहः संमोहात्स्मृतिविभ्रमः, स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति।
2-62-63

गीता ज्ञान को धारण करने से ही काम वासना पर विजय हो सकती है और गीता ज्ञान को धारण करने के लिए ब्रह्मचर्य ब्रत का पालन अति आवश्यक है क्योंकि काम वासना से बुद्धि का नाश होता है, जिससे स्मृति स्वरूप में स्थित होना कठिन हो जाता है।

यथार्थ गीता ज्ञान सुनने और धारण करने वालों की ये धारणा अवश्य होगी अन्यथा वे गीता ज्ञान को धारण नहीं कर सकते हैं और गीता ज्ञान का कोई महत्व ही नहीं है। अब विचारणीय है कि कितने गीतापाठी इस व्रत को पालन कर रहे हैं अर्थात् कितनों ने काम विकार पर विजय पाकर स्मृति स्वरूप बने हैं।

यदक्षरं वेदविदो वदन्ति विशन्ति यद्यतयो वीतरागाः, यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्य चरन्ति तत्ते पदे संग्रहेण प्रवक्ष्ये। 8-11
योग द्वारा ईश्वरानुभूति करने की इच्छा वाले व्यक्ति को ब्रह्मचर्य का पालन तो अनिवार्य रूप से ही करना होता है।

विविधं नरकस्येदे द्वारं नाशनमात्मनः, कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयंत्यजेत्।
16-21
हे वत्स, काम, क्रोध और लोभ तीन नरक के द्वार हैं, इसलिए तू इन तीनों को छोड़।

योगयुक्तो विशुद्धात्मा विजितात्मा जितेन्द्रियः, सर्वभूतात्मभूतात्मा कुर्वन्नपि न लिप्यते।
5-7

जो मनुष्य कर्मेन्द्रियों को वश करके, योग-युक्त होकर, सभी को आत्मिक दृष्टि से देखते हुए कर्म करता है, उसे दोष अथवा लेप नहीं लगता है।

दैवी संपद्विमोक्षाय निबन्धायासुरी मता, मा शुच: संपदं दैवीमभिजातोअसि पाण्डव।

दैवी सम्पदा मनुष्य को मुक्त (दुख-अशान्ति से मुक्त) कराने वाली है और आसुरी सम्पदा उसे बन्धन में डालने वाली है।

निर्मान मोहा जितसंगदोषा अध्यात्मनित्या विनिवृत्तकामा: ।

निराकार गीता ज्ञान-दाता परमपिता परमात्मा शिव द्वारा ब्रह्मा तन से दिया गया सत्य गीता-ज्ञान

ज्ञान परम धन है जो इस धर्म-युद्ध में विजय का आधार है, वह सत्य ज्ञान सत्य परमात्मा ही आकर देते हैं और योग सिखाते हैं, जिस ज्ञान और योग के बल से आत्मायें इस धर्म-युद्ध में विजय पाती हैं और इस विश्व में सत्य धर्म की स्थापना होती है। उस सत्य ज्ञान और योग के लिए ही आत्मायें परमात्मा को पुकारती हैं, उनका आवाह्न करती हैं।

''ज्ञान रत्न जो अभी तुम लेते हो, वे फिर सच्चे हीरे-जवाहर बन जाते हैं। 9 रतन की माला कोई हीरे जवाहरों की नहीं है। इन ज्ञान रतनों की ही माला है। मनुष्य लोग फिर वे रतन समझ अंगूठियाँ पहन लेते हैं। इन ज्ञान रतनों की माला इस संगम पर ही मिलती है। ये रतन ही तुमको भविष्य 21 जन्म मालामाल बनाते हैं।'' सा.बाबा 10.1.69

''शिव भगवानुवाच है, न कि श्रीकृष्ण भगवानुवाच है।... रचयिता और रचना के आदि-मध्य-अन्त के ज्ञान को अभी तुमने एक्यूरेट जाना है।... रचता और रचना की नॉलेज एक बाप ही देते हैं।'' सा.बाबा 18.5.04 रिवा.

निराकार परमात्मा ने ब्रह्मा तन से जो प्रत्यक्ष में आकर गीता ज्ञान दिया और इस विश्व-नाटक के जो राज़ बताये, जिनको जानने से आत्माओं के लिए योग का अभ्यास सहज हो जाता है, जिससे आत्मा में शक्ति आती है। उन ज्ञान रतनों की बुद्धि में स्मृति हो, उनका अनुभव हो और जीवन में धारणा हो तो आत्मा के ऊपर कोई ग्रहचारी आ नहीं सकती और यदि किन्हीं कर्मों के फलस्वरूप आ भी गई तो सहज ही उतर जाती है। बाबा ने ये सब रहस्य हम आत्माओं को इतनी सरलता से समझाये हैं कि कोई अनपढ़ भी इनको समझ सकता है

और इस यज्ञ में अनेक ऐसे उदाहरण हैं, जो ऐसे भाई-बहनें, जिनको अक्षर ज्ञान भी नहीं था, वे परमात्मा के मुखारविन्द से ये गीता ज्ञान सुनकर नष्टोमोहा-स्मृति स्वरूप बन गये और इस यज्ञ में बहुत अच्छा पुरुषार्थ किया, जिससे भविष्य में श्रेष्ठ पद पाने के अधिकारी बन गये। उन ज्ञान रतनों में मुख्य-मुख्य निम्नलिखित हैं :-

1. आत्मा का ज्ञान,
2. परमात्मा का ज्ञान
3. विश्व-नाटक अर्थात् सृष्टि-चक्र का ज्ञान
4. पुरुषोत्तम संगमयुग का ज्ञान
5. त्रिलोक का ज्ञान
6. कल्प-वृक्ष का ज्ञान
7. कर्मों की गहन गति का ज्ञान
8. योग का ज्ञान
9. पवित्रता का ज्ञान

गीता में दो प्रकार का ज्ञान है - एक है सर्व आत्माओं के कल्याणार्थ अर्थात् सर्व आत्माओं की मुक्ति-जीवनमुक्ति के लिए और दूसरा है आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना के लिए। परमात्मा ज्ञान का सागर है और सर्वात्माओं का मुक्ति-जीवनमुक्ति का दाता है, इसलिए वह सर्व आत्माओं के कल्याणार्थ ज्ञान देता है और उससे आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना होती है।

परमात्मा ब्रह्मा तन में आकर गीता ज्ञान देते हैं, ब्रह्मा बाबा उस ज्ञान को धारण कर सबके सामने उदाहरण स्वरूप बनते हैं, इसलिए शिवबाबा सर्वात्माओं का परमपिता है और ब्रह्मा बाबा सर्व धर्मों का आदि पिता और आदि सनातन देवी-देवता धर्म का धर्मपिता। इसलिए ही सर्व धर्म की आत्मायें उनको विभिन्न नामों से अर्थात् ब्रह्मा, आदम, एडम आदि के रूप में याद करती हैं। परमात्मा पिता ने यह भी ज्ञान दिया है कि जो धर्म की स्थापना करते हैं, वे ही उसकी पालना भी करते हैं, इसलिए ब्रह्मा बाबा ने जिस आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना की, उसकी नारायण के रूप में सतयुग में पालना करते हैं।

अभी परमात्मा ने सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान दिया है और इस विश्व-नाटक के सर्व राज़ों का ज्ञान दिया है, जिस ज्ञान को धारणकर आत्मायें अभी ही मुक्ति-जीवनमुक्ति

के सुर-दुर्लभ सुख को अनुभव करती हैं और अपने जीवन में चढ़ती कला का अनुभव करती है अर्थात् आत्मा को अपने में आत्मिक शक्ति की वृद्धि की अनुभूति होती है और आत्मा अनुभव करती है कि हम अपनी आसुरी वृत्तियों पर विजय प्राप्त कर अपने उज्ज्वल भविष्य की ओर अग्रसर हैं।

1. आत्मा का ज्ञान

शिवबाबा ने हमको आत्मा का जो ज्ञान दिया अर्थात् आत्मा के नाम, रूप, धाम, गुण, कर्तव्य का जो ज्ञान दिया, वह समझने और धारण करने में अति सहज है। जन-साधारण भी उसको समझ सकता है। आत्मा एक ज्योति बिन्दु है, परमधाम की रहने वाली है, आत्मा ही देह रूपी वस्त्र को धारण कर इस रंगमंच पर अपना पार्ट बजाती है अर्थात् कर्म करती है और उसका फल सुख-दुख के रूप में भोगती है। आत्मा कब भी सदा काल के लिए मोक्ष को नहीं पाती है क्योंकि आत्मा इस अनादि-अविनाशी नाटक में पार्टधारी है। आत्मा के विषय में इन सत्यों पर विचार करें, तो हम देखते हैं, इस तरह का विवेकसंगत, तर्कयुक्त ज्ञान न प्रचलित गीता में है और न ही किसी अन्य धर्म के धर्मशास्त्र में है। आत्मायें अपने पार्ट के अनुसार भिन्न-भिन्न शरीर धारण करती और छोड़ती है अर्थात् आत्मा अजर-अमर अविनाशी है, देह रूपी वस्त्र विनाशी है। जिसका वर्णन प्रचलित गीता में भी निम्न शब्दों में है।

न जायते म्रियते वा कदाचिन्नायं भूत्वा भविता वा न भूयः, अजो नित्यः शाश्वतोअयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे। 2-20

''आत्मायें सभी स्वीट होम में रहती हैं, वहाँ से आती हैं पार्ट बजाने। ... यह सूर्य, चाँद तारे सब बत्तियाँ हैं। ... यहाँ तुम बच्चों की बुद्धि में है हम एक्टर्स हैं, यह हार-जीत का खेल है।''

सा.बाबा 13.6.05 रिवा.

''जैसे गीता में कोई-कोई बात राइट है, वैसे गीतों में भी है। ... अब जीव और मन में कितना फर्क है। मन और बुद्धि आत्मा की शक्तियां हैं और यह शरीर आरगन्स है। ... अब आत्मा आरगन्स द्वारा विकर्मों पर जीत पा रही है। ऐसे नहीं कि मन पर जीत पा रही है। नहीं, माया पर जीत पाते हैं।''

सा.बाबा 9.7.07 रिवा.

2. परमात्मा का ज्ञान

शिवबाबा ने हमको अपने विषय जो ज्ञान दिया, जिसमें परमात्मा के नाम, रूप, धाम, गुण, कर्तव्य का जो ज्ञान दिया और अपने अवतरण के विषय में जो परकाया प्रवेश का रहस्य

बताया है, वह तर्कयुक्त और पूर्ण विवेक संगत है और समझने में अति सहज है। उससे परमात्मा को याद करना भी अति सहज है। परमात्मा भी एक आत्मा है परन्तु वह ज्ञान, गुण-शक्तियों में परम है और उनके इस धरा पर आकर पार्ट बजाने का विधि-विधान विशेष है, इसलिए उनको परमात्मा कहते हैं। अभी परमात्मा ने अपना जो परिचय दिचप है, ऐसा परिचय और कहाँ भी नहीं मिलता है। उस सत्य का अंशमात्र प्रचलित गीता में भी लिखा है -

न तद्भासयते सूर्यो न शशांको न पावकः, यद्गत्वा न विवर्तन्ते तद्धाम परमं मम्। (32)

परन्तु परमात्मा के विषय में और जो वर्णन किया गया है, वह इस सत्य से भ्रमित कर देता है और दोनों में विरोधाभास पैदा हो जाता है, जिससे पुरुषार्थी को सत्य का निर्णय करना कठिन तो क्या असम्भव ही हो जाता है। इसलिए ही आज तक परमात्मा के विषय में कोई यथार्थ नहीं दे सका है और भला दे भी कैसे सके क्योंकि वह काम तो परमात्मा का ही है और उनको ही आकर करना है।

''उन्हों को अनुभव कराओ - आत्मा और परमात्मा में रात-दिन का फर्क है। जब अन्तर महसूस करेंगे तो गीता का भगवान सिद्ध हो जायेगा। ... अनुभव के आगे कोई जीत नहीं सकता।'' अ.बापदादा 2.8.72

''भगवानुवाच है भी गीता। गीता ज्ञान का पुस्तक है गीता परन्तु भगवान कोई पुस्तक हाथ में उठाकर नहीं पढ़ाते हैं। यह तो डायरेक्ट भगवानुवाच है। ... इसको 84 के चक्र का नाटक कहा जाता है। यह बना-बनाया खेल है। ये बड़ी समझने की बातें हैं क्योंकि ऊंच ते ऊंच भगवान की मत मिलती है।'' सा.बाबा 8.10.04 रिवा.

''गीता का रचयिता कृष्ण नहीं है, गीता माता ने कृष्ण को जन्म दिया। ... जो आकर बाप से पढ़ेंगे, वे ही स्वर्ग में आयेंगे, बाकी सब अपने-अपने सेक्शन में चले जायेंगे। इस ड्रामा के चक्र को समझना है। चक्र को जानने से तुम चक्रवर्ती राजा बनते हो।''

सा.बाबा 1.5.07 रिवा.

''तुम बच्चों को पहले-पहले तो यह समझानी देनी है कि गीता का भगवान कौन ? ... मैं अन्त तक तुमको ज्ञान सुनाता रहूँगा। ... गीता का बहुत प्रभाव है परन्तु गीता ज्ञान दाता को भूल गये हैं।'' सा.बाबा 16.11.05 रिवा.

''भक्ति मार्ग में मेरे में ज्ञान इमर्ज नहीं होता है। उस समय सारा रसम-रिवाज़ भक्ति मार्ग का चलता है। ड्रामा अनुसार जो भक्त जिस भावना से पूजा करते हैं, उनको साक्षात्कार कराने मैं निमित्त बना हुआ हूँ। उस समय मेरी आत्मा में ज्ञान का पार्ट इमर्ज नहीं है।''

सा.बाबा 18.6.07 रिवा.

Q. भक्तिमार्ग में परमात्मा साक्षात्कार कराता है या ड्रामानुसार होता है। यदि परमात्मा साक्षात्कार कराता है तो वह यहाँ साकार में आता है या परमधाम से ही साक्षात्कार कराता है। यदि यहाँ आता है तो कैसे आता है और किसमें आता है और यदि परमधाम से ही कराता है तो क्या परमधाम में आत्मा कर्म कर सकती है? यह सब कैसे होता है?

3. विश्व-नाटक अर्थात् सृष्टि-चक्र का ज्ञान

सृष्टि-चक्र के विषय में परमात्मा ने अभी जो ज्ञान दिया है, वह अद्वितीय है और उस ज्ञान को पाकर सृष्टि रचना के विषय में सारे प्रश्न हल हो गये हैं। परमात्मा जो सृष्टि रचना के विषय में जो ये सत्य बताया है कि ये विश्व एक अनादि-अविनाशी नाटक है, जो हर 5000 वर्ष के बाद हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है। इसकी न कभी रचना हुई है और न विनाश होने का कोई प्रश्न उठता है। परमात्मा सहित सभी आत्मायें इसमें अनादि-अविनाशी पार्टधारी हैं। परमात्मा कल्पान्त में आकर इसकी कलम लगाते हैं अर्थात् पुराने से नया, पतित से पावन बनाते हैं। यद्यपि गीता, महाभारत, रामायण, आदि अन्य धर्मशास्त्रों में भी पुनरावृत्ति के सिद्धान्त का वर्णन किया गया है परन्तु ऐसा स्पष्ट और विवेकसंगत वर्णन कहाँ भी नहीं है, इसलिए उसको समझना अति कठिन है और वह मनुष्यों को भ्रमित कर देता है।

ये सृष्टि-चक्र सतयुग, त्रेतायुग, द्वापर युग और कलियुग चार समान भागों में विभाजित है, जिसका आधा भाग अर्थात् सतयुग-त्रेतायुग स्वर्ग और द्वापर-कलियुग आधा भाग नरक कहलाते हैं। इसको ब्रह्मा के दिन और ब्रह्मा की रात के रूप में भी गाया हुआ है। ऐसा सृष्टि-चक्र, स्वर्ग-नरक, ब्रह्मा के दिन और ब्रह्मा की रात का यथार्थ वर्णन गीता सहित किसी भी धर्मशास्त्र में नहीं है।

''हरेक आत्मा में अपना-अपना पार्ट भरा हुआ है। सब एक्टर्स हैं, उनको अपना पार्ट बजाना ही है। जैसे कि नये सिर शूटिंग होती जाती है परन्तु यह अनादि शूटिंग हुई पड़ी है। वर्ल्ड की यह हिस्ट्री-जाग्राफी रिपीट होती रहती है। ... भारत वाइसलेस था, अभी विशश है, फिर वाइसलेस कैसे बनेगा? यह बाप ही समझाते हैं। भगवानुवाच - मामेकम् याद करो।... गीता में भी है - हे बच्चो, तुम काम पर जीत पहनो तो ऐसे जगतजीत बनेंगे।''

सा.बाबा 11.8.04 रिवा.

''भक्ति मार्ग में मेरे में ज्ञान इमर्ज नहीं होता है। उस समय सारा रस्म-रिवाज़ भक्ति मार्ग का चलता है। ड्रामा अनुसार जो भक्त जिस भावना से पूजा करते हैं, उनको साक्षात्कार कराने मैं निमित्त बना हुआ हूँ। उस समय मेरी आत्मा में ज्ञान का पार्ट इमर्ज नहीं है।''

Q. भक्तिमार्ग में परमात्मा साक्षात्कार कराता है या ड्रामानुसार होता है। यदि परमात्मा साक्षात्कार कराता है तो वह यहाँ साकार में आता है या परमधाम से ही साक्षात्कार कराता है। यदि यहाँ आता है तो कैसे आता है और किसमें आता है और यदि परमधाम से ही कराता है तो क्या परमधाम में आत्मा कर्म कर सकती है? यह सब कैसे होता है?)

सा.बाबा 18.6.07 रिवा.

''गीता में भगवानुवाच शब्द लिखा है, वह सत्य है परन्तु भगवान का नाम बदली कर दिया है। ... यह भी ड्रामा में नूँध है। ... भारत स्वर्ग था तो सच खण्ड था, सो अब झूठ खण्ड बना है। बाप समझाते हैं - ड्रामा अनुसार दिन प्रतिदिन दुख बढ़ता ही जायेगा।''

सा.बाबा 10.4.07 रिवा.

4. पुरुषोत्तम संगमयुग का ज्ञान

कलियुग के अन्त और सतयुग के आदि के पुरुषोत्तम संगम पर परमात्मा अवतरित होकर इसका ज्ञान देते हैं और राज़योग सिखलाते हैं, जिससे स्वर्ग की स्थापना होती है तथा समय और ड्रामा प्लॉन अनुसार नरक का विनाश होता है। संगमयुग पर ही आत्माओं का परमात्मा से मिलन होता है और परमात्मा से सर्व आत्माओं को मुक्ति-जीवनमुक्ति का जन्मसिद्ध अधिकार मिलता है। सृष्टि की स्थापना और विनाश और पुरुषोत्तम संगमयुग का ऐसा ज्ञान प्रचलित गीता सहित किसी भी धर्मशास्त्र में नहीं है। गीता, महाभारत, रामायण आदि सभी शास्त्र इस संगमयुग की प्राप्तियों, विशेषताओं और कर्तव्यों का ही वर्णन करते हैं।

''यह जो महाभारत लड़ाई है, उसकी भी ड्रामा में नूँध है। ... संगमयुग को कम से कम 100 वर्ष तो चाहिए ना। सारी नई दुनिया बननी है। ... प्रलय तो होती नहीं है।... संगमयुग पर ही गीता गाई हुई थी, जबकि विनाश हुआ था। बाप ने राजयोग सिखाया था, जिससे राजाई स्थापन हुई थी, जो फिर भी जरूर होगी।'' सा.बाबा 25.11.05 रिवा.

''गीता में भी ये बातें नहीं हैं। यह है बिल्कुल न्यारा ज्ञान। ड्रामा में यह सब नूँध है। एक सेकण्ड का पार्ट न मिले दूसरे सेकण्ड से।... कम बुद्धि वाले तो इतनी धारणा कर न सकें।''

सा.बाबा 20.9.04 रिवा.

गीता ज्ञान और संगमयुग

प्रचलित गीता के महावाक्यों पर भी अगर हम विचार करें तो हम देखेंगे यह ज्ञान कल्प के पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही दिया गया क्योंकि अधर्म की चरम सीमा और धर्म की चरम सीमा कल्प के संगमयुग पर ही होती है। वैसे तो किसी भी चक्र के विषय में हम देखेंगे तो उसका कोई आदि अन्त नहीं होता है। चक्र में अपनी मान्यता के आधार पर जिस स्थान पर

हम कोई बिन्दु लगा देंगे, वही उस चक्र के आदि-अन्त का संगम हो जायेगा। परन्तु इस सृष्टि-चक्र के विषय में हम विचार करें तो इसके आदि अन्त का बिन्दु है अधर्म की चरम-सीमा और धर्म की चरम-सीमा। इस संगमयुग पर ही निराकार परमपिता परमात्मा शिव यथार्थ गीता ज्ञान देकर धर्म की स्थापना करते हैं और मानव जीवन से अधार्मिक वृत्तियों का नाश करते हैं अर्थात् उस गीता ज्ञान से मानव जीवन में अधार्मिक वृत्तियों का नाश हो जाता है और आत्मा पुरुषोत्तम बन जाती है। जब आत्मा से आसुरी गुणों का नाश हो जाता और दैवी गुणों की धारणा हो जाती है तो इस पुरानी दुनिया का अर्थात् पुराने चक्र का भी विनाश स्वत: हो जाता है और नये चक्र अर्थात् नई दुनिया की आदि हो जाती है। इसलिए इसको पुरुषोत्तम संगमयुग कहा जाता है, जिसकी याद में भारत में पुरुषोत्तम मास मनाया जाता है। सभी धर्मशास्त्र, गीता, रामायण, महाभारत, वेद, पुराण इस संगमयुग की और इस पर हुई घटनाओं का ही वर्णन करते हैं। मुसलमान धर्म में भी इस समय को कयामत के समय के रूप में गाया हुआ है।

''बाप का पार्ट ही है संगमयुग पर आने का। भक्ति आधा कल्प चलती है, ज्ञान आधा कल्प नहीं चलता है। ज्ञान का वर्सा आधाकल्प के लिए मिलता है, ज्ञान तो एक ही बार सिर्फ संगमयुग पर मिलता है।'' सा.बाबा 22.12.04 रिवा.

''संगमयुग को पुरुषोत्तम युग कहा जाता है। अभी आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना होती है। ... भारत कितना धनवान था, अभी तो कंगाल है।''

सा.बाबा 21.1.05 रिवा.

''बाप संगमयुग पर आया हुआ है। महाभारत लड़ाई भी संगमयुग की ही है। ... इसको ही पुरुषोत्तम संगमयुग कहते हैं। ... संगमयुग पर ही बाप आकर तुमको हीरे जैसा बनाते हैं परन्तु सब नम्बरवार तो होते ही हैं।'' सा.बाबा 22.1.05 रिवा.

''उनकी बुद्धि में गीता रहती है और समझते हैं - गीता कृष्ण ने सुनाई और व्यास ने लिखी। परन्तु गीता तो न कृष्ण ने सुनाई थी और न वह समय था। बाप ये सब बातें क्लीयर कर समझाते हैं और कहते हैं अभी जज करो।'' सा.बाबा 11.6.07 रिवा.

''यह भी ड्रामा है, फिर भी हू-ब-हू रिपीट होगा। फिर यह ज्ञान भूल जायेगा। जब तक संगमयुग नहीं आया है तब तक गीता का ज्ञान हो कैसे सकता है।... अब तुम यह नॉलेज सुन रहे हो।'' सा.बाबा 28.8.04 रिवा.

''ओपिनियन लिखा लो - ईश्वर सर्वव्यापी नहीं है, उसने तो आकर राजयोग सिखाया था। पतित-पावन भी वही बाप है। वह कहते हैं - देह सहित देह के सब सम्बन्ध छोड़, अपने को आत्मा समझो।'' सा.बाबा 3.9.04 रिवा.

5. त्रिलोक का ज्ञान

ब्रह्मलोक आत्माओं का लोक और साकार लोक का वर्णन तो गीता और अनेक धर्मशास्त्रों में भी है परन्तु उनके विधि-विधान के विषय में और ब्रह्मलोक और साकार लोक का क्या सम्बन्ध है, आत्माओं की वहाँ पर क्या स्थिति है, उसके सम्बन्ध में स्पष्ट ज्ञान कहाँ भी नहीं मिलता है। ऐसे ही सूक्ष्म लोक का भी अंशमात्र में वर्णन भारत के शास्त्रों में और अन्य धर्मशास्त्रों में है। जैसे मुसलमान धर्म और क्रिश्चियन धर्म वाले कहते कि कयामत के समय खुदा रूहों को कब्र से जगाता है और उनके कर्मों का हिसाब किताब करता है तो वह कहाँ और कैसे करता है, जरूर सूक्ष्म रूप में ही करता होगा। भारत में भी तीन लोकों का गायन है परन्तु उसके विधि-विधान के विषय में स्पष्ट नहीं है। अभी शिवबाबा ने तीनों लोकों का ज्ञान दिया है, अस्तित्व और उनके विधि-विधान को बताया है तथा इस विश्व-नाटक में उनका क्या महत्व है, वह सब ज्ञान दिया है। ऐसा स्पष्ट ज्ञान किसी भी धर्म और धर्म शास्त्र में नहीं है और न ही वर्तमान में कोई वैज्ञानिक उसके विषय में बता सका है।

परमात्मा पिता ने अभी जो ज्ञान दिया है, जिससे हमने जाना है कि सूक्ष्म लोक क्या है, उसकी क्या कार्य विधि है और विश्व के नव-निर्माण में उसकी क्या भूमिका है, सारे कल्प में उसकी स्थिति क्या होती है, वह बड़ा अद्भुत, रहस्यात्मक और आनन्दमय है।

''ये सब चित्र (झाड़, त्रिमूर्ति, गोला) बाप ने दिव्य दृष्टि द्वारा बनवाये हैं। ये सब श्रीमत से बने हुए हैं, किसी मनुष्य मत से नहीं बने हैं। ये सब खलास हो जायेंगे, कुछ भी इनका नाम निशान नहीं रहेगा। नई दुनिया में सब कुछ नया होगा।''

सा.बाबा 23.8.04 रिवा.

प्रचलित गीता में लिखा है -

न तद्भासयते सूर्यो न शशांको न पावकः, यद्गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम। 15-6

इस लिखत से ये स्पष्ट नहीं है कि वहाँ केवल परमात्मा ही रहते हैं या आत्मायें भी उनके साथ रहती हैं और यदि रहती हैं तो उनकी स्थिति क्या होती है अर्थात् क्या वे सारे ब्रह्माण्ड में रहती हैं या उसके किसी एक भाग में रहती हैं?

परमात्मा ने आत्माओं की परमधाम की स्थिति की तुलना आकाश में स्थित तारों से की, उस हिसाब से आत्मायें सारे ब्रह्माण्ड में रहती हैं।

''अभी तुम बच्चों को तीनों लोकों का ज्ञान है। ऐसे नहीं कि सिर्फ वर्ल्ड का ज्ञान है। वर्ल्ड से भी आगे मूलवतन, सूक्ष्मवतन, स्थूल वतन तीनों का ज्ञान तुम्हारी बुद्धि में है। ... तीनों कालों का ज्ञान तुम्हारी बुद्धि में है। तुम त्रिकालदर्शी बनते परन्तु तुमको त्रिलोकीनाथ नहीं कहेंगे।

त्रिलोकीनाथ कोई नहीं बनता है।'' सा.बाबा 19.6.07 रिवा.

6. कल्प-वृक्ष का ज्ञान

गीता में भी सृष्टि को एक उल्टे वृक्ष से संज्ञा दी है परन्तु इस वृक्ष की स्थापना, विनाश और पालना कैसे होती है, इसको उल्टा वृक्ष क्यों कहा जाता है, इसकी टाल-टालियाँ क्या हैं और कैसे निकलती हैं, इसका कुछ भी स्पष्ट वर्णन नहीं है।

शिवबाबा ने अभी जो कल्प-वृक्ष का राज़ समझाया है, उससे सारी बात स्पष्ट हो गई है। परमात्मा ने कल्न-वृक्ष का जो राज़ समझाया है, उससे स्पष्ट समझ में आया है कि किस तरह इस सृष्टि अर्थरत् विश्व-नाटक में वृक्ष के सारे गुण-धर्म हैं। परमात्मा के द्वारा दिये गये ज्ञान से इस कल्प-वृक्ष की कलम अर्थात् स्थापना-विनाश का राज़, विभिन्न धर्म रूपी शाखाओं-प्रशाखाओं का राज़, हरेक धर्मवंश के सतोप्रधान, सतो सामान्य, रजो, तमो प्रधान अवस्थाओं का राज़ समझ में आया है। ऐसा स्पष्ट ज्ञान कहाँ भी नहीं है।

सृष्टि की रचना का जो ज्ञान गीता सहित अन्य धर्मशास्त्रों में दिया गया है और वैज्ञानिकों ने जो ज्ञान दिया है, वह अति विरोधाभासी और भ्रमित करने वाला है, इसलिए ही आत्मायें सब ज्ञान होते भी पतन की तरफ ही गई हैं और जा रही हैं।

दुनिया में ब्रहस्पति की दशा सबसे श्रेष्ठ मानी जाती है परन्तु वह श्रेष्ठ क्यों है और कैसे है, यह भी बाबा ने बताया है कि जब कल्प-वृक्ष के बीजरूप वृक्षपति परमात्मा इस सृष्टि पर आते हैं तब जो आत्मायें उनको पहचान कर, उनके द्वारा कल्प-वृक्ष के ज्ञान को समझकर इस कल्प-वृक्ष की नई कलम लगाने में सहयोगी बनती हैं, वे आत्मायें बड़ी भाग्यशाली हैं। सारे कल्प में उनका विशेष महत्व है।

''मनुष्य सृष्टि रूपी यह उल्टा झाड़ कैसे है, यह कोई समझते नहीं हैं। इसको कल्प-वृक्ष कहा जाता है। ... बाप सत्, चित्, ज्ञान का सागर है, उनमें कौनसा ज्ञान है, यह भी नहीं समझते हैं। बाप ही इसका बीजरूप, चैतन्य है। उनसे ही सारी रचना होती है। ... अब तुम बच्चे रचता और रचना के राज़ को जानते हो।'' सा.बाबा 30.12.04 रिवा.

''झाड़ की उत्पत्ति कैसे होती है, मुख्य बात है यह। ... इस झाड़ का बनियन ट्री का मिसाल बहुत अच्छा समझाते हैं। यह भी गीता का ज्ञान है, जो बाप तुम्हें सम्मुख बैठ सुनाते हैं, जिससे तुम राजाओं का राजा बनते हो, फिर भक्ति मार्ग में यह गीता शास्त्र आदि बनेंगे। यह अनादि ड्रामा बना हुआ है।'' सा.बाबा 2.9.04 रिवा.

''बच्चे जानते हैं - हमारा बीज है वृक्षपति, जिसके आने से हम पर बृहस्पति की दशा बैठती

है। ... अभी तुम बच्चों पर बृहस्पति की दशा है।... भगवानुवाच - काम महाशत्रु है, उसको जीतने से तुम विश्व का मालिक बनते हो।''
सा.बाबा 4.6.04 रिवा.

7. कर्मों की गहन गति का ज्ञान

ये सृष्टि कर्म और फल पर आधारित एक विश्व-नाटक है। इसमें कर्म प्रधान है, इसलिए कर्म के विधि-विधान को जानना अति आवश्यक है। सारे विधि-विधान को जानने वाला ही श्रेष्ठ कर्म करने में समर्थ होता है, जिसके फलस्वरूप उसको श्रेष्ठ फल प्राप्त होता है।

कर्मों की गहन गति का राज़ भी बाबा ने जो बताया है, वह बहुत स्पष्ट और विवेकसंगत है, जिससे आत्मा को श्रेष्ठ कर्म करने की प्रेरणा मिलती है और आत्मा अपने में श्रेष्ठ कर्म करने की शक्ति अनुभव करती है। जब ज्ञान और शक्ति दोनों ही मिलते हैं तब ही आत्मा श्रेष्ठ कर्म करने में समर्थ होती है। आत्मा के विकर्मों का कारण क्या है और उसका निवारण कैसे हो, वह भी बाबा ने बताया है, जिसको जानकर आत्मा पुराने विकर्मों का खाता समाप्त करके, श्रेष्ठ कर्म करने में समर्थ होती है, जिससे आत्माओं का श्रेष्ठ कर्म का नया खाता जमा होता है और आत्माओं की चढ़ती कला होती है। यद्यपि सभी धर्म पिताओं ने श्रेष्ठ कर्म करने की प्रेरणा दी है परन्तु श्रेष्ठ कर्म करने की शक्ति आत्मा में कैसे आये वह रास्ता किसी ने भी नहीं बताया है, जिसके कारण आत्मायें हठ से कुछ समय तक तो श्रेष्ठ कर्म करती हैं परन्तु बाद में अपने रास्ते से भटक जाती हैं, इसलिए सभी धर्मवंश की आत्मायें परिणाम रूप में उतरती कला में ही जाती हैं। जिससे आत्माओं की व्यक्तिगत और विश्व की सामूहिक उतरती कला होती है।

''मनुष्य जीवन में कर्म के आधार से सुख और दुख की प्रालब्ध चलती है अर्थात् हम जो कर्म करते हैं, उसकी प्रालब्ध सुख या दुख के रूप में भोगते हैं। सुख-दुख का सम्बन्ध कर्म से है। कर्म को कोई किस्मत नहीं कहेंगे। ... कोई फिर कह देते हैं - किस्मत भी भगवान ने बनाई है। लेकिन परमात्मा कोई की किस्मत नहीं बनाते हैं। ... गीता में भी वर्णन है कि जीवात्मा अपना ही शत्रु और अपना ही मित्र है।''
मातेश्वरी 15.12.63

8. योग का ज्ञान

भारत के प्राचीन राज़योग की देश-विदेश में बहुत महिमा है परन्तु यथार्थ योग क्या है, वह आज तक न किसी धर्मगुरु ने बताया है और न ही किसी धर्मशास्त्र में वर्णन है। सब योग के गुरु राज़योग के नाम पर हठयोग की ही शिक्षा देते आये हैं, उसकी क्रियायें, विधि-विधान

बताते हैं, जिससे आत्मायें अल्प-काल के लिए शारीरिक स्वास्थ्य को प्राप्त करते हैं और अल्पकाल की शान्ति अनुभव करती है परन्तु बाद में उससे भटक जाती है अर्थात् आत्मिक स्वास्थ्य और शान्ति की अनुभूति नहीं कर पाती हैं।

योग की जो परिभाषा शिवबाबा ने बताई है, योग का जो ज्ञान दिया है और योग के लिए जो मार्ग बताया है, वह अति सहज और बुद्धि-गम्य है, जिसको जन-साधारण भी समझकर उसका अभ्यास करके आत्मा को पावन बनाने का पुरुषार्थ कर सकता है और कर रहे हैं। संक्षेप में कहें तो परमात्मा के द्वारा दिये यथार्थ ज्ञान से 'अपने को बिन्दुरूप आत्मा समझ, बिन्दुरूप परमात्मा की अव्यभिचारी याद' ही सच्चा राजयोग है, जो आत्मा की चढ़ती कला का एकमात्र आधार है।

''सर्व शास्त्र शिरोमणी श्रीमद्भगवत गीता है ईश्वरीय मत की। ईश्वरीय मत, दैवी मत और आसुरी मत का राज़ एक ईश्वर ही बताते हैं, राजयोग की नॉलेज देते हैं। ... सतयुग-त्रेता है ज्ञान का फल, ऐसे नहीं कि वहाँ ज्ञान मिलता है। बाप आकर भक्ति का फल ज्ञान देते हैं। अब एक बाप को याद करो तो सतोप्रधान बन जायेंगे, रचना के आदि-मध्य-अन्त को याद करो तो चक्रवर्ती राजा बन जायेंगे।'' सा.बाबा 23.8.04 रिवा.

''सब कहते हैं - निराकार परमात्माये नमः।... ब्रह्मा देवतायें नमः कहते हैं। ब्रह्मा का नाम लेकर ऐसा कभी नहीं कहेंगे - ब्रह्मा परमात्माये नमः। परमात्मा एक निराकार को ही कहा जाता है। ... भल मैं भी इस देह द्वारा सुनाता हूँ परनतु तुमको याद मुझ निराकार को ही करना है।'' सा.बाबा 18.6.07 रिवा.

Q. निराकार परमात्मा साकार तन में आये तो उसको परमात्मा कहेंगे ?

उनको प्रजापिता कहेंगे, बापदादा कहेंगे परन्तु परमात्मा नहीं कहेंगे। यदि उनको परमात्मा समझ याद करते तो देह तो विनाशी है, इसलिए बुद्धियोग कभी स्थिर नहीं हो सकता, इसलिए किसी देहधारी को परमात्मा नहीं कह सकते।

9. पवित्रता का ज्ञान

पवित्रता सुख-शान्ति की जननी है और पवित्रता सर्वात्माओं का स्वधर्म है, इसलिए सभी आत्माओं में पवित्र बनने की जिज्ञासा है परन्तु पवित्र बनने के जो उपाय अभी तक धर्मगुरुओं और धर्मपिताओं के द्वारा बताये गये हैं और गीता आदि शास्त्रों में वर्णित हैं, उनसे न कोई पावन बना है और न ही बन सकता है। इसलिए ही दुनिया का निरन्तर पतन होता जा रहा है और अब दुनिया विनाश के कण्ठे पर आ पहुँची है। गीता आदि शास्त्रों में तो आत्मा को ही

निर्लेप कह दिया है और कहा है कि लेप-छेप शरीर पर लगता है, इसलिए सभी धर्मगुरुओं और हठयोगियों ने शरीर को ही पावन बनाने का पुरुषार्थ बताया, जिससे आत्मा की दिनोंदिन उतरती कला ही हुई।

आत्मा में कैसे अपवित्रता आई है और कैसे परमात्मा की याद से आत्मा पवित्र बनेगी, ये राज़ भी शिवबाबा ने ही बताया है। जैसा कि बाबा ने बताया - आत्मा की अपवित्रता का मूल कारण अज्ञानता है और पावन बनने के लिए यथार्थ आत्म-ज्ञान, परमात्मा-ज्ञान और सृष्टि-चक्र का ज्ञान चाहिए। साथ ही जैसे गीता में मन्मनाभव, मध्याजीभव, नष्टोमोहा-स्मृतिलब्धा आदि शब्दों का वर्णन किया गया है, उसके अभ्यास के लिए बाबा ने उपर्युक्त बातों का जो ज्ञान दिया है, उस सब ज्ञान को समझकर धारण करने से इस स्थिति का अभ्यास किया जा सकता है और सफलता पाई जा सकती है। ये ज्ञान शिवबाबा ने ही स्पष्ट रूप से दिया है, और किसी धर्मशास्त्र में न ऐसा ज्ञान है और न ही जगत में किसकी ऐसी पवित्र अवस्था देखने में आती है।

''बाबा छोटेपन से ही गीता पढ़ते थे और नारायण की पूजा करते थे। ... कोई से दिल लगाई, भाकी पहनी तो समझो चट खाते में गया। उनका तो मुंह देखना भी अच्छा नहीं लगता। ... बाप कहते हैं - देह सहित सब कुछ भूलो अपने को आत्मा समझ आप को याद करो।''

सा.बाबा 26.6.04 रिवा.

''ये आंखें बड़ी शैतान हैं। बाप आकर ज्ञान के चक्षु देते हैं। आत्मा ही सब कुछ सुनती-बोलती है। ... क्रिमिनल आई तो सिवाए बाप के और कोई सुधार नहीं सकता। ज्ञान के सिविल चक्षु एक बाप ही देते हैं।''

सा.बाबा 18.5.04 रिवा.

विविधं नरकस्येदे द्वारं नाशनमात्मन:, काम: क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयंत्यजेत्।

16-21

उपर्युक्त बातों के अतिरिक्त बाबा ने जो आत्मा और सृष्टि की चढ़ती कला, उतरती कला का राज़, अपनी परकाया प्रवेश का राज़, अन्य धर्म-पिताओं के परकाया प्रवेश का राज़, गीता में वर्णित युद्ध का राज़, जनसंख्या वृद्धि और कम होने का राज़, मुक्ति-जीवनमुक्ति का राज़, आत्माओं के वापस घर जाने का राज़ ..... आदि-आदि सब राज़ बाबा ने बताये, उनके Cause Effect, Facts Figures बताये हैं वे पूर्ण विवेकसंगत है, समझने और धारण करने में सहज हैं। उनमें कहाँ भी कोई विरोधाभास (Contradiction) नहीं है, जिससे बुद्धि में

किसी प्रकार का द्वन्द या उलझन पैदा नहीं होती है, इसलिए आत्मा उनको समझने के बाद राहत अनुभव करती है, अपनी अभीष्ट मंजिल की ओर अग्रसर अनुभव करती है।

निराकार परमपिता परमात्मा शिव ने प्रत्यक्ष में आकर जो गीता ज्ञान दिया है, उससे आत्मा सहज ही गीता ज्ञान के सार अर्थात् देह सहित देह के सर्व धर्म त्यागकर नष्टोमोहा-स्मृति स्वरूप में स्थित होने का सहज अनुभव करती है, जो स्थिति परम सुखमय है। ऐसा स्पष्ट ज्ञान किसी भी धर्मशास्त्र में नहीं है। सत्य तो यह है कि आत्मा, परमात्मा, सृष्टि-चक्र का स्पष्ट ज्ञान गीता सहित किसी भी शास्त्र में नहीं है, इसलिए ही आत्मा की उनको पढ़ते भी जिज्ञासा शान्त नहीं होती है, आत्मा राहत अनुभव नहीं करती है, दुनिया का उत्थान नहीं होता, जो सत्य ज्ञान का फल अर्थात् प्राप्ति है, वह अनुभव नहीं करती है।

''अब तुम बच्चों का ज्ञान का तीसरा नेत्र खुला है, जिससे तुम बाप के द्वारा रचयिता और उसकी रचना के आदि-मध्य-अन्त को अच्छी रीति जान चुके हो। कल जो घर में गीता पढ़ते थे, उस गीता से रचता और रचना की नॉलेज नहीं मिलती है।''

सा.बाबा 21.6.07 रिवा.

''आधा कल्प भक्ति है ब्रह्मा की रात और आधा कल्प ब्रह्मा का दिन। ... ब्रह्मा का दिन और रात शास्त्रों में गाई हुई है। विष्णु की रात क्यों नहीं गाई हुई है? विष्णु के दो रूप लक्ष्मी-नारायण को वहाँ यह ज्ञान ही नहीं है। ब्राह्मणों को ही यह मालूम है, इसलिए ब्रह्मा और ब्रह्मा कुमार-कुमारियों के लिए यह बेहद का दिन और रात है। शिवबाबा का दिन और रात नहीं कहेंगे।''

सा.बाबा 18.6.07 रिवा.

''कभी भी किसी देहधारी में लटके तो रोना पड़ेगा। ... किसकी याद में शाक आ जाये और मर जाये तो दुर्गति हो जाये। तुमको याद एक शिवबाबा को ही करना है। ... अगर और किसी की याद बुद्धि में रहेगी तो फिर जन्म लेना पड़ेगा।''

सा.बाबा 18.6.07 रिवा.

''अभी तुम बच्चों को तीनों लोकों का ज्ञान है। ऐसे नहीं कि सिर्फ वर्ल्ड का ज्ञान है। वर्ल्ड से भी आगे मूलवतन, सूक्ष्म वतन, स्थूल वतन तीनों का ज्ञान तुम्हारी बुद्धि में है। ... तीनों कालों का ज्ञान तुम्हारी बुद्धि में है। तुम त्रिकालदर्शी बनते परन्तु तुमको त्रिलोकीनाथ नहीं कहेंगे। त्रिलोकीनाथ कोई नहीं बनता है।''

सा.बाबा 19.6.07 रिवा.

द्वितीय अध्याय (II Chapter)

गीता और स्थापना एवं विनाश

परमात्मा ने गीता ज्ञान नई दुनिया की स्थापना और पुरानी दुनिया के विनाश के लिए दिया था या कहें कि दैवी राज्य की स्थापना और आसुरी राज्य के विनाश के लिए दिया था। तो गीता ज्ञान के बाद या गीता ज्ञान से स्थापना और विनाश का कर्तव्य कैसे होता है, वह सब ज्ञान भी परमात्मा ने दिया है। परमात्मा के इस स्थापना और विनाश के कर्तव्य में हमारा क्या कर्तव्य है, वह भी परमात्मा ने हमको बताया है तथा उससे हमको क्या मिलेगा, वह सब ज्ञान भी परमात्मा ने हमको दिया है, जिससे हम परमात्मा के इस दिव्य कर्तव्य में सहयोगी बनकर वह स्थापना-विनाश का कर्तव्य कर भी रहे हैं और साक्षी होकर देख भी रहे हैं। परमात्मा का ये स्थापना और विनाश का कर्तव्य बड़ा वण्डरफुल है और इसके यथार्थ रहस्य को जानने वाले के लिए वड़ा आनन्दमय है।

गीता और स्थापना

गीता से धर्म-परायण सृष्टि सतयुग की स्थापना कल्प पहले भी हुई थी, जहाँ देवी-देवताओं का राज्य था, जिसको आदि-सनातन देवी-देवता धर्म से जाना जाता है, जो अभी फिर से हो रही है।

''गीता को मनुष्य इतना क्यों पढ़ते हैं? समझते तो कुछ भी नहीं। ... गीता ही पहला नम्बर का शास्त्र है ना। वह है देवी-देवता धर्म का शास्त्र।'' सा.बाबा 9.11.04 रिवा.

''गीता में भी कोई सार नहीं है। भल गीता को सर्व शास्त्रमई शिरोमणी कहते हैं। ... वैसे ही सर्व तीर्थों में श्रेष्ठ तीर्थ आबू है। सारे वर्ल्ड के तीर्थों में यह है सबसे बड़ा तीर्थ, जहाँ बाप बैठ सबकी सद्गति करते हैं। ... तुमको यहाँ बैठे दिल में बड़ी खुशी होनी चाहिए कि हम हेविन की स्थापना कर रहे हैं।'' सा.बाबा 20.9.04 रिवा.

''परमात्मा के लिए मात-पिता का गायन भारत में ही होता है। ... मात-पिता अब दैवी राजधानी स्थापन कर रहे हैं। ... कलियुग के अन्त में राजाई है नहीं। यह है पढ़ाई से राजाई। ... इस पढ़ाई से राजाओं का राजा बनना। एक बाप ही है, जो राजाई पद के लिए राजयोग सिखाते हैं। ... गीता से तो राजाई पद मिलता है। ... जरूर भगवान ने विनाश के पहले पढ़ाया है, उसके बाद ही विनाश हुआ होगा, फिर राजयोग से सतयुग में राज्य पद पाया। यह है संगम।'' सा.बाबा 1.3.07 रिवा.

''गीता में कृष्ण का नाम दे दिया है। दुनिया को पलटाने वाला कृष्ण तो हो नहीं सकता। दुनिया को पलटाने वाले को गॉड कहा जाता है। ... आज वह दिन आया है, जब ग़रीब भारत को बाप से स्वर्ग की बादशाही मिलती है।''
सा.बाबा 2.7.07 रिवा.

गीता और विनाश

गीता ज्ञान से कल्प पहले भी अधर्म का नाश हुआ था और अभी भी हो रहा है या अवश्य होने वाला है, ऐसा प्रत्यक्ष देखने में आता है। उस विनाश की सारी तैयारी हम एटॉमिक वार, सिविल वार, प्राकृतिक आपदाओं के रूप में देख रहे हैं। सभी आत्मायें और जड़ तत्व भी तमोप्रधान हो गये हैं और वे तमोप्रधान तत्व भी अपना कार्य कर रहे हैं अर्थात् विनाश को समीप ला रहे हैं। यदि हम एटॉमिक वार, सिविल वार, प्राकृतिक आपदाओं में से किसी एक के विषय में भी गम्भीरता से विचार करें तो स्पष्ट हो जाता है कि अब ये सृष्टि बहुत समय चलने वाली नहीं है। अभी विनाश का समय है, उसके लिए अन्य धर्मों में भी वर्णन किया गया है।

''गीता है आदि सनातन देवी-देवता धर्म का शास्त्र। यह भी तुम जानते हो कि इस ज्ञान के बाद है विनाश। ... विनाश का टाइम ही यह है। इसलिए तुमको जो ज्ञान मिलता है, वह फिर खलास हो जाता है।''
सा.बाबा 22.12.04 रिवा.

''गीता है सर्वोत्तम धर्म-शास्त्र, जिससे तीन धर्म स्थापन होते हैं।... महिमा भी गीता की ही है, जिससे सबकी सद्गति होती है और सद्गति करने वाला भी एक ही है। गीता में बरोबर रुद्र ज्ञान यज्ञ का भी वर्णन है, जिससे नर्क का विनाश और स्वर्ग की स्थापना होती है।''
सा.बाबा 19.1.07 रिवा.

गीता का आदि और अन्त

गीता की आदि - सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज, अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः। 18-66 अर्थात मन्मनाभव-मध्याजीभव और अन्त - निर्मान मोहा जितसंगदोषा अध्यात्मनित्या विनिवृत्तकामाः। अर्थात् नष्टोमोहा-स्मृति स्वरूप।

प्रचलित गीता में आदि-अन्त के रहस्य का ऐसा वर्णन तो किया गया है परन्तु प्रश्न ये है कि कितने पढ़ने वाले उस स्थिति को प्राप्त कर पाये हैं। अभी परमात्मा पिता ने जो यथार्थ गीता ज्ञान प्रजापिता ब्रह्मा के मुखारबिन्दु से प्रत्यक्ष में दिया है, उस यथार्थ गीता ज्ञान से अनेकानेक आत्मायें देह में रहते देह के सर्व धर्मों को भूलकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर सुर-दुर्लभ, अतीन्द्रिय सुख को अनुभव कर रही हैं और वह अतीन्द्रिय आत्माओं को

इन्द्रिय सुखों से विमुक्त कर नष्टोमोहा-स्मृति स्वरूप बना रहा है, जो गीता ज्ञान फल अर्थात् सार है। यथार्थ गीता ज्ञान से ही आत्मा को मुक्ति-जीवनमुक्ति का परम सुख प्राप्त होता है। प्रचलित गीता में भी लिखा है -

ध्यायतोविषयान् पुंसः सन्गास्तेषूपजायते, सन्गात्संजायते कामः कामात्क्रोधोअभिजायते।
क्रोधाभ्दवति संमोहः संमोहात्स्मृतिविभ्रमः, स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति।
2-62-63

''आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरा शरीर लेकर पार्ट बजाती है, उसमें रोने की कोई दरकार ही नहीं है। परन्तु जब ड्रामा के राज़ को जानें तब ऐसे कहें। अब तुमको यह ज्ञान है। ... फिर बड़े-बड़े कालेजों में जाकर यह नॉलेज दो।'' सा.बाबा 19.7.07 रिवा.

''शिवबाबा ब्रह्मा तन द्वारा हमको पढ़ा रहे हैं। बुद्धि पहले जायेगी अपने शान्तिधाम में, फिर आयेगी यहाँ। ... तो क्या ब्रह्मा नहीं पढ़ा सकते हैं। फिर भी तुम ऐसे ही समझो कि हमको शिवबाबा ही पढ़ाते हैं, न कि ब्रह्मा। इसमें ही तुम्हारा बहुत फायदा है।''

सा.बाबा 13.7.07 रिवा.

गीता ज्ञान से आत्मा को जो अतीन्द्रिय सुख का अनुभव होता है, उससे ही आत्मा काम-वासना, क्रोधादि विकारों और भौतिक कामनाओं से विमुक्त होकर, उन पर विजय प्राप्त करती है। यथार्थ गीता ज्ञान और परमात्मा के द्वारा सिखाया गया राजयोग आत्मा को सभी विकारों पर विजय प्राप्त करने की शक्ति देता है अर्थात् सभी विकारों पर विजय प्राप्त कराता है। विकारों पर विजय प्राप्त करना ही यथार्थ गीता ज्ञान की कसौटी है।

''तुम सन्यासियों से भी पूछ सकते हो कि गीता में जो भगवानुवाच है कि देह सहित देह के सब धर्म छोड़ मामेकम् याद करो। क्या ये कृष्ण कहते हैं - मामेकम् याद करो ? ... वास्तव में एक गीता ही है, जो शिवबाबा ने सुनाई है।'' सा.बाबा 18.9.04 रिवा.

''गीता ज्ञान का पहला पाठ है अशरीरी आत्मा बनो और अन्तिम पाठ है - नष्टोमोहा, स्मृति स्वरूप बनो। ... पहले इस पाठ को स्वयं पढ़ना अर्थात् बनना फिर औरों को निमित्त बन पढ़ाना। ... निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी स्थिति को दुनिया के आगे प्रत्यक्ष रूप में लाओ। इसको कहते हैं बाप समान बनना।'' अ.बापदादा 18.1.87

गीता ज्ञान दाता परमात्मा ने कहा है - बच्चों का काम है बाप को प्रत्यक्ष करना परन्तु बाबा ने ये भी कहा है - गीता ज्ञान सिद्ध होगा तब गीता ज्ञान-दाता सिद्ध होगा।

शिवबाबा के उपर्युक्त महावाक्यों पर विचार करें तो स्पष्ट है कि पहले हमको अपने शब्दों से, जीवन से गीता ज्ञान को सिद्ध करना होगा, तब ही गीता ज्ञानदाता कौन है, वह मनुष्यों की समझ में आयेगा। अब हम अपने जीवन को देखें और विचार करें कि हमारा जीवन गीता ज्ञान का स्वरूप है अर्थात् हम नष्टोमोहा-स्मृति स्वरूप बने हैं?

Q. गीता-ज्ञान की धारणा का स्वरूप क्या है?

गीता-ज्ञान की धारणा का स्वरूप है नष्टोमोहा, स्मृति स्वरूप और जो स्मृति स्वरूप स्थिति में होगा, उसकी हर क्षेत्र में विजय निश्चित है क्योंकि स्मृति स्वरूप आत्मा अपने भी आत्मिक स्वरूप में स्थित होगी और जो अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होगी, उसको परमात्मा की याद अवश्य होगी और जिसको परमात्मा की याद होगी, उसको परमात्मा की मदद भी अवश्य होगी और जिसका सर्वशक्तिवान परमात्मा मददगार है, सर्वशक्तिवान परमात्मा का साथ है, उसकी विजय अवश्य होती है। ये कल्प-कल्प का गायन है और वर्तमान में भी अनुभव ऐसा कहता है।

निश्चित विजय के निश्चय के कारण वह माया के किसी भी रूप या परीक्षा रूप में आई हुई किसी भी परिस्थिति में बिचलित नहीं होगा। माया से युद्ध और विजय ही उसका अभीष्ट लक्ष्य होगा।

गीता ज्ञान की धारणा वाली आत्मा का सर्वात्माओं के साथ स्नेह होगा क्योंकि उसका बीजरूप परमात्मा के साथ सम्बन्ध है, इस विश्व-नाटक के पूर्ण ज्ञाता परमात्मा के साथ सम्बन्ध है, इसलिए सारे सृष्टि-चक्र का ज्ञान उसकी बुद्धि में जाग्रत होगा। जो नष्टोमोहा होगा, उसका कोई अपना-पराया नहीं होगा क्योंकि सारा विश्व ही उसका अपना होता है और सर्व के कल्याण का उसका लक्ष्य होगा है क्योंकि परमात्मा विश्व के कल्याणार्थ ही गीता ज्ञान देते हैं।

वह सदा विश्व के नव-निर्माण के कार्य में परमात्मा पिता का सहयोगी होगा, विश्व नव-निर्माण के कार्य में ही उसकी रुचि होगी।

गीता ज्ञान की धारणा वाला सदा अपने को जीवनमुक्त स्थिति में अनुभव करेगा।

प्रचलित गीता के शब्द हैं - अजोनित्या शाश्वतो अयं हन्यते न हन्यमाने शरीरे ..... स्वधर्मे निधनम् श्रेयष्कर, परधर्म भयावहा

स्वधर्म और परधर्म का राज़ भी बाप ने समझाया है कि परधर्म का आशय हिन्दू-मुस्लिम-सिख-ईसाई .. से नहीं परन्तु स्वधर्म-परधर्म का आशय आत्मा का धर्म और देह के धर्मों से है। देह के धर्मों के वशीभूत आत्मा ही भय का अनुभव करती है। स्वधर्म में स्थित आत्मा किसी भी परिस्थिति में और किसी भी स्थिति में सुख-शानति-आनन्द की अनुभूति

करती है।

''तो लास्ट पेपर क्या देखा ? स्नेह होते हुए भी नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप। यही लास्ट पेपर यादगार में भी गायन रूप में है। ... एक तरफ स्नेह को समाना और दूसरे तरफ रहा हुआ लास्ट का हिसाब-किताब सहन शक्ति से समाप्त करना। ... कर्मभोग को भी समाना और स्नेह को भी समाना।''

अ.बापदादा 18.1.76

गीता और राजयोग एवं विभिन्न योग

प्रचलित गीता में वर्णित योगों पर हम विचार करें तो देखेंगे उसमें राज़योग और सांख्य-योग, कर्म-योग, भक्ति-योग आदि विभिन्न योगों का अंश रूप में वर्णन किया गया है। इन सब पर विचार करने से बुद्धि इस निष्कर्ष पर पहुँचती है कि परमात्मा सर्व आत्माओं का पिता है, इसलिए वह जो योग सिखलाता है और ज्ञान देता है, वह सर्व धर्मों की आत्माओं के कल्याणार्थ देता है और उसमें सर्व प्रकार के योगों का अंश रूप में समावेश होता है। इसलिए परमात्मा जो योग सिखा रहे हैं, उसके विधि-विधान और फल के आधार पर विभन्न नामों से सम्बोधित किया है। जैसे राजयोग, ज्ञानयोग, कर्मयोग आदि-आदि।

बाबा ने जो ज्ञान दिया है, उसमें देश-काल-परिस्थिति के अनुसार सर्व आत्माओं के हित की बात कही है। वह ज्ञान सर्व आत्माओं के लिए है। जैसे मिट्टी में या खाद में सर्व तत्व नीहित रहते हैं और बीज अपने गुण-धर्मों के अनुरूप तत्व उसके अणु-परमाणुओं के रूप में आकर्षित करके उसके अनुरूप फल देते हैं। बाबा ने ये भी कहा है - गीता सर्वशास्त्रों और सर्व धर्मों की माई बाप है क्योंकि सर्वात्माओं के पिता परमात्मा के द्वारा सर्वात्माओं के कल्याणार्थ गाई हुई है। ब्रह्मा को भी ग्रेट-ग्रेट ग्राण्ड फादर कहते हैं क्योंकि निराकार परमात्मा ने सर्वात्माओं के कल्याणार्थ ब्रह्मा तन से गीता का ज्ञान दिया, जिससे सर्वात्माओं को मुक्ति-जीवनमुक्ति मिली और सृष्टि का नया चक्र आरम्भ हुआ।

''गीता में भी है - मैं तुमको सहज राजयोग सिखलाकर श्रेष्ठाचारी महाराजा-महारानी बनाता हूँ। ... पहले-पहले तो यह निश्चय चाहिए कि यह नॉलेज कृष्ण नहीं दे सकते।... मुख्य बात है गीता माता का भगवान कौन, यह राज़ सबको समझाना है।''

सा.बाबा 3.1.07 रिवा.

''कभी भी किसी देहधारी में लटके तो रोना पड़ेगा। ... किसकी याद में शाक आ जाये और मर जाये तो दुर्गति हो जाये। तुमको याद एक शिवबाबा को ही करना है। ... अगर और किसी की याद बुद्धि में रहेगी तो फिर जन्म लेना पड़ेगा।''

सा.बाबा 18.6.07 रिवा.

गीता और विभिन्न धर्म एवं धर्मशास्त्र

गीता सर्व धर्मों और धर्मशास्त्रों की माई-बाप है क्योंकि सभी धर्म आदि-सनातन देवी-देवता धर्म से ही निकले हैं, जिस देवी-देवता धर्म की स्थापना गीता ज्ञान द्वारा हुई। कल्प-वृक्ष के चित्र को अच्छी रीति देखें और विचार करें तो इस बात की सत्यता सहज ही बुद्धि में आ जायेगी। जो भी धर्मपितायें आते हैं वे पहले आदि सनातन देवी देवता धर्म वंश की आत्मा के ही तन में ही प्रवेश करते हैं और उसके द्वारा वे जो भी ज्ञान देते हैं वह उस आत्मा के ज्ञान, कर्म, संस्कारों से प्रभावित अवश्य होता है, जिसमें वे धर्मपितायें प्रवेश करते हैं। वह आत्मा ही पहले उस धर्म के ज्ञान को धारण करने में निमित्त बनती है और आदि सनातन देवी-देवता धर्म रूपी तने से उस धर्म की शाखा निकलती है।

बाबा ने ये भी कहा है कि अन्त में सभी धर्मपितायें भी आकर बाप से ये सन्देश लेंगे, जिसके आधार पर वे द्वापर से आकर अपने धर्मवंश की स्थापना और पालना करेंगे।

गीता में जो विभिन्न प्रकार का ज्ञान अंशरूप में है, उसका कोई न कोई अंश हर धर्म के धर्मशात्र में मिलता ही है अर्थात् जो भी धर्मपितायें आकर ज्ञान देते हैं, वह गीता में किसी न किसी रूप में वर्णन किया ही गया है।

कल्पान्त में जब ज्ञान सागर परमात्मा पिता आकर यथार्थ गीता ज्ञान देते हैं तो विभिन्न धर्मवंशों में कन्वर्ट हुई आत्मायें उसको सुनते ही अपने मूल धर्म में कन्वर्ट हो जाती है अर्थात् वे उस गीता ज्ञान को सहज स्वीकार कर लेती हैं, उसके अनुरूप अपने जीवन में परिवर्तन कर लेती हैं।

''भक्ति मार्ग के शास्त्रों में पहले नम्बर में गीता ही है। ... हर धर्म का धर्म-शास्त्र उसके धर्मपिता के आने के आधा समय बाद ही बनते होंगे। हिसाब किया जाता है ना। ... यहाँ तुमको वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी समझाई जाती है।'' सा.बाबा 22.11.05 रिवा.

क्योंकि हर आत्मा को अपने पार्ट के आधा समय बाद जब दुख आरम्भ होता है, तब ही भक्ति के लिए धर्म शास्त्र आदि बनाना आरम्भ करते हैं।

''शास्त्र वालों को भी बोलो - शास्त्र तो हम भी पढ़ते थे, फिर बाप ने ज्ञान दिया है। ज्ञान से ही सद्गति होती है। भगवानुवाच - वेद-शास्त्र आदि पढ़ने, दान-पुण्य आदि करने से कोई भी मेरे को प्राप्त नहीं करते। मेरे द्वारा ही मेरे को प्राप्त कर सकते हो।''

सा.बाबा 8.12.05 रिवा.

''अभी बाप तुमको सच्ची गीता सुनाते हैं। ... तुम्हारा सारा कनेक्शन है ही गीता के साथ।

गीता में ज्ञान भी है तो योग भी है। ... जो सुनेंगे, वे फिर अपने धर्म में आकर ऊंच पद पायेंगे।''
सा.बाबा 28.3.05 रिवा.

''अपने को आत्मा याद नहीं कर सकते तो बाप को फिर कैसे याद करेंगे। ... मनुष्य गीता आदि भल पढ़ते हैं परन्तु अर्थ कुछ भी नहीं समझते हैं। भारत की है ही मुख्य गीता। हर एक धर्म का अपना-अपना एक धर्मशास्त्र है।''
सा.बाबा 19.6.04 रिवा.

गीता और आदि-सनातन देवी-देवता धर्म

परमात्मा ही आकर गीता ज्ञान देकर आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना करते हैं। आदि सनातन धर्म इस कल्प-वृक्ष का तना है, जिससे ही फिर अन्य धर्म रूपी शाखायें प्रशाखायें निकलती हैं और यह सृष्टि रूपी वृक्ष वृद्धि को पाता है। आदि सनातन देवी-देवता धर्म वंश की आत्मायें ही परमात्मा से प्रत्यक्ष में ये गीता ज्ञान सुनती हैं और उस सुने हुए ज्ञान के आधार पर ही कोई विशेष आत्मा उस गीता ज्ञान का अंशरूप में द्वापर अर्थात् भक्ति मार्ग में वर्णन करती है। परमात्मा से प्रत्यक्ष में आदि सनातन देवी-देवता धर्मवंश की आत्माओं ने ही गीता ज्ञान सुना, इसलिए उस धर्मवंश की आत्मायें ही प्रचलित गीता के ऊपर भी विशेष श्रृद्धा-भावना रखती हैं और उस श्रृद्धा-भावना के आधार पर ही जब ज्ञान सागर बाप आकर गीता ज्ञान देते हैं, तो उसको स्वीकार करती हैं। ब्रह्मा बाबा भी ज्ञान में आने से पहले गीता पढ़ते थे, देवी-देवताओं के प्रति श्रृद्धा-भावना रखते थे। देवी-देवताओं में भी विशेष लक्ष्मी-नारायण के प्रति उनकी विशेष श्रृद्धा-भावना थी।

''ईश्वर खुद आकर आदि सनातन देवी-देवता धर्म अर्थात् स्वर्ग की स्थापना करते हैं, इसका नाम भारत ही चला आता है। गीता में सिर्फ कृष्ण का नाम डाल कितना रोला कर दिया है। यह भी ड्रामा है, हार और जीत का खेल है। इसमें हार-जीत कैसे होती है, यह बाप बिगर कोई बता न सके।''
सा.बाबा 19.7.04 रिवा.

गीता और धर्म एवं राज्य की स्थापना

ईश्वरीय ज्ञान की धार्मिकता और राजनैतिकता

इस ज्ञान को परमात्मा ने Religio-Political Spiritual Knowledge कहा है। क्योंकि अभी परमात्मा आकर जो यह गीता ज्ञान दे रहे हैं, इससे धर्म और राज्य दोनों की

स्थापना होती है। अभी सारे विश्व में प्रजातन्त्र की शासन पद्यति प्रचलित है और सतयुग में राजशाही होती है परन्तु वहाँ राजा-प्रजा में पिता-पुत्र के समान स्नेह होता है। सतयुग में धर्म-सत्ता और राज्य-सत्ता दोनों एक के ही हाथ में होती है, इसलिए इसको रिलीजियो-पोलिटिकल स्प्रीचुअल नॉलेज कहा जाता है। सतयुग में देवी-देवताओं में राज्य करने और धर्म की सर्व कलायें होती हैं इसलिए धर्म-सत्त और राज्य-सत्ता साथ-साथ होती है। द्वापर से आत्मिक शक्ति कम हो जाने के कारण आत्मा पर देहाभिमान प्रभावित हो जाता है, जिससे धर्म-सत्ता और राज्य-सत्ता अलग-अलग हो जाती है। देहाभिमान के कारण राजायें गृहस्थ में होने के कारण विकारी हो जाते हैं और विश्व को थमाने के लिए पवित्रता चाहिए, इसलिए धर्म-सत्ता अलग हो जाती है, जिसमें राजगुरु, सन्यासी, अन्य धर्मों में पादरी, नन्स, बौद्ध-भिक्षु आदि आदि का स्थान बन जाता है। इसीलिए ही बाबा सन्यासियों की महिमा करते हैं और कहते हैं इन सन्यासियों ने ही भारत को थमाया है, नहीं तो भारत और भी काम-चिता पर जल मरता। इस प्रकार हम विचार करें तो परमात्मा जो गीता-ज्ञान देते हैं, उससे धर्म और राज्य दोनों की स्थापना होती है और विश्व में प्रजातन्त्र से बदलकर राजशाही की स्थापना होती है, जो कलियुग के अन्त तक चलती है।

''तुम हो रिलीजियो-पोलिटीकल। तुम जानते हो हम धर्म और राज्य स्थापन कर रहे हैं। ... अभी तुम्हारी बुद्धि में है कि हम हर 5000 वर्ष के बाद राज्य लेते हैं और फिर गंवाते हैं।''

सा.बाबा 6.10.04 रिवा.

''गीता के भगवान ने गीता सुनाई। भगवान एक बार सुनाकर चले जायेंगे। अभी तुम बच्चे गीता के भगवान से वही गीता का ज्ञान सुन रहे हो और राजयोग सीख रहे हो। वे लोग तो लिखी हुई गीता पढ़कर सुनाते हैं। अभी बाप तुमको गीता सुनाते रहते हैं, जब तक तुम राजाई प्राप्त करो।''

सा.बाबा 20.8.04 रिवा.

''गीता धर्म शास्त्र है, जिससे 3 धर्म अभी स्थापन होते हैं, न कि सतयुग में। ... बाप अभी फिर से देवी-देवता धर्म की स्थापना करते हैं। तुम इस ड्रामा के राज़ को अच्छी रीति समझ गये हो।''

सा.बाबा 17.6.06 रिवा.

''गीता का भगवान कौन था, गीता कब सुनाई आदि-आदि ... तुम्हारे सिवाए किसी को भी सन्यासियों आदि से प्रश्न पूछने की हिम्मत नहीं रहती। तुम तो हिम्मत रखते हो। ... जो इस धर्म वाले होंगे, उनको ही यह ज्ञान टच होगा।''

सा.बाबा 16.9.06 रिवा.

''गीता का कनेक्शन महाभारत लड़ाई से है। तुम गीता सुनकर राज्य पाते हो और महाभारत लड़ाई लगती है, सफाई के लिए। ... गीता कितनी छोटी है क्योंकि बाप सुनाते ही हैं एक बात

कि मुझे याद करो तो विकर्म विनाश होंगे और सृष्टि-चक्र को समझो। ... बीज छोटा होता है, उससे झाड़ कितना बड़ा निकलता है।''
सा.बाबा 2.10.06 रिवा.

''एक बाप ही किंगडम स्थापन करते हैं, बाकी सभी धर्म-स्थापक आकर अपना-अपना धर्म स्थापन करते हैं। ... बुद्धि कहती है कि पतित-पावन बाप आयेंगे ही संगमयुग पर जब पतित राज्य का विनाश कराये, पावन राज्य की स्थापना करनी है।''

सा.बाबा 27.7.07 रिवा.

''नर्क के राजा-रानी बनते हैं दान-पुण्य से। स्वर्ग के राजा-रानी बनते हैं इस पढ़ाई से। ... एक-दो को ज्ञान सुनाकर कल्याण करना है। घर में गीता पाठशाला खोलो। चैरिटी बिगिन्स एट होम।''
सा.बाबा 13.7.07 रिवा.

सत्य गीता ज्ञान और प्रचलित गीता ज्ञान का तुलनात्मक अध्ययन

प्रचलित गीता में लिखा है यदा यदाहि ... सृजाम्हम - इससे सिद्ध होता है कि गीता ज्ञान का लक्ष्य अधर्म का नाश करना और धर्म की स्थापना करना है। परमात्मा ने भी कहा है - मैं एक सत् धर्म की स्थापना और अधर्म के नाश करने के लिए गीता ज्ञान देता हूँ।

प्रचलित गीता ज्ञान और परमात्मा के द्वारा दिये गये गीता ज्ञान में क्या सामन्जस्य है और क्या विरोधाभास है, उसको जानना भी अति आवश्यक है, तब ही किसी को गीता के विषय में गीता के विषय में यथार्थ सत्य को बता सकेंगे। यथार्थ गीता ज्ञान कलियुग के अन्त और सतयुग की आदि के पुरुषोत्तम संगमयुग पर दिया गया, जब कि प्रचलित गीता में गीता-ज्ञान का समय द्वापर युग के अन्त का समय लिखा गया है, जो यथार्थ नहीं है क्योंकि द्वापर के बाद तो दुनिया में अधर्म बढ़ गया, धर्म की स्थापना नहीं हुई, जो गीता ज्ञान का अभीष्ट लक्ष्य है। इससे सिद्ध होता है कि प्रचलित गीता के लेखक को ये स्पष्ट नहीं कि गीता ज्ञान कब दिया गया है, इसलिए गीता ज्ञान का समय द्वापर के अन्त में दिखाया गया है। हाँ प्रचलित गीता द्वापर में लिखी गई, जब भक्ति मार्ग में ज्ञान की आवश्यकता हुई।

गीता ज्ञान, ज्ञान सागर निराकार परमात्मा शिव ने ब्रह्मा तन द्वारा दिया, जिसको ही साधारण रूपधारी मनुष्य तन कहा गया है। जिसको ही अर्जुन के रथ की संज्ञा दी गई है क्योंकि देह आत्मा का रथ है। जब कि प्रचलित गीता में गीता ज्ञान दाता श्रीकृष्ण को कहा गया है, जो स्वयं ही माता के गर्भ से जन्में थे और एक दैवी गुण सम्पन्न मनुष्य थे। उनके जन्म और उनके माता-पिता का भी वर्णन है। प्रचलित गीता में गीता ज्ञान अर्जुन को एक रथ में बैठकर

दिया दिखाया गया है। इस प्रकार हम देखें तो रथ एक आध्यात्मिक भाषा का शब्द है, देह के लिए प्रयोग किया जाता है।

मोह के वशीभूत अर्जुन का गीता ज्ञान सुनकर मोह नष्ट हो गया और वह युद्ध के लिए तैयार हो गया परन्तु वह युद्ध कौनसा है, जिसके लिए भगवान ने अर्जुन को प्रेरित किया - यह विचारणीय है। परमात्मा सर्व आत्माओं का मात-पिता है, वह कब किसी हिंसक युद्ध के लिए आत्माओं को प्रेरित नहीं कर सकता। इसलिए यथार्थ गीता ज्ञान किसी हिंसक युद्ध के लिए प्रेरित नहीं करता है, ये एक धर्म-युद्ध है, जो आत्मा को अपने मायावी संस्कारों के साथ करना होता है, जिसके लिए परमात्मा ने आत्माओं को प्रेरित किया। जबकि प्रचलित गीता में हिंसक युद्ध दिखाया गया है।

यद्यपि सत्य गीता ज्ञान जो निराकार परमपिता परमात्मा शिव ने ब्रह्मा तन से दिया, जिससे आत्माओं ने अपने आसुरी संस्कारों पर विजय प्राप्त की और दैवी संस्कारों को धारण किया। उस सत्य गीता ज्ञान के बाद भी एक हिंसक युद्ध हुआ, जिससे पुरानी दुनिया का विनाश हुआ परन्तु उसकी प्रेरणा परमात्मा ने नहीं दी, वह सृष्टि-चक्र के नियमानुसार स्वत: ही होता है।

निराकार ज्ञान सागर परमात्मा शिव ने जो गीता ज्ञान दिया, वह समझने और धारण करने में अति सहज है, जिसको हर आत्मा समझ सकती है परन्तु समझता वही है, जिसका ड्रामा में समझने का पार्ट है। साधारण अनपढ़ मातायें भी उस गीता को समझ कर, उसको पालन कर अपना जीवन बना रही हैं। परमात्मा के द्वारा दिये गीता ज्ञान में कहाँ भी विरोधाभास (Contradiction) नहीं है। जबकि प्रचलित गीता में जो ज्ञान दिया है, वह अति जटिल है, उसमें अनेक प्रकार के विरोधाभास हैं, जिसके कारण अनेक प्रश्न उत्पन्न होते हैं और आत्मायें भ्रमित हो जाती हैं, जिसके कारण गीता ज्ञान से दुनिया का जो उत्थान होना चाहिए, वह नहीं हो पाया है और दुनिया में सतत अधर्म बढ़ता जा रहा है। पूरी गीता को तो एक परमात्मा के परिचय में ही परमात्मा को एक देशवासी अर्थात् परमधामवासी भी कहा गया है तो सर्वव्यापी भी कहा गया है, अब वह क्या है और कैसा है, उसका निर्णय करना प्रचलित गीता पढ़ने वालों के लिए अति कठिन है। ऐसे ही अन्य विषयों अर्थात् आत्मा, विश्व-नाटक आदि के विषय में भी अनेक विरोधाभासी बातें हैं।

निराकार परमात्मा शिव ने जो गीता ज्ञान दिया, वह जन साधारण की भाषा हिन्दी में दिया, जो समझना सहज है। जबकि प्रचलित गीता ज्ञान संस्कृत में लिखा गया है। अब प्रश्न उठता है - परमात्मा ने गीता ज्ञान संस्कृत भाषा में दिया या हिन्दी भाषा में दिया ? यदि संस्कृत

में दिया तो कितने लोगों ने उसको समझा ? जबकि अभी भी सब लोग संस्कृत को नहीं समझ पाते हैं, इसलिए गीता का अनेक भाषाओं में भाषान्तर हुआ है फिर भी यथार्थ सत्य को नहीं समझ पाते हैं। जैसे गीता ज्ञान का अनेक भाषाओं में भाषान्तर हुआ, वैसे संस्कृत पढ़ने वालों की संख्या में वृद्धि क्यों नहीं हुई ? इस प्रकार हम देखें तो सत्य गीता ज्ञान संस्कृत भाषा में नहीं दिया गया और न ही संस्कृत विश्व की आदि भाषा है। आदि भाषा तो देवनागरी ही है।

परमात्मा शिव ने गीता ज्ञान दिया, उससे आत्माओं ने मुक्ति-जीवनमुक्ति का देव-दुर्लभ सुख अनुभव किया और कर रहे हैं तथा नई दुनिया सतयुग की स्थापना हुई, जो हो रही है। प्रचलित गीता ज्ञान का फल क्या हुआ और क्या हो रहा है और क्या होने वाला है, यह प्रचलित गीता पढ़ने वालों के जीवन से और वर्तमान परिस्थितियों से स्पष्ट नहीं होता है।

निराकार परमात्मा शिव के द्वारा दिये गये गीता ज्ञान से अनेक आत्मायें नष्टोमोहा-स्मृतिलब्धा बनी हैं और बनती जा रही हैं। प्रचलित गीता के द्वारा कितनी आत्मायें नष्टोमोहा-स्मृति स्वरूप बनी हैं, यह एक विचारणीय प्रश्न है। परमात्मा ने गीता ज्ञान किसी हिंसक युद्ध क्षेत्र में नहीं दिया अर्थात् ऐसे समय और स्थान पर नहीं दिया, जहाँ हिंसक युद्ध करने के लिए दो सेनायें आतुर खड़ी हों। परमात्मा ने गीता ज्ञान तो एक शान्तिपूर्ण वातावरण में दिया, जबकि प्रचलित गीता में गीता ज्ञान को एक हिंसक युद्ध के मैदान में दिया दिखाया गया है, जहाँ सभी योद्धा हिंसक अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित खड़े हैं।

गीता के मूल शास्त्र महाभारत के पात्रों के जन्म और कार्य-कलापों के विषय में विचार करें तो वे विश्वासनीय प्रतीत नहीं होते हैं। श्रीकृष्ण के जन्म और जीवन कहानी के विषय में विचार करें तो उनका जेल में जन्म होना, जहाँ से उनको दूसरे स्थान पर ले जाना, उनकी बाल-लीला में माखन चुराना, गोपियों के चीर हरण आदि-आदि दिखाया गया है, जो धर्म की स्थापना करने वाले परमात्मा के चरित्रों के अनुरूप प्रतीत नहीं होते हैं और न ही किसी दिव्य पुरुष के चरित्रों के अनुरूप प्रतीत होते हैं।

गीता ज्ञान को द्वापर के अन्त में दिया दिखाया गया है और श्रीकृष्ण को सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण कहा गया है, जबकि उनके पूर्ववर्ती राम जो त्रेतायुग में हुए, उनको 12 कला सम्पूर्ण दिखाया गया है। तो 16 कला सम्पूर्ण व्यक्ति का जन्म 12 कला सम्पूर्ण के बाद कैसे हो सकता है। ये बात सृष्टि-चक्र के नियम और सिद्धान्त के विपरीत प्रतीत होती है क्योंकि सृष्टि के नियमानुसार सर्वोत्तम समय में सर्वोत्तम गुण वाले व्यक्ति का ही जन्म होता है क्योंकि नियमानुसार दुनिया के अच्छे सुख को अच्छा व्यक्ति ही उपभोग कर सकता है। गीता ज्ञान की सत्यता को समझने और उसकी सत्यता को सिद्ध करने के लिए आदि-आदि अनेक

बातें विचारणीय हैं।

सत्य गीता ज्ञान और प्रचलित गीता ज्ञान का तुलनात्मक अध्ययन

सत्य गीता ज्ञान	प्रचलित गीता ज्ञान
गीता ज्ञान दाता ज्ञान सागर पतित-पावन सर्वशक्तिवान निराकार परमपिता परमात्मा शिव।	गीता ज्ञान दाता सर्वगुण सम्पन्न, १६ कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी साकार शरीरधारी श्रीकृष्ण।
गीता ज्ञान कल्पान्त अर्थात् कलियुग के अन्त और सतयुग की आदि के पुरुषोत्तम संगमयुग में दिया गया।	गीता ज्ञान द्वापर अन्त और कलियुग आदि के संगमयुग पर दिया गया।
गीता ज्ञान देवनागरी अर्थात् हिन्दी भाषा में दिया गया।	गीता ज्ञान संस्कृत भाषा में दिया गया।
गीता ज्ञान साकार मनुष्य तनधारी ब्रह्मा के साकार तन द्वारा दिया गया।	गीता ज्ञान अर्जुन के घोड़ा-गाड़ी के रथ में साकार तनधारी श्रीकृष्ण ने दिया गया।
गीता ज्ञान सर्वात्माओं के कल्याणार्थ दिया गया।	गीता अर्जुन के प्रति दिया गया।
गीता ज्ञान सुनने के बाद ब्रह्मा और ब्रह्मा-वत्सों अर्थात् पाण्डवों ने अहिंसा का पालन किया।	गीता ज्ञान सुनने के बाद अर्जुन और पाण्डवों ने हिंसक युद्ध किया।
गीता ज्ञान देने के बाद अधर्म के युग कलियुग का विनाश हुआ और धर्म का युग सतयुग आया।	गीता ज्ञान देने के बाद अधर्म का युग कलियुग आया।
गीता ज्ञान सुनने के बाद सर्वात्माओं को गति-सद्गति प्राप्त हुई।	कोई यथार्थ वर्णन नहीं कि पाण्डवों का क्या हुआ और यादवों और कौरवों का क्या हुआ तथा उनके परिवारों काक्या हुआ।

गीता ज्ञान के द्वारा आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना हुई।	प्रचलित गीता ज्ञान के बाद क्या हुआ, कुछ भी स्पष्ट नहीं।
परमात्मा के द्वारा दिया गया गीता ज्ञान बिल्कुल स्पष्ट है, उसमें कोई विरोधाभास नहीं।	अनेक प्रकार के विरोधाभास हैं। यथा - परमात्मा परमधाम का वासी और परमात्मा सर्वव्यापी।
गीता ज्ञान शान्तिपूर्ण वातावरण में दिया गया।	गीता ज्ञान युद्ध के मैदान में दिया गया।
गीता ज्ञान कल्पान्त में ब्रह्मा वत्सों ने सुना और उसकी संचित स्मृति के आधार पर किसी ब्रह्मा वत्स ने दो युगों के बाद भक्ति मार्ग में लिखी।	गीता व्यास ने लिखी।

प्रचलित गीता में सत्य

भगवानुवाच - गीता में ज्ञान आटे में नमक के बराबर सत्य है। तो वह सत्य क्या है?

प्रचलित गीता में भी कुछ महावाक्य ऐसे हैं जो सत्य हैं परन्तु मनुष्य उनको समझने में असमर्थ हैं या उनको पालन करने में असमर्थ हैं। जैसे -

नष्टोमोहा स्मृतिर्लब्धः त्वत्प्रसादान्मयाच्युत, स्थतोअस्मि गतसन्देहः करिष्ये वचने तव।
18-73

श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात्, स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मोभयावहः।
3-35 तथा 18-47

इदं शरीरं कौन्तेय क्षेत्रमित्यभिधीयते, एतद्यो वेत्ति तं प्राहुः क्षेत्रज्ञ इति तद्विदः। 13-1

न जायते म्रियते वा कदाचिन्नायं भूत्वा भविता वा न भूयः,
अजो नित्यः शाश्वतोअयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे। 2-20

न तद्भासयते सूर्यो न शशांको न पावकः, यद्गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम। 15-6

सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज, अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः।
18-66

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन, मा कर्म फलहेतुर्भुर्मा ते सन्गोगस्त्वकर्माणि।
2-47
यदक्षरं वेदविदो वदन्ति विशन्ति यद्यतयो वीतरागा:, यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्य चरन्ति तत्ते पदे संग्रहेण प्रवक्ष्ये। 8-11
विविधं नरकस्येदे द्वारं नाशनमात्मन:, काम: क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयंत्यजेत्।
16-21
ध्यायतोविषयान् पुंस: सन्गास्तेषूपजायते, सन्गात्संजायते काम: कामात्क्रोधोअभिजायते।
क्रोधाभ्दवति संमोह: संमोहात्स्मृतिविभ्रम:, स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति।
2-62-63
योगयुक्तो विशुद्धात्मा विजितात्मा जितेन्द्रिय:, सर्वभूतात्मभूतात्मा कुर्वन्नपि न लिप्यते।
5-7
दैवी संपद्विमोक्षाय निबन्धायासुरी मता, मा शुच: संपदं दैवीमभिजातोअसि पाण्डव।
निर्मान मोहा जितसंगदोषा अध्यात्मनित्या विनिवृत्तकामा:।
''बाप कहते हैं - काम विकार तुम्हारा महाशत्रु है। आगे भी यह गीता का ज्ञान सुना था तब यह सभी बातें समझ में नहीं आती थीं। अभी बाप डायरेक्ट गीता सुनाते हैं, तो ये सब समझ में आता है। अभी बाप ने तुम बच्चों को दिव्य-बुद्धि दी है।''

सा.बाबा 20.12.04 रिवा.

गीता और गीता के महापात्र अर्जुन एवं अन्य पात्र

गीता ज्ञान भगवान ने अर्जुन को सुनाया। अब प्रश्न उठता कि अर्जुन कौन है, जिसके रथ में भगवान ने आकर गीता ज्ञान सुनाया और अर्जुन ने गीता ज्ञान को धारण कर क्या किया, उसका भविष्य क्या हुआ। भगवान ने धर्म की स्थापनार्थ गीता ज्ञान सुनाया, भगवान को ही सृष्टि का रचता कहा जाता है, ब्रह्मा को भी सृष्टि का रचता कहा जाता है। तो गीता के भगवान, नई सृष्टि रचने वाले भगवान और सृष्टि रचता ब्रह्मा का परस्पर क्या सम्बन्ध है।

इस सबकी वास्तविकता पर विचार करें तो ब्रह्मा ही अर्जुन है, जिसके देह रूपी रथ में आकर निराकार परमात्मा ने आकर गीता ज्ञान सुनाया और निराकार ने ब्रह्मा के साकार तन द्वारा नई सृष्टि अर्थात् नये सृष्टि-चक्र का आदि किया क्योंकि सृष्टि तो अनादि-अविनाशी है, उसकी रचना का तो कोई प्रश्न ही नहीं उठता है। नये सृष्टि-चक्र के आदि के साथ ही पुराने चक्र का अन्त हो गया। ब्रह्मा ही अगले जन्म में सतयुग का प्रथम राजकुमार श्रीकृष्ण बना।

गीता के महापात्र अर्जुन एवं अन्य मुख्य पात्रों के जन्म, उनके जीवन वृतान्त के विषय में गम्भीरता से विचारकरें तो वे कोई ऐतिहासिक पुरुष नहीं प्रतीत होते हैं। वे प्रतीकात्मक प्रतीत होते हैं।

''गीता में भी है ना - अर्जुन को भी साक्षात्कार कराया।... बाप है ज्ञान का सागर, हमको तो वही बतायेगा ना। गीता है माई-बाप। ... वास्तव में आत्मा शरीर से अलग है परन्तु आधा कल्प देहाभिमानी रहे हैं। बाप अभी देही-अभिमानी बनाते हैं तो मुश्किल भासता है।''

सा.बाबा 17.6.04 रिवा.

''अभी तुम जानते हो बाप कैसे आते हैं, कहाँ रहते हैं, कैसे आकर राजयोग सिखलाते हैं। दिखाते हैं - भगवान ने अर्जुन के रथ पर बैठकर ज्ञान दिया।... अभी वह स्वयं अपना परिचय देते हैं।''

सा.बाबा 9.6.04 रिवा

गीता तथा अन्य धर्म-शास्त्रों में वर्णित परमात्मा के अवतरण के उद्देश्य

भारत में गीता तथा अन्य धर्मशास्त्रों में भिन्न-भिन्न शब्दों में वर्णन किया गया है कि परमात्मा अधर्म का नाश और धर्म की स्थापनार्थ अवतरित होते हैं, परमात्मा आकर पतितों को पावन बनाते हैं, परमात्मा आकर रावण राज्य को खत्म करके रामराज्य की स्थापना करते हैं आदि-आदि। दूसरे धर्मों में भी वर्णन किया गया है कि परमात्मा कयामत के समय आकर सर्वात्माओं के हिसाब-किताब पूरे करके, सर्वात्माओं को घर वापस ली जाते हैं। परन्तु प्रचलित गीता पर विचार करें तो गीता ज्ञान होते भी निरन्तर सृष्टि में मनुष्यात्माओं की वृद्धि हुई है, अधर्म बढ़ा है। ये सब कार्य निराकार परमात्मा के कल्पान्त में आने पर उनके द्वारा दिये गये गीता ज्ञान से सिद्ध होते हैं, जो अभी देखने में आ रहा है कि कैसे पुरानी दुनिया के विनाश की तैयारियां हो रही हैं और गीता ज्ञान द्वारा नयी सृष्टि के आत्मायें अपने संस्कारों को बदल रही हैं। आत्माओं के अनेक जन्मों के हिसाब-किताब पूरे भी हो रहे हैं और पूरे होने वाले भी हैं। गीता-महाभारत में वर्णित दृश्य के अनुसार आत्मायें मच्छरों सदृश्य उड़कर घर वापस जाने वाली हैं।

अन्य धर्मों में भी परमात्मा को लिब्रेटर, गाइड आदि के रुप में याद किया गया है। मुसलमान धर्म में भी कहा गया कि खुदा कयामत के समय आकर रूहों को जगाता है तो जरूर वह समय कल्पान्त का ही होगा, कल्प के बीच में नहीं हो सकता है, जो अभी हो रहा है और होने वाला भी है।

परमात्मा का अवतरण

गीता और प्रजापिता ब्रह्मा का सम्बन्ध

परमात्मा के अवतरण के विषय में विभिन्न धर्मों और धर्म-शास्त्रों में वर्णन तो है परन्तु उनका अवतरण कैसे होता है, इस सत्य का विवेकसंगत ज्ञान कहाँ भी नहीं मिलता है, जिसको परमात्मा ने स्वयं ही आकर बताया है। गीता में भी है कि मैं अपना परिचय और आने का विधि-विधान स्वयं ही आकर बताता हूँ। अभी जो परमात्मा ने गीता ज्ञान दिया है, उससे ये सब बातें स्पष्ट हो गई हैं।

परमात्मा ने जो गीता ज्ञान दिया है, उससे प्रजापिता ब्रह्मा के विषय में स्पष्ट किया है। गीता ज्ञान से प्रजापिता ब्रह्मा का क्या सम्बन्ध है, वह भी बताया है।

''उनको जरूर पहले सूक्ष्मवतन रचना पड़े क्योंकि ब्रह्मा तो जरूर चाहिए।... यह व्यक्त ब्रह्मा ही फिर अव्यक्त बनता है। तुम भी व्यक्त ब्रह्मा की औलाद फिर अव्यक्त औलाद बनते हो। ये बड़ी गुह्य बातें हैं।'' सा.बाबा 26.6.07 रिवा.

Q. शिवबाबा ब्रह्मा में प्रवेश होने से पहले सूक्ष्म वतन कैसे रचते हैं? क्योंकि शिवबाबा कहते - बिना शरीर के आत्मा कोई कर्म नहीं कर सकती।

''सब कहते हैं - निराकार परमात्माये नमः। ... ब्रह्मा देवतायें नमः कहते हैं। ब्रह्मा का नाम लेकर ऐसा कभी नहीं कहेंगे - ब्रह्मा परमात्माये नमः। परमात्मा एक निराकार को ही कहा जाता है।... भल मैं भी इस देह द्वारा सुनाता हूँ परनतु तुमको याद मुझ निराकार को ही करना है।'' सा.बाबा 18.6.07 रिवा.

''आधाकल्प भक्ति है ब्रह्मा की रात और आधा कल्प ब्रह्मा का दिन। ... ब्रह्मा का दिन और रात शास्त्रों में गाई हुई है। विष्णु की रात क्यों नहीं गाई हुई है? विष्णु के दो रूप लक्ष्मी-नारायण को वहाँ यह ज्ञान ही नहीं है। ब्राह्मणों को ही यह मालूम है, इसलिए ब्रह्मा और ब्रह्मा कुमार-कुमारियों के लिए यह बेहद का दिन और रात है। शिवबाबा का दिन और रात नहीं कहेंगे।'' सा.बाबा 18.6.07 रिवा.

Q. निराकार परमात्मा साकार तन में आये तो उसको परमात्मा कहेंगे?

उनको प्रजापिता कहेंगे, बापदादा कहेंगे परन्तु परमात्मा नहीं कहेंगे। यदि उनको परमात्मा समझ याद करते तो देह तो विनाशी है, इसलिए बुद्धियोग कभी स्थिर नहीं हो सकता, इसलिए किसी देहधारी को परमात्मा नहीं कह सकते।

''भारत का ही प्राचीन सहज राजयोग गाया हुआ है। गीता में भी राजयोग नाम आता है। बाप

तुम्हें राजयोग सिखलाकर राजाई का वर्सा देते हैं। ... पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही प्रजापिता ब्रह्मा होना चाहिए। ... बाप ही इन चित्रों को इस रथ में आकर करेक्ट करते हैं।''

सा.बाबा 30.6.04 रिवा.

''गायन भी है - यदा यदाहि... सृजाम्यहं। यह भारत की बात है। ... गीता पाठी श्लोक पढ़ते हैंपरन्तु कहते हैं हमको पता नहीं।''

सा.बाबा 2.7.04 रिवा.

''भक्त तो सिर्फ शास्त्रों की कहानियां पढ़ते-सुनते रहते हैं। बाप कहते हैं - तुम जो गीता आधाकल्प से पढ़ते सुनते आये हो, उससे कुछ प्राप्ति हुई ? पेट तो कुछ भी भरा नहीं। अभी तुम्हारा पेट भर रहा है। तुम जानते हो यह पार्ट एक ही बार चलता है।... बाप सम्मुख सुनाते हैं। यह ब्रह्मा भी कुछ नहीं जानते थे। अभी जानते जाते हैं। बाकी गंगा का पानी पावन करने वाला नहीं है, यह है ज्ञान की बात।''

सा.बाबा 6.5.04 रिवा.

गीता और भारत

गीता और महाभारत का गहरा सम्बन्ध है और प्रचलित गीता में जो वर्णन है कि गीता ज्ञान सुनकर मुख्य अर्जुन तथा पाण्डव-कौरवों में जो युद्ध हुआ, उसका नाम महाभारत रखा गया है परन्तु उसको महाभारत क्यों कहा गया है, उसका क्या रहस्य है। वास्तव में गीता ज्ञान सुनने से भारतवासी अर्थात् देवी-देवता धर्म की आत्मायें महान बनती हैं, जिससे स्वर्ग की स्थापना होती है और एटॉमिक वार, प्राकृतिक आपदाओं तथा गृहयुद्ध के द्वारा पुरानी दुनिया का विनाश होता है, जिसके बाद भारत महान बनता है। भारत को अपना कल्प पहले वाला गौरव प्राप्त होता है। सारा विश्व ही भारत हो जाता है, जिसका राजनैतिक केन्द्र-बिन्दु वर्तमान भारत होता है। इस प्रकार हम विचार करते हैं तो गीता ज्ञान और महाभारत युद्ध अर्थात् एटॉमिक वार और गृहयुद्ध के बाद भारत महान बनेगा। भारत ही स्वर्ग था और भारत ही स्वर्ग बनेगा। भारत के इतिहास और भारत की संस्कृति को हम देखें तो उसके कण-कण में गीता ज्ञान की सुगन्ध आती है। भारत के बच्चे-बच्चे में आत्मा के विषय में निश्चय, परमात्मा पर श्रृद्धा-विश्वास, आत्म-कल्याण की इच्छा देखने में आती है। भारत के विषय में परमात्मा के भी महावाक्य हैं -

''भारतवासियों को ही राजयोग सिखलाना है। भारत ही स्वर्ग था, जहाँ इन देवी-देवताओं का राज्य था। ... यह वही महाभारत लड़ाई है, जो गीता में गाई हुई है। गीता का भगवान आया था और गीता सुनाई थी।''

सा.बाबा 29.3.05 रिवा.

''कल्प-कल्प हम कितना वारी इस भारत में आये होंगे, तुम यह नई बातें सुनकर वण्डर खाते हो। ... बाप कहते हैं - पुरानी दुनिया को नया बनाना मेरा ही पार्ट है।''

सा.बाबा 19.3.04 रिवा.

''तमोप्रधान भी भारतवासी ही बने हैं और सतोप्रधान भी वे ही बनेंगे। और कोई को सतोप्रधान कह नहीं सकते। सतयुग में और कोई धर्म होता ही नहीं।'' सा.बाबा 20.3.04 रिवा.

''भारत सच-खण्ड था जब इन लक्ष्मी-नारायण का राज्य था, उस समय और कोई खण्ड नहीं था। ... मनुष्य यह नहीं जानते कि स्वर्ग कहाँ है?'' सा.बाबा 22.3.04 रिवा.

''तुम बच्चे जानते हो - पहले-पहले यह भारत बहुत भरपूर खण्ड था, अब खाली होने के कारण हिन्दुस्तान नाम रख दिया है। पहले भारत धन-दौलत, पवित्रता, सुख-शान्ति सबसे भरपूर था।'' सा.बाबा 23.3.04 रिवा.

''हमारे धर्म के और-और धर्मों में जाकर पड़े हैं, वे सब लौटेंगे। फिर भी अपने भारत में ही आयेंगे। भारतवासी ही थे ना। जो हमारी डाल के हैं, वे सब आ जायेंगे। ... भारत है फर्स्टक्लास भूमि। भारत में ही नई दुनिया थी। इस समय इसको वाइसलेस वर्ल्ड नहीं कह सकते। यह है विशश वर्ल्ड।'' सा.बाबा 25.3.04 रिवा.

''परमात्मा को सर्वव्यापी मानना बड़ी भारी भूल है। गीता का भगवान कृष्ण नहीं, परमपिता परमात्मा शिव है। इन भूलों के कारण ही भारत पावन से पतित बना है।''

सा.बाबा 10.8.04 रिवा.

''भारत का प्राचीन राज़योग गाया हुआ है। चाहते भी हैं भारत का प्राचीन योग सीखें, जिससे पैराडाइज़ स्थापन हुआ था। कहते भी हैं - क्राइस्ट से इतने वर्ष पहले पैराडाइज़ था। ... ऊंच से ऊंच है बृहस्पति की दशा।... बृहस्पति की दशा से सालवेन्ट बनते हैं। भारत कितना सालवेन्ट था। सारे विश्व में एक ही पवित्र राज्य होता है, जिसकी महिमा होती है।''

सा.बाबा 1.4.04 रिवा.

''भारत जितना नम्बरवन में था उतना और कोई खण्ड नहीं होता। भारत की बहुत महिमा है। भारत सब धर्म वालों का बहुत बड़े से बड़ा तीर्थ है। परन्तु ड्रामा अनुसार गीता को खण्डन कर दिया है। भारत और सारी दुनिया की भूल है। भारत में ही गीता को खण्डन किया है, जिस गीता के ज्ञान से बाप नई दुनिया बनाते हैं और सर्व की सद्गति करते हैं। भारत सबसे ऊंच और बहुत धनवान खण्ड था, जो अभी फिर से बन रहा है। भारत पर अभी बृहस्पति की दशा बैठी है।'' सा.बाबा 20.5.04 रिवा.

महाभारत अर्थात् विनाश के बाद भारत का भौगोलिक स्वरूप क्या होगा, कितने

मनुष्य बचेंगे, कितने क्षेत्र में जनसंख्या बचेगी और फिर कैसे और कहाँ तक और कब तक भारत से सभ्यता और जनसंख्या का विस्तार होगा फिर कैसे सीमाओं का संकुचन होते-होते वर्तमान भारत का स्वरूप बनेगा। ये सब बड़ी रुचिकर कहानी है, जो परमात्मा ने अभी गीता ज्ञान के रूप में सुनाई है।

गीता-ज्ञान से विश्व की सर्वात्माओं को मुक्ति-जीवनमुक्ति मिलती है और उस गीता ज्ञान को देने वाला परमात्मा शिव भारत में ही आते हैं, इसलिए भारत सर्व धर्म की आत्माओं के लिए बड़ा तीर्थ है।

''बाप गरीब निवाज़ है। भारत सबसे गरीब है। मैं आता भी भारत में हूँ, इनको आकर साहूकार बनाता हूँ। भारत की महिमा बहुत भारी है। यह सबसे बड़ा तीर्थ है। भारत बहुत साहूकार था, अब गरीब बना है। ... यह भारत है सबसे प्राचीन। भारत ही हेविन था। ... बाप को भी भारत में ही आना है।'' सा.बाबा 22.4.04 रिवा.

''बोर्ड बनाकर प्रश्न लिखो - गीता का भगवान कौन ?... गीता का भगवान सिद्ध हो जाये तो सर्वव्यापी की बात भी निकल जाये। ... गीता में अगर परमपिता परमात्मा का नाम होता तो सब कुछ समझ जाते। परमपिता परमात्मा ही सर्व का सद्गतिदाता है, उनकी शिव जयन्ति भी भारत में ही मनाते हैं। वास्तव में भारत तो सबसे बड़ा तीर्थ है।''

सा.बाबा 26.7.07 रिवा.

''तुम पर अभी बृहस्पति की दशा है। भारत पर ही दशा आती है। अभी राहू की दशा है, बाप वृक्षपति आते हैं तो जरूर भारत पर बृहस्पति की दशा बैठेगी।... लिखा हुआ है - हे बच्चो, देह सहित देह के सब धर्म छोड़ मामेकम् याद करो। यह गीता के अक्षर हैं। यह गीता एपीसोड चल रहा है।'' सा.बाबा 15.7.04 रिवा.

''भारत जैसा सालवेन्ट और कोई देश नहीं है। इन जैसा तीर्थ और कोई बन नहीं सकता। ... वे कहते हैं - कृष्ण भगवानुवाच और बाप कहते हैं शिव भगवानुवाच। भारतवासियों ने नाम बदल लिया तो सारी दुनिया ने बदल लिया। कृष्ण तो देहधारी है, विदेही तो एक शिवबाबा ही है।'' सा.बाबा 16.6.04 रिवा.

''भारत अमरलोक, स्वर्ग था। देवी-देवताओं का राज्य था। यह लक्ष्मी-नारायण विश्व के मालिक थे ना। ... अनेक बार सुना भी है - भगवानुवाच क्योंकि गीता ही भारतवासियों का धर्मशास्त्र है। गीता की तो अपरमअपार महिमा है। सर्वशास्त्र शिरोमणि भगवत गीता है। ... भारतवासी भी अर्थ को समझते नहीं हैं। ... बाप को भी भूल जाते हैं, तो घर को भी भूल जाते हैं। जो बाप भारत को सारे विश्व का राज़य देते हैं, उनको सब भूल जाते हैं। यह सब राज़ बाप

ही समझाते हैं।'' सा.बाबा 6.5.04 रिवा.

Q. क्या भारत या विश्व प्रजातन्त्र में सुखी-शान्त रह सकता है?

नहीं, क्योंकि परमपिता परमात्मा ने कल्प की आदि में विश्व में राजाई की स्थापना की थी, जहाँ धर्म-सत्ता और राज्य-सत्ता एक के ही हाथ में थी और उस राजशाही में ही ये विश्व स्वर्ग था, सुख-शान्ति-सम्पन्नता का साम्राज्य था। राजा और प्रजा में पिता-पुत्र जैसा सम्बन्ध था। प्रजातन्त्र तो कलियुग की राज-व्यवस्था है।

''भारत का प्राचीन योग नामीग्रामी है, जिस योगबल से तुम यह लक्ष्मी-नारायण बनते हो। ... बेहद की बादशाही बाप से मिलती है। शिव जयन्ति बाप की मनाते हैं। जरूर शिवबाबा भारत में आकर विश्व का मालिक बनाकर गये हैं।'' सा.बाबा 7.4.04 रिवा.

''यह भारत के लिए ही योग है। बाप आते भी भारत में हैं। भारतवासियों को ही याद की यात्रा सिखलाकर पावन बनाते हैं और नॉलेज भी देते हैं कि यह सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है, यह भी बच्चे जानते हैं।'' सा.बाबा 8.4.04 रिवा.

Q. स्वर्ग भारत में ही होता है, इसका अर्थ क्या है?

जब दुनिया में स्वर्ग होता है तब विश्व में धर्म और देश के आधार पर कोई विभाजन नहीं होता है, कोई सीमा का बन्धन नहीं होता है, इसलिए सारी दुनिया ही एक होती है और सारे विश्व का राज्य एक चक्रवर्ती राजा के अधीन होता है, जिसकी राज़धानी इन्द्रप्रस्त अर्थात् वर्तमान दिल्ली या उसके आसपास होती है, जो वर्तमान भारत में है। इस प्रकार हम यथार्थता को देखें तो जब भारत स्वर्ग होता है तो सारा ही विश्व स्वर्ग होता है अर्थात् जब विश्व में स्वर्ग होता है तो सारा ही विश्व भारत होता है।

''बाप ने समझाया है - यह है भारत के लिए कहानी। क्या कहानी है? सुबह को अमीर हैं, शाम को फकीर हैं। फकीर और अमीर की बातें तुम बच्चे संगमयुग पर ही सुनते हो। बरोबर भक्ति फकीर बनाती है, ज्ञान अमीर बनाता है। ... अभी एक बाप से ही तुम्हारे सर्व सम्बन्ध हैं, दूसरे कोई से भी बुद्धियोग नहीं है। ... हाईएस्ट बाप बच्चों को एडॉप्ट करते हैं। जीते जी गोद में जाना वर्सा पाने के लिए, सो अभी ही होता है। ... अभी तुमको ज्ञान मिला है तब तुम सब कुछ जानते हो।'' सा.बाबा 21.4.04 रिवा.

''भारत में रक्त की नदियाँ बहेंगी, फिर भारत में ही दूध की नदियाँ बहेंगी। अन्त में सब आपस में लड़ मरेंगे।'' सा.बाबा 23.4.04 रिवा.

''अब तुम समझते हो - भगवान फिर से गीता का ज्ञान सुना रहे हैं और भारत का प्राचीन योग भी सिखा रहे हैं। बाप ने कहा है - काम महाशत्रु है, इस पर जीत पाने से तुम जगतजीत बनते

हो।'' सा.बाबा 24.4.04 रिवा.

''शिव भगवानुवाच - मैं तब आता हूँ जब भारत में अति धर्म ग्लानि होती है। ... देवी-देवता धर्म वालों को ही टच होगा। भारत की ही बात है। ... जो अच्छा पढ़ते हैं, वे अच्छा पद पाते हैं। मुख्य है ज्ञान-योग।'' सा.बाबा 24.4.04 रिवा.

''बाप कहते हैं मैं आता ही तब हूँ जब खास भारत में धर्म-ग्लानि होती है। दूसरी जगह तो किसको पता ही नहीं है कि निराकार परमात्मा क्या चीज है। ... बाप कहते हैं - यदा यदाहि ... बाबा भारत में आते हैं। ऐसे तो नहीं कहते कि मैं हिन्दुस्तान में आता हूँ। यह है भारत।'' सा.बाबा 26.4.04 रिवा.

''बाप कहते हैं - यह विषय वैतरणी नदी रौरव नरक है। यह खास भारत को कहेंगे। बृहस्पति की दशा भी भारत पर बैठी है, वृक्षपति भी भारतवासियों को ही पढ़ाते हैं। ... अब मैं वृक्षपति आया हूँ भारत पर बृहस्पति की दशा बिठाने। सतयुग में बृहस्पति की दशा भारत पर थी, अब है राहू की दशा।'' सा.बाबा 30.4.04 रिवा.

''भारत में आज से 5 हजार वर्ष पहले तुम पहले सूर्यवंशी देवी-देवता थे। बरोबर भारत स्वर्ग था। ... भारत श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ था। रावण राज्य ने भारत की महिमा ही खलास कर दी है। भारत की महिमा बहुत है, तो निन्दा भी बहुत है। भारत बिल्कुल धनवान था, अब बिल्कुल कंगाल बना है।'' सा.बाबा 1.5.04 रिवा.

''भारत अमरलोक, स्वर्ग था। देवी-देवताओं का राज्य था। यह लक्ष्मी-नारायण विश्व के मालिक थे ना! ... अनेक बार सुना भी है - भगवानुवाच क्योंकि गीता ही भारतवासियों का धर्मशास्त्र है। गीता की तो अपरमअपार महिमा है। सर्वशास्त्र शिरोमणि भगवत गीता है। ... भारतवासी भी अर्थ को समझते नहीं हैं। ... बाप को भी भूल जाते हैं, तो घर को भी भूल जाते हैं। जो बाप भारत को सारे विश्व का राज़य देते हैं, उनको सब भूल जाते हैं। यह सब राज़ बाप ही समझाते हैं।'' सा.बाबा 6.5.04 रिवा.

''मनुष्य ईश्वर के लिए भी झूठ बोलते हैं, इसलिए ही भारत कंगाल बना है। ... यह ड्रामा में हार-जीत, भूल-भुलैया का खेल है। ... गीता का नाम तो बहुत चला आता है। बाप कहते हैं - गीता का भगवान मैं हूँ, न कि श्रीकृष्ण।'' सा.बाबा 28.6.07 रिवा.

''यह सारा खेल भारत पर ही बना हुआ है। भारत ही अविनाशी खण्ड है, उसमें ही सुख-दुख, स्वर्ग-नर्क का वर्सा होता है। गीता में है भगवानुवाच। तो गीता है सबकी माई-बाप क्योंकि उनसे ही सबको सद्गति मिलती है। बाप सबका दुखहर्ता-सुखकर्ता है। भारत उनका बर्थ-प्लेस है। भारत सबका तीर्थ स्थान है।'' सा.बाबा 18.6.07 रिवा.

गीता ज्ञान, भारत और विश्व की रिलीजियो-पॉलीटिकल एण्ड स्प्रीचुअल हिस्ट्री-जॉग्राफी

(Religeo-Political History-Geography and Spiritual Knowledge of the World)

परमात्मा ने अभी जो गीता ज्ञान दिया है, उस पर विचार करें तो परमात्मा ने जीवन के हर क्षेत्र का ज्ञान दिया है। प्रचलित गीता और वर्तमान में परमात्मा पिता ने जो यथार्थ गीता ज्ञान दिया है, उस पर विचार करें तो हम देखते हैं कि परमात्मा ने सिर्फ आध्यात्मिक ज्ञान दिया है लेकिन आध्यात्मिक ज्ञान के साथ जीवन के हर क्षेत्र और विश्व के सारे कल्प के इतिहास और सारे कल्प में समय-समय पर होने वाली भौगोलिक परिवर्तनों और परिस्थितियों, उनके कारणों आदि का भी ज्ञान दिया है और सारे विश्व का इतिहास-भूगोल भारत के आसपास ही घूमता है अर्थात् भारत का उसमें विशिष्ट स्थान है। भारत भूमि ही आध्यात्मिकता की जननी हैं क्योंकि आध्यात्मिक ज्ञान के मूल स्रोत परमपिता परमात्मा का अवतरण भारत में ही होता है, जहाँ से वे ज्ञान की गंगा बहाते हैं, जो सारे विश्व की आत्माओं को पावन करती है। इसलिए प्रचलित गीता में भी गीता के भगवान ने अर्जुन को 'हे भारत' कहकर भी सम्बोधित किया है।

भारत और भारतवासी जब पावन बनते तो सारा विश्व पावन बन जाता है और विश्व के भूगोल में आमूल परिवर्तन होता है। आत्मायें भी सतोप्रधान बनती हैं, तो उनके लिए प्रकृति भी सतोप्रधान बन जाती है और सारा विश्व स्वर्ग बन जाता है। जब भारतवासी देहाभिमानी बनते और देहाभिमान के वशीभूत पतित-विकारी बनते तो भी सारे विश्व के भूगोल में आमूल परिवर्तन होता है और प्रकृति रजोप्रधान बन जाती, जिसके कारण वह आत्माओं को उनके कर्मानुसार दुख और सुख दोनों देती है। इतिहास में भी सतयुग-त्रेता में विश्व जो स्वर्ग था, जहाँ देवी-देवतायें राज्य करते थे, वह स्वर्गिक विश्व नर्क बन जाता है और धीरे-धीरे रौरव नर्क की ओर अग्रसर होता जाता है। विश्व में पवित्रता को थमाने के लिए विभिन्न धर्मवंश स्थापन होते हैं परन्तु देहाभिमान के कारण सब में परस्पर भेदभाव, ईर्ष्या-द्वेष आदि पैदा हो जाता है, जो उत्तरोत्तर वृद्धि को पाता रहता है।

''तुम बच्चों को स्कूलों में जाकर समझाना है - तुम्हारी है हद की हिस्ट्री-जॉग्राफी, इसको वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी नहीं कहेंगे।... यह है बेहद की हिस्ट्री-जॉग्राफी। इसमें तीनों लोकों और तीनों कालों का ज्ञान आ जाता है।'' सा.बाबा 26.5.07 रिवा.

परमपिता परमात्मा ने आकर हमको इस बेहद की हिस्ट्री-जॉग्राफी का ज्ञान दिया है और हमको श्रीमत दी है कि तुम यह हिस्ट्री-जॉग्राफी सारे विश्व की आत्माओं को बताओ, स्कूल-कालेजों में भी ये हिस्ट्री-जॉग्राफी बताओ। बाबा ने इस ज्ञान को रिजीजियो-पॉलिटीकल स्प्रीचुअल नॉलेज, हिस्ट्री-जॉग्राफी एण्ड फिलॉसॉफी ऑफ दि वर्ल्ड कहा है क्योंकि बाबा ने हमको सर्व धर्मवंशों, राज्य-सत्ताओं, आध्यात्मिकता, विभिन्न दर्शनों और सतयुग से कलियुग अन्त तक तीनों लोकों में होने वाले क्रिया-कलापों और भौगोलिक परिवर्तनों का स्पष्ट ज्ञान दिया है। परमपिता परमात्मा ने जो ज्ञान दिया है, उससे विश्व में एक धर्म और एक राज्य की स्थापना होती है और सारा विश्व सुख-शान्ति सम्पन्न बन जाता है। सृष्टि के बीजरूप निराकार ज्ञान का सागर शिवबाबा ही इस सत्य का ज्ञान देने और विश्व में सुख-शान्ति स्थापन करने में समर्थ हैं, इसलिए वे ही आकर यह बेहद की हिस्ट्री-जॉग्राफी बताते हैं अर्थात् वे ही आकर तीनों लोकों और तीनों कालों का यथार्थ ज्ञान देते हैं, जिससे विश्व में सुख-शान्ति-सम्पन्नता की स्थापना होती है। ये कर्तव्य कोई मनुष्य नहीं कर सकता है, इसलिए सभी धर्म वाले परमात्मा को ही याद करते हैं।

जो आत्मा इस सत्य ज्ञान को समझ लेती है और निश्चयबुद्धि होकर इसकी सत्यता को अनुभव करती है, वह इस विश्व-नाटक के परम सुख को अनुभव करती है, उसका जीवन परमानन्दमय हो जाता है क्योंकि वह जीवन के हर क्षेत्र में अपने को विजयी अनुभव करती है। ''ब्राह्मण अर्थात् निश्चयबुद्धि और निश्चयबुद्धि अर्थात् विजयी। तो हर एक ब्राह्मण निश्चयबुद्धि कहाँ तक बने हैं और विजयी कहाँ तक बने हैं। क्योंकि ब्राह्मण जीवन का फाउण्डेशन है निश्चय और निश्चय का प्रमाण है विजय।'' अ.बापदादा 15.4.92

इस प्रकार हम देखें तो ज्ञान सागर परमात्मा ने हमको सारी सृष्टि के इतिहास-भूगोल अर्थात् तीनों लोकों और तीनों कालों में आम सारे विश्व और खास भारत एवं भारतवासी आत्माओं अर्थात् देवी-देवता धर्म वालों की क्या ऐतिहासि और भोगोलिक स्थिति होती है, वह सब बताते हैं, जिसको जानकर ही हम पुन: भारत का और अपना गौरव प्राप्त करते हैं और यह सारा विश्व स्वर्ग बन जाता है।

इस सम्बन्ध में परमात्मा ने हमको क्या-क्या ज्ञान दिया है, उनके विषय में संक्षिप्त में यहाँ विचार करते हैं। बाबा बताया है -

1. ये सृष्टि एक नाटक है, जो 5000 वर्ष तक चलता है और हर 5 हजार वर्ष के बाद हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है। यह साकार सृष्टि एक नाटकशाला है, जहाँ ये बेहद का नाटक चलता है और सूर्य-चाँद-तारे इसको प्रकाशित करने वाली बत्तियां हैं। आत्मा, परमात्मा और प्रकृति

का यह खेल अनादि काल से चलता आया है और अनन्त काल चलता रहेगा। परमात्मा सहित सभी आत्मायें इस नाटक में पार्टधारी हैं और परमधाम के रहने वाले हैं। सभी पार्टधारी अपने समय पर परमधाम घर से आकर यहाँ पार्ट बजाते हैं।

2. स्वर्ग और नर्क क्या है? स्वर्ग और नर्क दोनों इस साकार वतन में ही होते हैं। यही सृष्टि स्वर्ग बनती है और यही सृष्टि नर्क बनती है। जब नर्क बन जाती है, तब परमात्मा पिता आकर इसको स्वर्ग बनाते हैं। परमात्मा का अवतरण भारत में ही होता है, जो आकर इस सृष्टि-चक्र की नई कलम लगाते हैं। सृष्टि-चक्र की कलम भारत से ही लगती है अर्थात् सृष्टि-चक्र के आदि में भारत ही होता है, जहाँ से देवी-देवताओं की सभ्यता विस्तार को पाती है और अन्त में भारत ही बचता है अर्थात् विनाश के समय भारत में ही कुछ मनुष्यात्मायें बच जाती हैं, जिससे नये विश्व की कलम लगती है।

3. सतयुग के आदि में अर्थात् स्वर्ग के आदि में भारत से इस कल्प-वृक्ष की नई कलम लगती है और ये सृष्टि रूप वृक्ष विस्तार को पाता है। सतयुग-त्रेता में सारा विश्व भारत ही होता है परन्तु उस समय इसका नामकरण भारत नहीं होता है। सतयुग आदि से आरम्भ होकर त्रेता अन्त तक देवी-देवताओं की सभ्यता होती है, जो वर्तमान भारत से आरम्भ होकर समस्त एशिया खण्ड और दक्षिणी योरोप तथा उत्तरी अफ्रीका तक विस्तार को पाती हैं अर्थात् भारत की दैवी सभ्यता की सीमायें वहाँ तक होती हैं।

4. त्रेता के बाद द्वापर के आदि से विश्व में अन्य धर्मवंशों की स्थापना होती है, जिससे विश्व में जनसंख्या विस्तार को पाती है, अन्य भूखण्ड भी अस्तित्व में आते हैं, जहाँ जनसंख्या का विस्तार होता है और विस्तार को पाते-पाते विश्व वर्तमान स्वरूप में आ जाता है।

5. बाबा ने यह भी बताया है कि हर धर्मवंश के धर्म-स्थापक की आत्मा परमधाम से आकर देवी-देवता धर्मवंश की किसी न किसी (परन्तु वे उस समय देवी-देवता के रूप में नहीं होते हैं) आत्मा के तन में प्रवेश करती है और उसके द्वारा अपने धर्मवंश की स्थापना का ज्ञान देकर अपने धर्मवंश की स्थापना करती है। पहले उसमें कुछ दैवी धर्मवंश की आत्मायें परिवर्तित होती है, बाद में उस धर्मवंश की आत्मायें परमधाम से आती जाती हैं और वह धर्म वृद्धि को पाता जाता है।

6. परमात्मा सर्वात्माओं का अनादि पिता है, जिनका अवतरण भारत में ही होता है और ब्रह्मा सर्व धर्मों का आदि पिता है, सर्व मनुष्यात्माओं का आदि पिता है, जिसके तन में ही परमात्मा प्रवेश करते हैं, इसलिए सभी धर्मवंश वाले ब्रह्मा को भिन्न नाम से मानते हैं और प्रायः सभी मुख्य धर्मवंशों ने भारत पर आकर राज्य किया है अर्थात् अपना वर्सा प्राप्त किया है क्योंकि

परमात्मा भारत को ही स्वर्ग बनाते हैं।

7. रामराज्य और रावण राज्य क्या है और कहाँ होता है, इस सत्य का ज्ञान भी परमात्मा दिया है कि रामराज्य भी सारे विश्व पर होता है और रावणराज्य भी सारे विश्व पर होता है। भले ही रामराज्य के समय विश्व छोटा होता है और रावणराज्य के समय विश्व विशाल होता है। रामराज्य और रावणराज्य की स्थापना कैसे होती है, उसका इतिहास भी बाबा ने बताया है कि राम अर्थात् परमात्मा पिता शिव कल्प के संगमयुग पर रामराज्य स्थापन करते हैं और रावणराज्य आत्माओं के परमपिता परमात्मा को भूलने के कारण समय की गति के साथ देहाभिमान में आने से स्वत: हो जाता है क्योंकि रावण का अपना स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं है। काल-चक्र में समय की गति के कारण जब आत्मा अपने अस्तित्व, गुणों-शक्तियों को भूलकर देहाभिमान के वश हो जाती है तब त्रेता के अन्त और द्वापर आदि के संगमयुग पर रावणराज्य आरम्भ हो जाता है।

8. महाभारत का यथार्थ ज्ञान भी परमात्मा ने दिया है कि उसमें न केवल हिंसक युद्ध होता है बल्कि उसमें अणु-युद्ध, गृह-युद्ध और प्राकृतिक आपदायें अर्थात् पांचों तत्वों का प्रकोप भी साथ ही होता है। प्राकृतिक आपदायें पुरानी दुनिया के विनाश में भी सहयोगी बनती हैं तो गृह-युद्ध और अणु-युद्ध से जो प्रदूषण होता है, उसकी सफाई भी प्राकृतिक आपदायें ही करती हैं। प्रथम विश्व-युद्ध और द्वितीय विश्व-युद्ध का इतिहास तो विश्व में अनेकानेक लोग जानते हैं और तृतीय विश्व-युद्ध की आशंका भी अनेक लोग और वैज्ञानिक करते हैं परन्तु उसमें अणु-युद्ध, गृह-युद्ध और प्राकृतिक आपदायें साथ-साथ भाग लेंगी तथा उसके बाद विश्व में सुख-शान्ति की स्थापना होगी, इस सत्य को कोई नहीं जानते हैं, जो परमात्मा पिता ने ही बताया है। जिस हिस्ट्री-जॉग्राफी को जानकर हम आत्मायें निश्चिन्त, निर्भय, निर्संकल्प हो गई हैं। विश्व-कल्याणकारी, प्यार के सागर परमात्मा पिता ने अन्य आत्माओं को भी निश्चिन्त, निर्भय और निर्संकल्प करने के लिए हमको ये बेहद की हिस्ट्री-जॉग्राफी सबको बताने की सेवा दी है क्योंकि परमात्मा सर्वात्माओं के कल्याणकारी हैं।

9. महाभारत में कौरव-पाण्डव और यादव सेना का इतिहास भी परमात्मा ने बताया है कि महाभारत अर्थात् तृतीय विश्व-युद्ध में भारत में कौरव अर्थात् भारत की अज्ञानी आत्मायें दो भागों में बंटकर गृह-युद्ध में भाग लेंगी और शेष विश्व में अणु-युद्ध होगा। प्राकृतिक आपदायें सारे विश्व में विनाश और सफाई का काम करेंगी। पाण्डव जो परमात्मा से प्रीतबुद्धि हैं, वे तटस्थ होकर सारा खेल देखेंगे, वे ही विजयी होंगे और उनमें से ही कुछ पाण्डव बनेंगे, जिससे नये विश्व की कलम लगेगी।

10. इस सम्पूर्ण सृष्टि के तीन भाग हैं, जो तीन लोकों के रूप में जाने जाते हैं। परमधाम को ब्रह्मलोक या निराकारी दुनिया (Incorporial World) या सातवां आसमान आदि के रूप में जाना जाता है, जो सर्व आत्माओं का मूल निवास स्थान है। यह ब्रह्म लोक साकार लोक अर्थात् आकाश तत्व और सूक्ष्म लोक से भी परे है। उस निराकारी दुनिया में सभी धर्मवंश की आत्मायें अपने-अपने धर्मवंश की आत्माओं के साथ समूह रूप में रहती है। ये संगठन की क्रिया परमधाम में स्वत: होती है क्योंकि वहाँ आत्माओं को न देह है और न कोई संकल्प है। ब्रह्मलोक के बाद सूक्ष्मलोक है, जहाँ आत्माओं के सूक्ष्म शरीर होते हैं। वहाँ आवाज़ नहीं होती परन्तु कर्म चलता है अर्थात् सारी कारोबार मूवी में चलती है। यह सूक्ष्मलोक ब्रह्म महतत्व और आकाश तत्व के समिश्रण से निर्मित हुआ है। सूक्ष्म लोक में कारोबार संगमयुग पर ही चलती है, जब परमात्मा का इस सृष्टि पर अवतरण होता है। वहाँ परमात्मा पिता ब्रह्मा के सूक्ष्म शरीर की रचना करके उनके द्वारा इस नये कल्प वृक्ष की कलम का सारा कारोबार करते हैं। सूक्ष्म लोक का क्षेत्र तो सारे कल्प में रहता है परन्तु वहाँ न कोई क्रिया-कलाप होता है और न ही मनुष्यों को उसका यथार्थ ज्ञान होता है। नाम मात्र तीन लोकों का वर्णन होता है।

इस सृष्टि रूपी नाटक का सारा कारोबार इस साकार वतन अर्थात् स्थूल लोक में ही चलता है अर्थात् यहीं पर स्वर्ग-नर्क, पतित-पावन, सुख-दुख, हार-जीत, रावणराज्य-रामराज्य का कारोबार होता है। ये साकार लोक पंच तत्वों से निर्मित हुआ है और निराकार आत्मायें पंच तत्वों से निर्मित देह रूपी वस्त्र धारण कर अपना-अपना पूर्व-निश्चित पार्ट बजाती हैं।

11. इस साकार लोक में जॉग्राफीकल और हिस्टोरीकल क्या-क्या परिवर्तन होते हैं, वह भी परमात्मा ने बताया है कि जब इस सृष्टि में योगबल की कारोबार चलती है अर्थात् योगबल से जन्म होता है तो भी इस धरा पर विशाल परिवर्तन होता है। प्राकृतिक आपदायें आदि आती हैं, जिससे ये जो वर्तमान पृथ्वी साढ़े तेईस अंश झुकी हुई है, वह 90 अंश पर सीधी हो जाती है, जिससे सागर के जल में, नदियों के बहाव में परिवर्तन होता है। भूकम्प आदि के कारण अनेक पर्वतीय भाग अन्दर धंस जाते हैं और नये भूभाग अस्तित्व में आ जाते हैं, सृष्टि पर सदाबहार मौसम हो जाता है। ऐसे ही जब द्वापर से जब आत्माओं में योगबल खत्म हो जाता है और भोगबल अर्थात् काम-विकार के द्वारा सन्तानोत्पत्ति की प्रथा प्रचलित होती है तब भी यहाँ पर अनेक प्रकार के भूकम्प आदि होते हैं, जिससे जो पृथ्वी 90 अंश पर सीधी होती है, वह साढ़े तेईस अंश पर झुक जाती है, जिससे सागर में, नदियों के बहाव में विशाल परिवर्तन होता है। उसके कारण जो देवी-देवताओं की सभ्यता एक धर्म, एक राज्य, एक भाषा के रूप में विस्तार को पायी हुई होती है, उसके अवशेष भी खत्म हो जाते हैं और वे भूभाग विघटित

होकर अनेक भूभागों में बंट जाती है। पुरानी दैवी सभ्यता के अवशेष भूगर्भ या सागर में समा जाते हैं, नये भूभाग अस्तित्व में आ जाते हैं।

12. कल्पान्त में जब इस सृष्टि पर परिवर्तन होता है तो वर्तमान जगत के अनेक भूभाग जलमग्न हो जाते हैं और जब द्वापर से परिवर्तन होता है तो फिर ये भूभाग अस्तित्व में आते हैं अर्थात् सागर के बाहर आते हैं, जो धीरे-धीरे विस्तार को पाते जाते हैं।

13. इस विश्व-नाटक के हू-ब-हू पुनरावृत्ति का ज्ञान परमात्मा ने दिया है, जिससे ये तथ्य सामने आया है कि परिवर्तन की सतत प्रक्रिया के आधार पर इस विश्व के जड़ तत्वों का अणु-परमाणु 5000 वर्ष के बाद पुनरावृत्त होता है अर्थात् अपने 5000 वर्ष पहले वाले स्थान पर अवश्य आ जाता है। ऐसे ही आत्माओं का पार्ट भी 5000 वर्ष के बाद हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है। इस राज़ के उद्घाटन से सृष्टि रचना की जो जटिल पहेली उलझी हुई थी, वह भी सुलझ गई है अर्थात् वह भी समझ में आ गई है।

14. कल्पान्त में महाविनाश के बाद विश्व की जो स्थिति बनती है, वह सुख-शान्ति सम्पन्न होती है। वहाँ पर पृथ्वी धन-धान्य से सम्पन्न होती है, आत्मायें आध्यात्मिक शक्ति से सम्पन्न होती हैं, खानियां रतनों से भरपूर होती हैं, प्राणियों में प्रेम होता है, प्रकृति मनवांछित फल देने वाली होती है, सदा बहार मौसम होता है। ऐसी सृष्टि को सभी धर्मों की आत्मायें स्वर्ग, जन्नत, हेविन आदि के रूप में याद करते हैं।

15. परमात्मा ने जो आध्यात्मिक ज्ञान दिया है, उससे आत्मा का अस्तित्व समझ में आया है और कैसे आत्मा-परमात्मा अलग-अलग हैं। आत्मा मन-बुद्धि-संस्कारों से संगठित एक अविनाशी चेतन सत्ता है। संसार एक नाटक हैं, जहाँ आत्मायें परमधाम से आकर अपना-अपना पार्ट बजाती हैं। ये सब इतिहास समझ में आया है।

16. आत्माओं के परस्पर अच्छे या बुरे हिसाब-किताब कैसे सारे कल्प चलते हैं और कैसे सारे कल्प के हिसाब-किताब का संचित खाता कल्पान्त में चुक्ता होता है। इन हिसाब-किताब का कोई हिसाब रखने वाला नहीं है परन्तु फिर भी हिसाब रहता है और चुक्ता होता है। जिसके लिए परमात्मा स्वयं भी वण्डर खाते हैं कि कैसे आत्मा में सारा पार्ट भरा हुआ है, कैसे ये विश्व-नाटक सारे कल्प चलता है।

17. हर आत्मा के अच्छे-बुरे कर्मों का फल भी हर आत्मा को बिल्कुल एक्यूरेट सुख-दुख के रूप में मिलता है। धर्मराज का नाम तो गाया हुआ है परन्तु शिवबाबा ने यह भी बताया है कि अलग से धर्मराज का कोई स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं है, ये तो सब इस ड्रामा में अनादि-अविनाशी नूँध है, जिसके आधार पर साक्षात्कार होता है, कर्म का फल मिलता है। धर्मराज तो

प्रकृति के यथार्थ निर्णय का प्रतीकात्मक स्वरूप है। इस हिसाब-किताब के विधि-विधान का अंशमात्र में अन्य धर्मों में भी वर्णन है कि कयामत के समय परमात्मा सर्वात्माओं को कब्र से जगाकर हिसाब करता है।

18. हर आत्मा ड्रामा अनुसार कर्म करने और कर्म का फल भोगने के लिए बाध्य है, फिर भी पुरुषार्थ का विशेष महत्व है, जिसके लिए परमात्मा आकर पुरुषार्थ कराते हैं क्योंकि ये विश्व-नाटक पुरुषार्थ और प्रालब्ध पर आधारित एक घटना-चक्र है।

19. सारे विश्व के इतिहास, भूगोल और आध्यात्मिकता (Spiritual History and Georaphy of the World) का केन्द्र-बिन्दु भारत है, जहाँ कल्प-कल्प कल्पान्त में सृष्टि के बीजरूप ज्ञान सागर परमपिता परमात्मा आकर कल्प-वृक्ष की कलम लगाते अर्थात् कल्प-वृक्ष का प्रत्यारोपण करते हैं, जिसकी शाखायें-प्रशाखायें बाद में सारे विश्व में फलती-फूलती और विस्तार को पाती हैं। भारत में ही परमात्मा आकर आध्यात्मिकता की गंगा बताते हैं, जो बहते हुए सारे विश्व में जाती है और सारे विश्व को सर-सब्ज करती है।

20. जब नये चक्र की आदि अर्थात् सतयुग की आदि अर्थात् नई दुनिया की आदि होती है तो उस समय सारे विश्व की जनसंख्या केवल 9,16,108 के लगभग होती है, जो सतयुग के अन्त तक दो करोड़ के लगभग हो जाती है और त्रेता के अन्त तक 33 करोड़ के लगभग हो जाती है। विचार करें तो इस धरा पर 500 करोड़ के लगभग मनुष्यात्मायें संगमयुग पर ही परमधाम से उतरी हैं। उसके पहले तो बहुत कम मनुष्यात्मायें इस धरा पर थी। सन् 1944-45 की जनगणना में सारे विश्व की जनसंख्या 200 करोड़ से भी कम थी।

21. परमात्मा आकर विश्व में राजशाही की स्थापना करते हैं, जो कलियुग के अन्त में प्रजातन्त्र के रूप में बदल जाती है। वास्तव में विश्व राजशाही में ही सुखी था, जब राजायें चरित्रवान थे और उन्हीं के अनुरूप प्रजा भी चरित्रवान थी। जब राजायें भोगी-विलासी, काम-क्रोध-लोभादि विकारों के वशीभूत हो गये तो प्रजा भी वैसी ही हो गई, जिससे राजा-प्रजा के मध्य दूरी बढ़ती गई। जिसके फलस्वरूप कलियुग के अन्त में प्रजा ने राजाओं को नकार दिया और प्रजा पर प्रजा का राजतन्त्र स्थापित हो गया अर्थात् प्रजातन्त्र की राज-व्यवस्था बन गई।

इस प्रकार हम देखते हैं कि कल्प-कल्प पुरानी दुनिया का विनाश अणु-युद्ध, गृह-युद्ध और प्राकृतिक आपदाओं के द्वारा होता है और इस ईश्वरीय ज्ञान और राजयोग के द्वारा नई दुनिया की स्थापना होती है। ये सारा विश्व-नाटक 5000 वर्ष का है, जो हर पांच हजार वर्ष के बाद हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है। भारत ही स्वर्ग और भारत ही नर्क बनता है। दूसरे धर्म और देश तो

इस विश्व-नाटक के बाइ-प्लॉट्स हैं। सबका मूल भारत ही है। ये सब राज़ परमात्मा ने अभी बताया है।

''परमपिता परमात्मा तो रहते हैं परमधाम में। जरूर कोई समय में उनका यह भारत ही घर होता है, तब तो शिवरात्रि मनाई जाती है। ... भारत खण्ड में ही उनका आना होता है।... शिवरात्रि और कृष्ण जयन्ति भी भारत में ही मनाते हैं।''

सा.बाबा 1.5.07 रिवा.

''बाप आते हैं पतितों को पावन बनाने। बस एक ही बार पावन बना देते हैं, फिर आते ही नहीं हैं। ... स्वर्ग-नर्क यह नाम भी भारत पर ही पड़ा है।''

सा.बाबा 1.5.07 रिवा.

''जितनी भारतवासियों की चढ़ती कला और उतरती कला होती है, उतना और कोई की भी नहीं होती है। भारत ही श्रेष्ठाचारी और भ्रष्टाचारी बनता है। भारत ही निर्विकारी और भारत ही विकारी बनता है। ... अभी भारतवासियों की चढ़ती कला है। मुक्ति में जाकर फिर जीवनमुक्ति में आयेंगे।'' सा.बाबा 4.5.07 रिवा.

''ऐसे नहीं कि बाप कोई नई सृष्टि रचते हैं। बाप तो आकर पुरानी को नया बनाते हैं। बाप ने भारत को स्वर्ग का वर्सा दिया है, उसका यादगार सोमनाथ का मन्दिर सबसे बड़ा बनाया है। भारत में एक देवी-देवता धर्म था, और कोई धर्म नहीं थे। और सभी धर्म तो बाद में स्थापन हुए हैं।'' सा.बाबा 19.5.07 रिवा.

''वर्ल्ड की हिस्ट्री जॉग्राफी तुम बच्चे ही जानते हो, और कोई जान न सके। ... ऐसे भी बहुत लोग कहते हैं कि महाभारत युद्ध को 5 हजार वर्ष हुए। यह फिर से वही लड़ाई है, तो जरूर गीता का भगवान भी होगा।'' सा.बाबा 25.5.07 रिवा.

''सतयुग में लक्ष्मी-नारायण का राज्य था, फिर क्या हुआ?... कितना समय राज्य किया और कितनी एरिया पर राज्य किया?... वहाँ भारत में बेहद का राज्य चलता है, कोई पार्टीशन आदि नहीं होते हैं। ... अब बेहद का बाप बेहद की हिस्ट्री-जॉग्राफी सुनाते हैं, 84 के चक्र में वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी आ जाती है। ... भारत में पवित्रता-सुख-शान्ति सब थी।''

सा.बाबा 26.5.07 रिवा.

''अब यह नाटक पूरा होता है, अब वापस जाना है बाबा के पास। तुम यह भी जानते हो कि सिवाए भारत के और कोई खण्ड स्वर्ग बन नहीं सकता। ... यह अनादि ड्रामा बना हुआ है। हर एक आत्मा को अनादि पार्ट मिला हुआ है। आत्मा अविनाशी है।''

सा.बाबा 30.5.07 रिवा.

''यह भी विचार सागर मन्थन करना होता है कि पब्लिक को यह कैसे बतायें। ... भारत की हिस्ट्री-जॉग्राफी में नई दुनिया का सम्वत् भी दिखाना चाहिए। नई दुनिया में आदि सनातन देवी-देवताओं का राज्य था।''

सा.बाबा 31.5.07 रिवा.

''विश्व की यह हिस्ट्री-जॉग्राफी अच्छी तरह समझानी है। ... भारत का सम्वत् ही गुम कर दिया है। जो पूज्य देवी-देवतायें थे, उनका सम्वत् ही गुम कर दिया है। पुजारियों का सम्वत् है। अशोक पिलर कहते हैं परन्तु द्वापर से अशोक तो कोई होता ही नहीं है। ... अशोक कह देते परन्तु यहाँ अशोक कोई है नहीं।''

सा.बाबा 31.5.07 रिवा.

''ये बातें सुनेंगे वे ही, जो कल्प पहले स्वर्ग में सुखी थे। जो वहाँ थे ही नहीं, वे सुनेंगे भी नहीं। ... तुम समझते हो कि भारत पहले क्या था, फिर डाउनफॉल कैसे हुआ।... तुमको खुशी है - विश्व का बेड़ा डूबा हुआ है, उसको हम बाबा की नॉलेज द्वारा सेलवेज कर रहे हैं।''

सा.बाबा 31.5.07 रिवा.

''तुमको रात दिन यही तात लगी रहनी चाहिए कि लोगों को यह कैसे समझायें। ... मूलवतन से निराकारी झाड़ से आत्मायें नम्बरवार आती रहती हैं।... तुमको यह नॉलेज अभी दी गई है कि दूसरों को भी समझाओ। ... अपने-अपने समय पर हर एक आत्मा की महिमा होती है।''

सा.बाबा 31.5.07 रिवा.

''बाप को समझने से तुम सब कुछ जान जाते हो। वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी तो जरूर वर्ल्ड का रचयिता बीजरूप बाप ही सुनायेंगे। वही नॉलेजफुल है।''

सा.बाबा 31.5.07 रिवा.

''सूर्यवंशी घराना, फिर चन्द्रवंशी घराना... फिर संगमयुग पर बाप आकर शूद्रवंशियों को ब्राह्मण वंशी बनाते हैं। ... अगर सच्ची कथा सुनते और सुनाते रहें तो बुद्धि से झूठ निकल जाये।''

सा.बाबा 31.5.07 रिवा.

''अभी तुम जानते हो कि हम आलराउण्ड 84 जन्मों का चक्कर लगाते हैं।... आधा कल्प सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी राज्य चलता है। ... फिर आधा कल्प भक्ति मार्ग चलता है। यह है ज्ञान मार्ग, इसको संगमयुग कहते हैं।''

सा.बाबा 1.6.07 रिवा.

''इस समय कब्रिस्तान है, यही फिर परिस्तान बनेंगा। यह खेल है कब्रिस्तान और परिस्तान का। बाप परिस्तान स्थापन करते हैं, जिसको सब याद करते हैं। ... जब तक बाप को नहीं जाना है तब संशयबुद्धि ही रहेंगे। संशयबुद्धि विनश्यन्ति, निश्चयबुद्धि विजयन्ति।''

सा.बाबा 1.6.07 रिवा.

''अभी बॉम्बस निकाले हैं, नहीं तो सारी दुनिया का विनाश कैसे हो। उसके साथ फिर नेचुरल केलेमिटीज़ भी हैं।... अभी तुम्हें अपना सब कुछ इन्श्योर करना है बाप के पास।... अभी तुम डायरेक्ट इन्श्योर करते हो। जो सबकुछ इन्श्योर करेगा, उनको बादशाही मिल जायेगी। यह बाबा अपना बताते हैं - सबकुछ शिवबाबा को दे दिया। फुल इन्श्योर कर लिया तो फुल बादशाही मिलती है।'' सा.बाबा 1.6.07 रिवा.

''नॉलेज से वर्सा लेना है। जीवनमुक्ति का वर्सा तो सबको मिलता है परन्तु स्वर्ग का वर्सा राजयोग सीखने वाले ही पाते हैं। गति-सद्गति तो सबकी होनी है ना। सबको बाप वापस ले जायेंगे।'' सा.बाबा 1.6.07 रिवा.

''यह सारा खेल भारत पर ही बना हुआ है। भारत ही अविनाशी खण्ड है, उसमें ही सुख-दुख, स्वर्ग-नर्क का वर्सा होता है। गीता में है भगवानुवाच। तो गीता है सबकी माई-बाप क्योंकि उनसे ही सबको सद्गति मिलती है। बाप सबका दुखहर्ता-सुखकर्ता है। भारत उनका बर्थ-प्लेस है। भारत सबका तीर्थ स्थान है।'' सा.बाबा 18.6.07 रिवा.

''एक बाप ही है, जो गीता द्वारा भारत को इतना ऊंच बनाते हैं। ... भारत में सर्वव्यापी का ज्ञान तो चलता ही आया है, फिर भी भारत कंगाल, नर्क बन गया है। भक्ति का फल तो देना ही है भगवान को।'' सा.बाबा 2.5.07 रिवा.

''श्रीकृष्ण तो पुनर्जन्म में आते हैं। ... गीता का भगवान हमको हीरे जैसा बनाते हैं, उनका नाम बदलने से भारत का यह हाल हुआ है। यह बात अजुन इतनी जोर से समझाई नहीं है। ज्ञान का सागर तो एक ही निराकार शिव है। ... कृष्ण की महिमा और परमात्मा की महिमा में बहुत फर्क है।'' सा.बाबा 2.4.07 रिवा.

Q. ये विश्व की हिस्ट्री-जॉग्राफी स्कूल-कॉलेजों में और मनुष्यों को समझाने से उनको क्या लाभ होगा ? बाबा का ये कहने का क्या भावार्थ है ?

जो इस विश्व की ये सत्य हिस्ट्री-जॉग्राफी को समझ लेगा और जिसको इस पर निश्चय हो जायेगा, वह इस जीवन का परम-सुख यहीं अनुभव करेगा क्योंकि उसको इस दुखी-अशान्त विश्व में आशा की किरण दिखाई देगी, विश्व का भविष्य उज्ज्वल देखकर खुश हो जायेगा, वह परमात्मा को पहचान कर उनके साथ सम्बन्ध स्थापित करके मुक्ति-जीवनमुक्ति का वर्सा प्राप्त करेगा, मुक्ति-जीवनमुक्ति का यहाँ ही अनुभव करेगा। भले हम यह भी जानते हैं कि सतयुग या स्वर्ग में सभी आत्मायें नहीं आयेंगी, इसलिए सभी यह हिस्ट्री-जॉग्राफी नहीं पढ़ेंगी परन्तु मुक्ति में तो सभी आत्मायें जायेंगी, इसलिए योग सभी आत्मायें जाने-अन्जाने सीखेंगे

ही। इस देह में रहते देह से न्यारी स्थिति अर्थात् मुक्ति की अनुभूति परमानन्दमय है, जो सभी आत्मायें करेंगी। जिन आत्माओं को मुक्ति के साथ सतयुग की जीवनमुक्ति में भी आना है, वे उसके लिए अभीष्ट पुरुषार्थ करके जीवनमुक्ति का परम-सुख भी अनुभव करेंगी। इसलिए परमात्मा को सर्व आत्माओं का मुक्ति-जीवनमुक्ति दाता कहा जाता है, मुक्ति-जीवनमुक्ति सर्व आत्माओं का ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार है, जो सर्व आत्माओं को लेना है और जो आत्मायें उसको दिलाने में सहयोगी बनेंगी, वे भी परम भाग्यशाली हैं और वे उनकी दुआओं को प्राप्त करेंगी।

''अभी तुमको समझाया है - यह है वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी। तुम इस बेहद के चक्र को भी जान गये हो। तीनों लोकों, तीनों कालों को भी तुम जानते हो।... अभी बाप ने क्रियेटर और क्रियेशन का राज़ समझाया है।'' सा.बाबा 19.6.07 रिवा.

''भारतवासी अपने धर्म को ही भूल गये हैं। ...जो देवी-देवता धर्म की स्थापना करते हैं, वे ही समझाते हैं। और कोई वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी समझा न सके।''

सा.बाबा 19.6.07 रिवा.

''जब शक्ति सेना अपने को प्रत्यक्ष करेगी, तब बाप प्रत्यक्ष होगा क्योंकि शक्ति और पाण्डवों के द्वारा ही बाप प्रत्यक्ष होगा। हर एक के चेहरे से बाप ही दिखाई देगा। ... पहले भारत गया है विदेश को जगाने, अभी विदेश भारत को जगायेगा।''

अ.बापदादा 31.10.06

''इस सुख-दुख के खेल को भी तुम जानते हो। ... ये मूसल आदि सब ड्रामा में नूँध हैं। गीता में भी मूसल अक्षर है। ... स्वर्ग-नर्क भारत की ही बात है। ... यहाँ ही स्वर्गवासी थे, यहाँ ही फिर नर्कवासी बनते हैं। यह नॉलेज है नर से नारायण बनने की।''

सा.बाबा 28.4.05 रिवा.

''यह नॉलेज सबको देनी चाहिए, जिससे सब जान जायें कि वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी क्या है, यह कैसे रिपीट होती है। ... सतयुग में आदि सनातन देवी-देवता धर्म की राजधानी थी, उन्होंने यह राज्य कैसे प्राप्त किया।'' सा.बाबा 19.7.07 रिवा.

''कोई बेहद की हिस्ट्री-जॉग्राफी तो सिखाते नहीं हैं। ... यह है बेहद की हिस्ट्री-जॉग्राफी, इसको जानने से तुम चक्रवर्ती राजा-रानी बनेंगे। हम यह वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी समझाते हैं। यह सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है, यह सबको समझाओ।''

सा.बाबा 21.7.07 रिवा.

''यह किसको पता नहीं है कि रावण आधा कल्प का पुराना दुश्मन है भारत का। ... बरोबर

भारत विश्व का मालिक था ... शिव जयन्ति के बाद होती है गीता जयन्ति। बाप ने आकर जो सुनाया, उसकी फिर गीता बनी।''

सा.बाबा 3.7.07 रिवा.

''जो इस खेल को अच्छी रीति समझते हैं, वे अन्दर में खुशी में रहते हैं। ... शिव जयन्ति के बाद कृष्ण का जन्म होता है। शिव जयन्ति के बाद है कृष्ण जयन्ति। शिवबाबा ही भारत को स्वर्ग बनाते हैं। कहते है कल्प के संगमयु पर मैं आकर राजयोग सिखलाता हूँ। महाभारत की लड़ाई हो तब तो नर्क का विनाश और स्वर्ग की स्थापना हो।''

सा.बाबा 28.7.07 रिवा.

''अभी जो स्कूलों में हिस्ट्री-जॉग्राफी पढ़ाई जाती है, वह तो अधूरा ज्ञान है। मूलवतन, सूक्ष्मवतन, स्थूलवतन का पूरा राज़ समझाना चाहिए। ... बेहद की हिस्ट्री-जॉग्राफी बाप ही समझाते हैं। ... यह सूर्यवंशी डिनॉयस्टी कैसे स्थापन हुई, यह नॉलेज किसी के पास है नहीं।''

सा.बाबा 28.7.07 रिवा.

''परमपिता परमात्मा ज्ञान सागर है, कृष्ण को ज्ञान सागर नहीं कहेंगे। शिवबाबा की महिमा अलग और कृष्ण की महिमा अलग है। भारतवासी मूँझ पड़े हैं, गीता का भगवान कृष्ण को समझ लिया है। गीता ज्ञान तो है ही एक बाप में, जिसको ज्ञान का सागर कहा जाता है। भारतवासियों का धर्म-शास्त्र तो वास्तव में है ही एक सर्वशास्त्र शिरोमणी भगवत गीता। गीता में है भगवानुवाच। अब भगवान किसको कहा जाये ? वह भी भारतवासी समझते नहीं हैं।''

सा.बाबा 23.7.04 रिवा.

काल-चक्र और काल-चक्र की आयु

इस विश्व-नाटक का काल-चक्र भूतकाल, वर्तमान और भविष्य के घटना-चक्र पर आधारित है। वर्तमान और कुछ भी नहीं है, वह केन्द्र-बिन्दु अर्थात् पल-विपल है, जिसके एक तरफ भूलकाल है और दूसरी तरफ भविष्य काल है। वर्तमान भूतकाल का फल और भविष्य का बीज है। इसलिए भूतकाल का चिन्तन और भविष्य की चिन्ता न करने वाले ही वर्तमान में श्रेष्ठ कर्म करके वर्तमान का भी सुख अनुभव कर सकते हैं और उज्ज्वल भविष्य का भी निर्माण कर सकते हैं।

''बहुत लोग कहते हैं - क्राइस्ट से 3 हजार वर्ष पहले गीता सुनाई गई थी। परन्तु यह तो बताओ 3 हजार वर्ष पहले कौन थे ? किसने गीता सुनाई ? किस नेशन को, किस युग में गीता सुनाई और किसने सुनाई ? ... ड्रामा अनुसार जब सृष्टि तमोप्रधान बन जाती है तब मुझे आना पड़ता है। मैं भी ड्रामा के बन्धन में बांधा हुआ हूँ।''

सा.बाबा 24.5.07 रिवा.

''श्रीकृष्ण भगवानुवाच नहीं है। श्रीकृष्ण तो त्रिकालदर्शी अर्थात् स्वदर्शन चक्रधारी नहीं है। ... स्वदर्शन चक्र के अर्थ का भी किसको पता नहीं है।... यह सृष्टि-चक्र के फिरने का ज्ञान है, वह सिर्फ तुम्हारे में है।''

सा.बाबा 12.4.07 रिवा.

''गीता के बाद है महाभारत। गीता में राजयोग का वर्णन है।... 5 हजार वर्ष पहले शिवबाबा ब्रह्मा तन में आया था और देवी-देवता धर्म स्थापन किया था। ब्राह्मण ही राजयोग सीखे थे, जो फिर सीख रहे हो।''

सा.बाबा 13.12.06 रिवा.

''मैं बताता हूँ - 5 हजार वर्ष पहले मैंने तुमको गीता सुनाई थी। ... अभी बाप ने आकर तुमको ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त का, सारे चक्र का राज़ समझाया है। ... पहली-पहली मुख्य बात ही यह है - शिव भगवानोवाच्य। कृष्ण तो भगवान हो न सके। ... उनको पतित-पावन भी नहीं कहा जा सकता।''

सा.बाबा 27.12.06 रिवा.

''बाप कौनसा ज्ञान सुनाते हैं? सृष्टि के अथवा ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान सुनाते हैं। ... कल्प पहले भी यह ज्ञान तुमको सुनाया था, अभी फिर तुमको सुनाते हैं।''

सा.बाबा 12.4.05 रिवा.

''इस कल्प के पुरुषोत्तम संगमयुग की ही महिमा है। सतयुग-त्रेता के संगम पर कुछ होता नहीं है, सिर्फ राजाई ट्रान्सफर होती है। अभी तो कितना हंगामा होता है। ... अभी देवी-देवता धर्म की सेपलिंग लग रही है, बाप ही आकर यह सेपलिंग लगाते हैं।''

सा.बाबा 27.7.07 रिवा.

''कहते हैं - क्राइस्ट से 3 हजार वर्ष पहले गीता सुनाने आये थे। तो 5 हजार वर्ष का टाइम हुआ ना। ... तो अब फिर गीता सुनाने आया है ना।''

सा.बाबा 26.6.07 रिवा.

''मनुष्य यह थोड़ेही समझते हैं कि गीता का भगवान शिव है, जिस द्वारा यह नॉलेज लेकर विष्णु बनते हैं। यह राजयोग है ना। ... बोलो - मैं तो गीता का ज्ञान सुनाता हूँ। यह गीता का ही युग है। चार युग हैं, उनको तो सब जानते हैं। यह है लीप युग। इस संगमयुग का किसको भी पता नहीं है। तुम जानते हो यह पुरुषोत्तम संगमयुग है। शिव जयन्ति भी मनाते हैं।''

सा.बाबा 22.7.04 रिवा.

गीता और विश्व की संरचना एवं विश्व-परिवर्तन का विधि-विधान

ये विश्व-नाटक अनादि-अविनाशी है, इसलिए इसकी नई संरचना का कोई प्रश्न ही नहीं उठता परन्तु परमात्मा इसकी कलम लगाते हैं, जिससे ये नवजीवन प्राप्त करता है अर्थात्

पुराने से नया हो जाता है। ये बात भी ध्यान में रहनी चाहिए कि ये विश्व-नाटक सतत परिवर्तनशील है परन्तु कल्पान्त में जो परिवर्तन होता है, वह अपने सतोप्रधान स्वरूप में होता है अर्थात् जड़-जंगम-चेतन तीनों प्रकृतियां अपने सतोप्रधान स्वरूप में हो जाती हैं। सभी खानियां सुख-साधनों, रतनों से भरपूर हो जाती हैं, जंगम प्रकृति भी सदा सुखदायी हो जाती है। परन्तु ये अनिवार्य नहीं है कि कलियुग में खानियों में जो खनिज पदार्थ हैं अर्थात् खनिज तेल, गैस, लोहा, कोयला आदि-आदि वे सतयुग आदि से ही उनमें संचित हो जाते हैं। प्रकृति की सतत परिवर्तनशीलता के आधार पर जिस समय जो चीज जहाँ थी वह उस समय पर अपने स्थान पर पहुँच जाती है। समयानुसार जो नये भूभाग जो जलमग्न थे, वे ऊपर आते हैं तो वहाँ की जड़ और जंगम प्रकृति बहुत सम्पन्न होती है, जिससे वहाँ आने वाली नई आत्मायें उसका पूर्ण सुख भोगती हैं, प्रकृति उनको पूरा सहयोग करती है परन्तु सतयुग के सतोप्रधान सुख और उसके सुख में अन्तर अवश्य होता है। सतयुग में सारा विश्व सतोप्रधान होता है और उस समय सारा विश्व ही भारत होता है। द्वापर से विश्व टुकड़ों में विभाजित हो जाता है और विश्व में सतोप्रधान, रजो, तमो गुणों से युक्त भी आत्मायें होती हैं।

''ये बड़ी गुह्य बातें हैं, जो तुम ही जानते हो। ... इस चक्र को याद करना माना सारे वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी को याद करना। जितना स्वदर्शन चक्र फिरता रहेगा, उतना समझो वह यात्रा पर तीखा जा रहा है। ... बोलो हम आपको वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी बताते हैं कि मनुष्य 84 जन्म कैसे लेते हैं। ... लक्ष्मी-नारायण ने राज्य कैसे पाया और फिर कैसे गंवाया।''

सा.बाबा 28.6.07 रिवा.

''ज्ञान मार्ग अर्थात् चढ़ती कला, भक्ति है उतरती कला।... अब बाप ने समझाया है कि रामराज्य कब से कब तक और कहाँ तक चलता है। यह बेहद की हिस्ट्री-जॉग्राफी बाप ही समझते हैं। ... भारत ही हेविन था, वह भूल गये हैं।''

सा.बाबा 30.6.07 रिवा.

''दो सेनायें हैं, जिस्मानी और रुहानी अर्थात् पाण्डव और कौरव।... कन्ट्रॉस्ट है ना। ज्ञान मार्ग और भक्ति मार्ग का। यह है लास्ट कन्ट्रॉस्ट। सतयुग में कन्ट्रॉस्ट की बात नहीं होती है। ... हू-ब-हू तुम कल्प पहले वाली सेवा कर रहे हो। तुमको इस भारत को दैवी राजस्थान बनाना है। यह तुम्हारा ही काम है।''

सा.बाबा 30.6.07 रिवा.

''इस ड्रामा के राज़ को तुम ही जानते हो। ... वह सीन 5 हजार वर्ष के बाद रिपीट होगी। ... यह है वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी, जो फिर से रिपीट होगी।''

सा.बाबा 2.6.07 रिवा.

''अभी तुम बाप द्वारा डबल अहिंसक बन डबल ताजधारी बन रहे हो। ... अभी तुम्हारी बुद्धि में नटशेल में सारा राज़ है। ... तुम जानते हो - हम श्रीमत पर चल श्रेष्ठ से श्रेष्ठ राजधानी स्थापन कर रहे हैं, कल्प पहले के मुआफिक। ... तुम हो शिवशक्ति पाण्डव सेना, तुम्हारी वार है रावण के साथ।''

सा.बाबा 2.6.07 रिवा.

''स्वर्ग में राजा-प्रजा दोनों के लिए कोई अप्राप्त वस्तु नहीं रहती है, जिसके लिए इन्वेन्शन आदि निकालें। ... इन लक्ष्मी-नारायण की हिस्ट्री-जॉग्राफी का किसको पता नहीं है। अभी तुमको कितनी ऊंच शिक्षा मिलती है। देने वाला है ही एक बाप। ... सारा दिन इन बातों में रमण करते हर्षित रहना चाहिए।''

सा.बाबा 2.6.07 रिवा.

''हरेक आत्मा में अपना-अपना पार्ट भरा हुआ है। सब एक्टर्स हैं, उनको अपना पार्ट बजाना ही है। जैसे कि नये सिर शूटिंग होती जाती है परन्तु यह अनादि शूटिंग हुई पड़ी है। वर्ल्ड की यह हिस्ट्री-जाग्राफी रिपीट होती रहती है।... भारत वाइसलेस था, अभी विशश है, फिर वाइसलेस कैसे बनेगा ? यह बाप ही समझाते हैं। भगवानुवाच - मामेकम् याद करो। ... गीता में भी है - हे बच्चो, तुम काम पर जीत पहनो तो ऐसे जगतजीत बनेंगे।''

सा.बाबा 11.8.04 रिवा.

अनेक इतिहासकार मानते हैं कि 3100 ई.पू. एक जल-प्लावन हुआ और एक विशाल युद्ध हुआ। वे ये भी मानते हैं कि 500 ई.पूर्व भी एक जल-प्रलय हुई।

महाभारत और गीता 272-275

गीता-महाभारत के काल को गीता और महाभारत के विद्वान 5000 वर्ष हुआ मानते हैं और विश्व की परिस्थितियों को देखें तो वही समय और चिन्ह अभी फिर दृष्टिगोचर हो रहे हैं।

तृतीय अध्याय (III Chapter)

विविध बिन्दु

गीता महाभारत का एक अंग है। गीता में है भगवानुवाच, परन्तु भगवान कौन है, गीता क्या है, गीता ज्ञान क्या है, इस सबका राज़ परमात्मा ही आकर बताते हैं। यथार्थ गीता ज्ञान तो परमात्मा ने सम्मुख में आकर दिया होगा, कोई गीता पढ़कर नहीं दिया होगा, इसलिए अभी जो प्रचलित गीता है, वह यथार्थ गीता नहीं हो सकती है। वह तो द्वापर युग से भक्ति मार्ग में गीता ज्ञान और गीताज्ञान दाता की यादगार में बनाई गई है। मनुष्य गीता ज्ञान-दाता श्रीकृष्ण को समझते हैं परन्तु गीता को पढ़ने से पता चलता है कि गीता-ज्ञानदाता कोई देहधारी मनुष्य नहीं हो सकता क्योंकि किसी मनुष्य को भगवान नहीं कह सकते। भगवान तो वह सत्ता है, जिसको सभी धर्म वाले मानें। गीता-ज्ञानदाता तो ज्ञान-सागर निराकार परमात्मा शिव है, वही भगवान है। श्रीकृष्ण तो दैवीगुणों से सम्पन्न एक मनुष्य तनधारी देवता थे, जिन्होंने गीता ज्ञान के द्वारा ये पद पाया है। इन सब राज़ों को अभी परमात्मा ने बताया है, तब ही हम मन्मनाभव-मध्याजीभव, नष्टोमोहा-स्मृति स्वरूप स्थिति को धारण करते हैं, जो ही गीता ज्ञान का सार है।

''गीता में लिखा है - मन्मनाभव। यह अक्षर मशहूर है। ... अब वही गीता का भगवान बैठ राजयोग सिखलाते हैं तो तुम पतित से पावन बन जाते हो। अभी हम भगवान से गीता सुनते हैं, फिर औरों को सुनाते हैं।'' सा.बाबा 23.9.04 रिवा.

''तुम सन्यासियों से भी पूछ सकते हो कि गीता में जो भगवानुवाच है कि देह सहित देह के सब धर्म छोड़ मामेकम् याद करो। क्या ये कृष्ण कहते हैं - मामेकम् याद करो ? ... वास्तव में एक गीता ही है, जो शिवबाबा ने सुनाई है।''

सा.बाबा 18.9.04 रिवा.

''तुम अपने तन-मन-धन से अपने लिए राजधानी स्थापन करते हो। जो करेगा, वह पायेगा। जो नहीं करते, वे पायेंगे भी नहीं। कल्प-कल्प तुम ही करते हो। तुम ही निश्चयबुद्धि होते हो। तुम समझते हो बाप, बाप भी है, टीचर भी है, वही गीता का ज्ञान भी यथार्थ रीति सुनाते हैं। ... यह लिखें - गीता का भगवान कृष्ण नहीं, परमपिता परमात्मा शिव है।''

सा.बाबा 3.9.04 रिवा.

''गीता में कृष्ण का नाम लिख दिया है, वह तो हो नहीं सकता। अभी ड्रामा अनुसार तुम्हारी बुद्धि में बैठा है। ... तुमने कितनी बड़ी भूल की है। बाप समझाते हैं - ड्रामा में ऐसा है। जब ऐसे बनो तब तो मैं आऊं।'' सा.बाबा 16.8.04 रिवा.

''कर्म-अकर्म-विकर्म की गहनगति परमात्मा आकर बताते हैं - गीता में भी ये अक्षर हैं। मैं इस तन में प्रवेश करता हूँ, इसलिए इनको भाग्यशाली रथ कहा जाता है। खुद कहते हैं - मैं इनके बहुत जन्मों के अन्त में आता हूँ। गीता में अक्षर एक्यूरेट हैं। गीता को ही सर्व शास्त्र शिरोमणी कहा जाता है।... गीता में भी है - देह सहित देह के सब धर्म छोड़ अपने को आत्मा समझो।'' सा.बाबा 16.11.04 रिवा.

''बच्चों को समझाया गया है - यह है सर्वशास्त्र शिरोमणी गीता का ज्ञान। श्रीमत अर्थात् श्रेष्ठ मत। श्रेष्ठ से श्रेष्ठ मत है एक भगवान की, जिसकी श्रेष्ठ मत से तुम देवता बनते हो। ... पहली-पहली रिलीजस बुक है गीता।... इस गीता ज्ञान द्वारा ही मनुष्य से देवता बने हैं, जो अभी बाप दे रहे हैं। इसको ही भारत का प्राचीन राजयोग कहा जाता है। गीता में ही काम महाशत्रु लिखा हुआ है।'' सा.बाबा 2.12.04 रिवा.

''बाप कहते हैं - काम विकार तुम्हारा महाशत्रु है। आगे भी यह गीता का ज्ञान सुनते थे तब यह सभी बातें समझ में नहीं आती थीं। अभी बाप डायरेक्ट गीता सुनाते हैं। अभी बाप ने तुम बच्चों को दिव्य-बुद्धि दी है, तब तुम समझते हो।''

सा.बाबा 20.12.04 रिवा.

''हर बच्चे का संकल्प है कि जल्दी से जल्दी बाप को प्रत्यक्ष करें। लेकिन ड्रामा में राज़ यह है कि जब तक बच्चे अपने आपको बाप समान जीवन में प्रत्यक्ष नहीं करते तब तक बाप प्रत्यक्ष हो नहीं सकता।'' अ.बापदादा का सन्देश 4.4.05 गुल्जार दादी के द्वारा

Q. बाबा कहते तुम्हारी जीत तब होगी जब गीता का भगवान सिद्ध हो, तो गीता का भगवान कब और कैसे सिद्ध होगा ?

''गीता ज्ञान का पहला पाठ है अशरीरी आत्मा बनो और अन्तिम पाठ है - नष्टोमोहा, स्मृति स्वरूप बनो। ... पहले इस पाठ को स्वयं पढ़ना अर्थात् बनना फिर औरों को निमित्त बन पढ़ाना। ... निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी स्थिति को दुनिया के आगे प्रत्यक्ष रूप में लाओ। इसको कहते हैं बाप समान बनना।'' अ.बापदादा 18.1.87

''श्रीमद्भगवत गीता माता गाई जाती है। भगवान के मुख-कमल से निकला हुआ गीता का ज्ञान। ... यह है संगमयुग, कलियुग से सतयुग, पतित से पावन बनने का युग। इसलिए इसको पुरुषोत्तम संगमयुग कहा जाता है।'' सा.बाबा 23.5.05 रिवा.

यदा यदाहि ... सृजाम्यहं।

बाप ही आकर बताते हैं कि जब-जब दुनिया में धर्म की ग्लानि होती और अधर्म बढ़

जाता है तब मैं आकर अनेक अधर्मों का विनाश कराकर एक सत्य धर्म की स्थापना करता हूँ। धर्म की ग्लानि अर्थात् आत्मिक गुण-धर्मों का ह्रास और अधर्म की वृद्धि अर्थात् देहाभिमान और उसके गुण-धर्मों अर्थात् 5 विकारों की वृद्धि। आत्मा के स्वाभाविक गुण-धर्म ज्ञान, आनन्द, पवित्रता, अहिंसा, प्रेम, दया, आदि हैं। जब आत्मायें उनसे विमुख होकर देह के धर्मों को सबकुछ समझ लेते हैं, जिससे दुनिया में दुख-अशान्ति बढ़ती है, तब परमात्मा आकर अधर्म का नाश कर सत धर्म की स्थापना करते हैं।

''काला मुंह कर लेते हैं। यह है ही काँटों की दुनिया। ... बाप कहते हैं - जब-जब धर्म की ग्लानि होती है, तब मैं आता हूँ। अभी सब हैं तमोप्रधान, आपस में लड़ते रहते हैं। ... बच्चे देही-अभिमानी बनो।'' सा.बाबा 19.1.05 रिवा.

''गीता में है जब-जब धर्म की ग्लानि होती है, अधर्म की वृद्धि हो जाती है तब बाप आते हैं। तो पूछा जाता है किस धर्म की ग्लानि होती है ? जरूर कहेंगे आदि सनातन देवी-देवता धर्म की, जो बाप ने स्थापन किया था। वह धर्म ही प्राय: लोप हो जाता है। उसके बदले अधर्म हो गया है। ... धर्म से अधर्म एक ही होता है और सब धर्म तो ठीक चल रहे हैं। ... विकार में जाने से पतित बन जाते हैं तो अपने को देवता कहला नहीं सकते।'' सा.बाबा 20.8.04 रिवा.

''बाप कहते हैं - जब-जब भारत में धर्म की ग्लानि होती है अर्थात् देवी-देवता धर्म वाले पतित बन जाते हैं तब फिर पावन बनाने हमको आना पड़ता है। यह ड्रामा का चक्र है, जो फिरता रहता है।'' सा.बाबा 20.8.04 रिवा.

परमात्मा की प्रत्यक्षता

परमात्मा हमारा पिता है, हम सभी आत्मायें भाई-भाई हैं। सर्व आत्माओं को अपने बाप का परिचय होगा तब ही सभी उनसे अपना वर्सा ले सकेंगी, इसलिए उसका सबको सन्देश देना, उसकी प्रत्यक्षता करना हम आत्माओं का परम कर्तव्य है। परन्तु वह प्रत्यक्षता तब होगी, जब इस ज्ञान की प्रत्यक्षता होगी। रचता और रचना के ज्ञान की सत्यता ही बाप को प्रत्यक्ष करेगी और ज्ञान तब प्रत्यक्ष होगा, जब वह हमारी धारणा में होगा। परमात्मा को याद तो सभी आत्मायें करती हैं परन्तु परमात्मा के विषय में अनेक भ्रान्तियां हैं, जिसके कारण परमात्मा के साकार में आये हुए भी आत्मायें उनको पहचानने में असमर्थ हैं। उनकी वह असमर्थता सत्य ज्ञान के स्पष्ट होने से ही निकलेगी अर्थात् जब ज्ञान की सत्यता उनकी बुद्धि में प्रत्यक्ष होगी तब ही आत्मायें परमात्मा को पहचानने में समर्थ होंगी। ज्ञान की प्रत्यक्षता करना

हमारा परम कर्तव्य है, जो परमात्मा की प्रत्यक्षता का एकमात्र आधार है।

''साकार ब्रह्मा बाप को देखा! ... आपका कर्म, चलन, चेहरा स्वत: ही सिद्ध करेगा। यह भाषण से नहीं सिद्ध होगा। भाषण तो एक तीर लगाना है लेकिन प्रत्यक्षता तब होगी, जब अनुभव करेंगे - इनको बनाने वाला कौन! रचना, रचता को प्रत्यक्ष करती है।''

अ.बापदादा 15.12.03

''अभी कोई ऐसी निमित्त आत्मा बनाओ जो कोई विशेष कार्य करके दिखाये, जो आपकी तरफ से आपके समान बाप को प्रत्यक्ष करे। परमात्मा की पढ़ाई है, यह मुख से निकले, बाबा-बाबा शब्द दिल से निकले। ... यही एक है, यही एक है ... यह आवाज फैले ... बेधड़क होकर बोले। जिस परमात्मा बाप को सभी पुकार रहे हैं, वे यह ज्ञान दे रहे है।''

अ.बापदादा 15.10.04

''अनुभवों के सागर के तले में जाओ। ... और अन्तर्मुखी बन गुह्य अनुभवों के रत्नों से बुद्धि को भरपूर बनाओ क्योंकि प्रत्यक्षता का समय समीप आ रहा है। सम्पन्न बनो, सम्पूर्ण बनो तो सर्व आत्माओं के आगे से अज्ञान का पर्दा हट जाये।''

अ.बापदादा 8.01.86

''जब आपको अपने बदलने की महसूसता आयेगी तब आप दुनिया को बदल सकेंगे। ... वैसे ही आप सभी भी समझो कि हम लोन लेकर सर्विस के निमित्त आये हैं थोड़े समय के लिए। जब ऐसी स्थिति होगी तब बाप का प्रभाव दुनिया के सामने आयेगा।''

अ.बापदादा 16.10.69

''वे भाषण करने वाले भले ही सभा को हँसा लेते हैं या रुला देते हैं लेकिन अशरीरीपन का अनुभव नहीं करा सकते हैं और न बाप से स्नेह पैदा करा सकते हैं।... हम आत्मा हैं और वह परमात्मा है - जब तक यह अनुभव नहीं कराओ तब तक यह बात सिद्ध कैसे होगी ?''

अ.बापदादा 2.8.73

''सिर्फ प्वाइन्ट्स से गीता का भगवान परमात्मा शिव है, उनकी बुद्धि में नहीं बैठेगा, ... भाषण के साथ अनुभव कराते जाओ तो अनुभव के आगे कोई बात जीत नहीं सकती।''

अ.बापदादा 2.8.73

''ईश्वरीय स्नेह का बीज सर्व को सहयोगी सो सहजयोगी प्रत्यक्षरूप में समय प्रमाण प्रत्यक्ष कर रहा है और करता रहेगा। ... जब सर्व सत्तायें मिलकर एक आवाज़ बुलन्द करें, तब ही प्रत्यक्षता का पर्दा विश्व के आगे खुलेगा। ... सभी मिलकर कहेंगे कि श्रेष्ठ सत्ता ईश्वरीय सत्ता, आध्यात्मिक सत्ता है तो एक परमात्म-सत्ता ही है।'' अ.बापदादा 1.10.87

प्रत्यक्षता और प्रत्यक्ष प्रमाण

किसी चीज की वास्तविकता को सिद्ध करने के लिए प्रमाण की आवश्यकता होती है। ईश्वरीय ज्ञान, ईश्वरीय पालना, ईश्वरीय स्नेह को सिद्ध करने के लिए किस प्रमाण की आवश्यकता है? प्रत्यक्ष प्रमाण सबसे बड़ा प्रमाण है, इसलिए कहा गया है प्रत्यक्ष को प्रमाण की भी आवश्यकता नहीं होती है। अपने जीवन से ईश्वरीय ज्ञान का फल, ईश्वरीय पालना का फल दिखाई दे तब प्रत्यक्षता होगी।

''आपकी जीवन परिवर्तन को देखकर उन्हों में भी परिवर्तन की प्रेरणा आ रही है। प्रत्यक्ष प्रमाण देखा ना। शास्त्र प्रमाण से भी, सबसे बड़ा प्रत्यक्ष प्रमाण है। प्रत्यक्ष प्रमाण के आगे और सब प्रमाण समा जाते हैं।'' अ.बापदादा 1.10.87

''नास्तिक भी अनुभव करते हैं अलौकिक प्यार है वा ईश्वरीय स्नेह है।... ईश्वरीय प्यार है तो वह कहाँ से आया? किरणें सूर्य को स्वत: ही सिद्ध करती हैं। ईश्वरीय प्यार, अलौकिक स्नेह, निस्वार्थ स्नेह स्वत: ही दाता बाप को सिद्ध करता है।''

अ.बापदादा 1.10.87

''ब्रह्माकुमारी अर्थात् ब्रह्मा बाप को प्रत्यक्ष करने वाली कुमारी जो टीचर्स बनती हैं उन्हों को सिर्फ प्वाइन्ट बुद्वि में नहीं रखनी है वा वर्णन करनी है लेकिन प्वाइन्ट रुप बनकर प्वाइन्ट वर्णन करनी है। अगर स्वयं प्वाइन्ट स्थिति में स्थित नहीं होंगे तो प्वाइन्ट का कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।'' अ.बापदादा 25.3.71

''सत्यता की निशानी है सभ्यता। अगर आप सच्चे हो, सत्यता की शक्ति आप में है तो सभ्यता को कभी नहीं छोड़ेंगे। सत्यता को सिद्ध करो लेकिन सभ्यतापूर्वक। ... असभ्यता की निशानी है जिद् और सभ्यता की निशानी है निर्मान।''

अ.बापदादा 15.4.92

''सत्य को सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं है। सत्य ऐसा सूर्य है, जो छिप नहीं सकता। ... सच्चा आदमी कभी अपने को यह नहीं कहेगा कि मैं सच्चा हूँ, दूसरा कहे कि आप सच्चे हो।''

अ.बापदादा 15.4.92

''ऐसे राइट हेण्ड वा राइट भुजा हर कर्म द्वारा बाप को प्रत्यक्ष कर रही है? राइट हेण्ड की विशेषता है, उससे सदा ही शुभ और श्रेष्ठ कर्म होता है। ... ऊंचे ते ऊंचे बाप को प्रत्यक्ष करने के निमित्त ऊंचे ते ऊंचे कर्म हैं।'' अ.बापदादा 16.12.85

Q. ईश्वरीय स्नेह का आधार क्या है?

मन्मनाभव-मध्याजी भव, नष्टोमोहा - स्मृति लब्धा

गीता ज्ञान का सार है नष्टोमोहा, स्मृति स्वरूप परन्तु लौकिक गीता में यह सब पढ़ते हुए न इसका यथार्थ अर्थ समझ में आया, इसलिए आज तक किसी ने भी इस स्थिति को नहीं पाया। गीता ज्ञान का आदि है स्मृति स्वरूप और अन्त अर्थात् पूर्णता है नष्टोमोहा, जो अभी गीता ज्ञान-दाता परमात्मा शिव ने बताया है। जिस राज़ को जानने से हम स्मृति स्वरूप - नष्टोमोहा बने हैं और बन रहे हैं। लौकिक गीता में जब यथार्थ रीति आत्मा का ही ज्ञान नहीं तो स्मृति स्वरूप किस बात में! जब आत्मा और परमात्मा का यथार्थ ज्ञान होगा, उसकी स्मृति होगी तब ही हम अपनी देह और देह की दुनिया से नष्टोमोहा बन सकेंगे। वास्तव में नष्टोमोहा और स्मृति स्वरूप स्थिति भी चक्रवत (Cyclic) है अर्थात् नष्टोमोहा होंगे तो स्मृति स्वरूप बनेंगे और स्मृति स्वरूप बनेंगे तो नष्टोमोहा होंगे।

मन्मनाभव-मध्याजी भव गीता के आदि के महावाक्य हैं और नष्टोमोहा-स्मृतिलब्धा अन्त के महावाक्य हैं। मन्मनाभव-मध्याजी भव की स्थिति के सफल अभ्यास से ही आत्मा नष्टोमोहा-स्मृतिलब्धा स्थिति प्राप्त करती है।

''अभी बाप कहते हैं तुम सिर्फ दो अक्षर अर्थ सहित याद करो। गीता में है मन्मनाभव, मामेकम्। ... अभी तुम रचयिता और रचना दोनों को जान गये हो, तो अभी आस्तिक बन गये हो।'' सा.बाबा 4.11.04 रिवा.

''सदैव अपने आपको देखो कि मैं निराकारी और अलंकारी हूँ - यही है मन्मनाभव, मध्याजीभव।... कोई भी प्रकार का अहंकार होता है तो वह अलंकारहीन बना देता है।''

अ.बापदादा 3.12.70

''तुम बच्चों को कभी भी कोई फिकरात नहीं होनी चाहिए। सब एक्टर्स हैं, सबको एक शरीर छोड़कर दूसरा लेकर पार्ट बजाना ही है। यह बना-बनाया ड्रामा है।... आत्मा में ही सारा पार्ट नूँधा हुआ है, जो समय पर इमर्ज होता है।'' सा.बाबा 20.10.04 रिवा.

''जितना नष्टोमोहा बनेंगे, उतना स्मृति स्वरूप बनेंगे। ... जितना जो स्वयं को बाप के आगे समर्पण करते हैं, उतना ही बाप भी उन बच्चों के आगे समर्पण होते हैं अर्थात् जो बाप का खज़ाना है, वह स्वत: ही उनका बन जाता है।'' अ.बापदादा 24.1.70

''जिसने मन दे दिया, उसकी अवस्था क्या होगी ? मन्मनाभव।... जो मन्मनाभव होगा, उसमें मोह हो नहीं सकता है। तो मोहजीत बनने के लिए अपने वायदे को याद करो।''

अ.बापदादा 18.9.69

''जितना-जितना अव्यक्त स्थिति में स्थित होंगे तो कोई मुख से बोले न बोले लेकिन उनके अन्दर के भाव को पहले से ही जान लेंगे। ... अपने को मेहमान समझेंगे तो फिर व्यक्त में होते हुए भी अव्यक्त में रहेंगे। मेहमान का किसी भी वस्तु या व्यक्ति के साथ लगाव नहीं होता है।''
अ.बापदादा 17.7.69

''व्यक्त भाव में आ जाते हैं, उसका कारण है जो अपने को मेहमान नहीं समझते हैं। वस्तुओं पर भी अपना अधिकार समझते हैं। इसलिए उनमें अटेचमेन्ट हो जाती है। अगर अपने को मेहमान समझो तो फिर यह सभी बातें आपही खत्म हो जायें।''
अ.बापदादा 17.7.69

''हंस और बगुले इकट्ठे रह न सकें। बहुत मुश्किल है। ... फिर क्या करना पड़े। इसमें बड़ी नष्टोमोहा स्थिति चाहिए।''
सा.बाबा 19.5.05 रिवा.

''सर्व आकर्षण समाप्त हो जायें, इसको कहा जाता है - सम्पूर्ण नष्टोमोहा। जिस वस्तु से मोह अर्थात् लगन होती है, वह अपनी तरफ बार-बार आकर्षित करती है।''
अ.बापदादा 24.4.73

''स्मृति-स्वरुप का सुख वा स्मृति-स्वरुप की खुशी का अनुभव क्यों नहीं होता है? उसका मुख्य कारण क्या है? अभी तक सर्व रुपों से नष्टोमोहा नहीं हुए हो। ... नष्टोमोहा ना होने कारण समय और शक्तियां जो बाप द्वारा वर्से में प्राप्त हो रही हैं, उन्हों को भी नष्ट कर देते हो, काम में नहीं ला सकते हो।''
अ.बापदादा 24.5.72

''मन्मनाभव - यह अक्षर तो गीता के ही हैं। भगवान एक ही ज्ञान का सागर, पतित-पावन है। वह कहते - अब मुझे याद करो तो पाप भस्म होंगे। ... परमपिता परमात्मा कहते हैं - काम महाशत्रु है।''
सा.बाबा 21.8.04 रिवा.

गीता और श्रीमत अर्थात् ईश्वरीय मत, दैवी-मत एवं आसुरी-मत

गीता को श्रीमत भगवत् गीता कहा जाता है अर्थात् भगवान की मत। भगवान कब और कैसे मत देते हैं और उस मत हम कैसे समझ सकते हैं - यह एक विचारणीय विषय है। दुनिया में तीन प्रकार की मतें गाई जाती हैं - एक है श्रीमत अर्थात् ईश्वरीय मत, दूसरी है दैवी मत अर्थात् देवताओं की मत अर्थात् सतयुग-त्रेता के देही-अभिमानी मनुष्यों की मत और तीसरी है आसुरी मत अर्थात् देहाभिमानी मनुष्यों की मत। ये तीन प्रकार की मतों का का राज़ परमात्मा ने ही अभी संगमयुग पर बताया हैं। श्रीमत है चढ़ती कला की मत अर्थात् उससे

आत्मा पावन बनती है अर्थात् आत्मा की शक्ति का विकास होता है। दैवी मत और आसुरी मत दोंनो ही मनुष्यों की मतें हैं और दोनों ही उतरती कला की मतें हैं परन्तु दैवी मत से पाप नहीं होता है, इसलिए कलायें उतरने की गति मन्द रहती है। आसुरी मत से पाप-कर्म होते हैं, इसलिए आत्मा को पाप कर्मों के फलस्वरूप दुख भोगना होता है तथा आत्मा की आत्मिक शक्ति की कलायें तेजी से गिरती हैं। दैवी मत वालों को दुख की महसूसता हो नहीं सकती। अभी संगमयुग पर देवी-देवतायें तो हैं नहीं, इसलिए दैवी मत मिल नहीं सकती। अभी है ईश्वरीय मत और आसुरी मत। ईश्वरीय मत से चढ़ती कला और आसुरी मत से गिरती कला होती है।

''भगवानुवाच है भी गीता। गीता-ज्ञान का पुस्तक है गीता परन्तु भगवान कोई पुस्तक हाथ में उठाकर नहीं पढ़ाते हैं। यह तो डायरेक्ट भगवानुवाच है। ... इसको 84 के चक्र का नाटक कहा जाता है। यह बना-बनाया खेल है। ये बड़ी समझने की बातें हैं क्योंकि अभी तुमको ऊंच ते ऊंच भगवान की मत मिलती है।'' सा.बाबा 8.10.04 रिवा.

''अभी तुम ने अनेक मतों और ईश्वरीय मत को भी समझा है। कितना फर्क है। ... कोई भी दैवी मत वा मनुष्य मत से वापस नहीं जा सकते। दैवी मत से भी तुम उतरते ही हो क्योंकि कलायें कम होती जाती हैं। आसुरी मत से भी उतरते हो। परन्तु दैवी मत में सुख है और आसुरी मत में दुख है। ... श्रीमत ही श्रेष्ठ बनाती है।''

सा.बाबा 23.12.04 रिवा.

''सर्व शास्त्र शिरोमणी श्रीमद्भगवत गीता है ईश्वरीय मत की। ईश्वरीय मत, दैवी मत और आसुरी मत का राज़ एक ईश्वर ही बताते हैं, राजयोग की नॉलेज देते हैं। ... सतयुग-त्रेता है ज्ञान का फल, ऐसे नहीं कि वहाँ ज्ञान मिलता है। बाप आकर भक्ति का फल ज्ञान देते हैं। अब एक बाप को याद करो तो सतोप्रधान बन जायेंगे, रचना के आदि-मध्य-अन्त को याद करो तो चक्रवर्ती राजा बन जायेंगे।'' सा.बाबा 23.8.04 रिवा.

''गीता में भी है मन्मनाभव। परन्तु बाप कोई संस्कृत में नहीं बतलाते हैं। बाप मन्मनाभव का अर्थ बताते हैं। देह सहित देह के सर्व धर्म छोड़ अपने को आत्मा निश्चय करो और मुझ बाप को याद करो।'' सा.बाबा 17.10.04 रिवा.

''अभी तुम बच्चों को श्रीमत मिल रही है, श्रेष्ठ बनने के लिए। मनुष्य मत क्या कहती है, ईश्वरीय मत क्या कहती है तो जरूर ईश्वरीय मत पर चलना पड़े।... तुम आसुरी मत पर थे, अभी तुमको ईश्वरीय मत मिलती है।'' सा.बाबा 18.10.04 रिवा.

''एक ईश्वर की मत को ही लीगल मत कहा जाता है, मनुष्य मत को इल्लीगल मत कहा जाता

है। ... सबसे इल्लीगल काम है विकार का भूत। देहाभिमान का भूत तो सब में है ही।... बाप तो है विदेही, बच्चे भी विचित्र हैं। यह समझ की बात है।''

सा.बाबा 22.10.04 रिवा.

''बाबा अपना भकति मार्ग का अनुभव सुनाते हैं ... बुद्धि और तरफ क्यों जाती है? आखरीन विनाश भी देखा, स्थापना भी देखी। साक्षात्कार की आश पूरी हुई, समझा अब नई दुनिया आती है, हम यह बनेंगे। बाकी यह पुरानी दुनिया तो विनाश हो जायेगी। पक्का निश्चय हो गया। ... यह हुई ईश्वरीय बुद्धि। ईश्वर ने प्रवेश कर यह बुद्धि चलाई। ज्ञान कलष माताओं को मिलता है, तो माताओं को ही सबकुछ दे दिया।''

सा.बाबा 16.11.04 रिवा.

''गाया जाता है - मनुष्य मत, ईश्वरीय मत, दैवी मत। अब तुम्हें मिलती है ईश्वरीय मत, जिससे तुम मनुष्य से देवता बनते हो। ... अभी यह पुरुषोत्तम संगमयुग है, जब तुमको श्रीमत मिलती है।''

सा.बाबा 25.11.04 रिवा.

''श्रेष्ठ कर्म से श्रेष्ठ जीवन स्वत: ही बनती है, इसलिए हर कार्य के पहले अपनी चेकिंग करनी है कि वह कर्म श्रीमत के अनुसार है?''

अ.बापदादा 24.1.70

''एक बार अपनी कमियों को बाप के आगे रखने के बाद अगर दुबारा कर लिया तो क्षमा के सागर के साथ 100 गुणा सज़ा भी ड्रामा प्रमाण स्वत: ही मिल जाती है। ... हर कार्य और संकल्प को अव्यक्त बाप से अव्यक्त रूप द्वारा वेरीफाय कराओ। जैसे साकार में वेरीफाइ कराते थे।''

अ.बापदादा 23.10.70

''इनकी एक्टिविटी का मैं ही रेस्पान्सिबुल हूँ। ... कदम-कदम ईश्वरीय डायरेक्शन समझकर चलेंगे तो कभी घाटा नहीं होगा। निश्चय में ही विजय है।''

सा.बाबा 17.1.05 रिवा.

''तुमको एक बाप की मत पर ही चलना है। बी.के. की मत मिलती है, सो भी जांच करनी होती है कि यह मत राइट है वा रांग है? अब तुम बच्चों को राइट और रांग की समझ मिली है।''

सा.बाबा 31.1.05 रिवा.

''तुम बच्चे अब बरोबर भारत को पवित्र बनाने की सर्विस कर रहे हो। तुम हो खुदाई खिज़मतगार। तुम्हारी बाप से प्रीत है। बाप की श्रीमत पर चलते हो, तब श्रीमत भगवत् गीता गाई हुई है। भगवान कोई शास्त्र नहीं पढ़ेगा। कोई भी धर्म स्थापक कब शास्त्र नहीं उठाते हैं। उनके पास जो नॉलेज है, वही सुनायेंगे।''

सा.बाबा 19.2.07 रिवा.

''श्रीमत मगवत् गीता है ना। और कोई शास्त्र में श्रीमत है नहीं। श्रीमत माना श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ मत।

... विद्वानों ने तो जन्म-मरण से रहित की गाई हुई गीता में पूरे 84 जन्म लेने वाले का नाम डाल दिया है। ... पहले-पहले है शिव जयन्ति, फिर होती है कृष्ण जयन्ति।''

सा.बाबा 16.1.07 रिवा.

''भल कोई दुश्मन हो परन्तु उनसे भी मित्रता रखनी है। ... तुमने ईश्वर पर कितना अपकार किया फिर भी ईश्वर तुम पर कितना उपकार करते हैं। ईश्वर का अपकार होना भी ड्रामा में नूँध है। तब तो कहते हैं - यदाहि यदाहि ... आया भी भारत में है।''

सा.बाबा 17.7.07 रिवा.

''अभी सब वर्ण पूरे हुए, अब फिर रिपीट होगा अर्थात् गीता एपीसोड रिपीट हो रहा है। पहले-पहले श्रीमत भगवान की गाई हुई है। ... परमपिता परमात्मा ही राजयोग सिखलाते हैं।''

सा.बाबा 18.7.07 रिवा.

''बाबा कहते हैं - मुझे याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। गीता के अक्षर कितने क्लीयर हैं। बाबा ने कहा भी है - मेरे जो भक्त हैं, वे गीता-पाठी होंगे, वे कृष्ण के पुजारी जरूर होंगे। तब बाबा कहते हैं यह ज्ञान देवताओं के पुजारियों को सुनाना है। ... कहानी तो इजी है, जो गीता में लिखी है।''

सा.बाबा 25.6.04 रिवा.

निश्चयबुद्धि विजयन्ति और संशयबुद्धि विनश्यन्ति

विनाशकाले परमात्मा से प्रीतबुद्धि विजयन्ति और विपरीत बुद्धि विनश्यन्ति

निश्चयबुद्धि विजयन्ति, संशयबुद्धि विनश्यन्ति। विनाशकाले प्रीतबुद्धि विजयन्ति, विप्रीत बुद्धि विनश्यन्ति - ये अक्षर गीता से ही सम्बन्ध रखते हैं। लौकिक गीता में भी ये अक्षर हैं और परमात्मा पिता ने भी इन शब्दों को प्रयोग किया है और निश्चयबुद्धि-संशयबुद्धि, प्रीतबुद्धि-विपरीत बुद्धि का यथार्थ अर्थ समझाया है।

निश्चयबुद्धि की सदा विजय होती है। इस सत्य के आध्यात्मिक जगत में और भौतिक जगत में ऐसे अनेक उदाहरण हैं, जिनमें असम्भव जैसे कार्य को भी निश्चय के आधार पर सम्भव कर दिखाया। परमात्मा ने भी इस ज्ञान मार्ग में सफलता में निश्चय का महत्वपूर्ण स्थान बताया है। निश्चय के लिए बाबा ने कहा है कि परमात्मा में निश्चय, अपने आप में निश्चय, ड्रामा में निश्चय के साथ-साथ परमात्मा के हर महावाक्य में भी निश्चय परमावश्यक है। निश्चय

के आधार पर विष भी अमृत हो जाता है और अमृत भी विष का काम करता है। ऐसे ही जिस कार्य के लिए अपने अन्दर संशय होता है, वह सहज कार्य भी कठिन हो जाता है और उसमें पूर्ण सफलता नहीं होती है। ज्ञान मार्ग में सफलता पूर्वक जीवन उसका ही चलेगा, जिसको ये सब निश्चय होंगे अन्यथा जीवन में उतार-चढ़ाव आते ही रहेगे।

जीवन में सच्चे सुख और सफलता के लिए उपर्युक्त चारो बातों में निश्चय के साथ इस दैवी परिवार में भी निश्चय आवश्यक है, जिससे दैवी परिवार का सहयोग और दुआयें भी मिलती हैं फिर भी सहारा एक बाप को ही बनाना है, दैवी परिवार की किसी आत्मा को नहीं। आध्यात्म मार्ग पर विचार करें तो सर्वव्यापी का सिद्धान्त विशेष भारत में और आम सारी दुनिया में प्रचलित है और हम सबको ज्ञान सागर परमात्मा से सत्य ज्ञान मिला है, फिर भी हम उस सिद्धान्त को काट नहीं पा रहे हैं अर्थात् उसके मानने वालों के सामने अपने सत्य सिद्धान्त को सिद्ध नहीं कर पा रहे हैं और वास्तविकता तो ये है कि ज्ञान मार्ग वाले भी सर्वव्यापी के सिद्धान्त को उसके मानने वालों के सामने उठाने में कतराते हैं। इस असत्य सिद्धान्त की सफलता के विषय में विचार करेंगे तो उसमें निश्चय की ही मूल भूमिका है। इस सिद्धान्त के प्रणेता शंकराचार्य को परमात्मा के सर्वव्यापी होने का पूर्ण निश्चय हुआ और उसने उस निश्चय के आधार पर वह सबके सामने रखा और लोग उसको मानने के लिए बाध्य हो गये। इस सिद्धान्त के विषय में तर्क करने वालों को भी हम देखें तो वे कितने निश्चय से उसके सम्बन्ध में बोलते हैं। हमको भी अपने सत्य सिद्धान्त के प्रचार-प्रसार में दृढ़ निश्चय और निर्भय होकर सबके सामने रखना होगा। इसके लिए भी साकार बाबा ने अनेक बार महावाक्य उच्चारण किये हैं और अव्यक्त बापदादा भी करते रहते हैं। ये निश्चय और परमात्मा के साथ प्रीत ही इस जीवन की सफलता का मूलाधार है।

''अगर एक बाप से सर्व प्राप्ति का सम्बन्ध, सर्व सम्बन्धों का अनुभव और सदा सहारे-दाता का अटल विश्वास और निश्चय है तो बापदादा निराकार-आकार होते भी स्नेह के बन्धन में बाँधे हुए हैं। ... भक्ति मार्ग में भी मीरा को साक्षात्कार नहीं लेकिन साक्षात् आनुभव हुआ तो क्या ज्ञान सागर के डायरेक्ट ज्ञान स्वरूप बच्चों को साकार रूप में सर्व प्राप्ति के आधार मूर्त, सदा सहारे दाता बाप का अनुभव नहीं हो सकता। फिर सर्वशक्तिवान को छोड़कर यथा-शक्ति आत्माओं को सहारा क्यों बनाते हो। यह भी एक गुह्य कर्मों का हिसाब बुद्धि में रखो। कर्मों का हिसाब कितना गुह्य है, इसको जानो।''

अ. बापदादा 8.4.82

यदि परमात्मा का बनकर भी यथाशक्ति आत्माओं का सहारा लेते हैं तो ये भी परमात्मा का नाम बदनाम करना है और उस विकर्म का भी फल उस आत्मा को मिलेगा और

परमात्मा का सहारा भी छूट जायेगा क्योंकि परमात्मा की मदद उसको ही मिलती है, जो उस पर श्रद्धा और विश्वास रखते हैं।

''यह जो लक्ष्य रखते हो कि कहाँ-कहाँ सर्विस के कारण झुकना पड़ेगा। यह लक्ष्य ही राँग है। इस लक्ष्य में ही कमजोरी भरी हुई है। जब बीज ही कमजोर है तो फल क्या निकलेगा। कोई भी नई स्थापना करने वाला यह नहीं सोचता है कि कुछ झुककर के करना है।''

अ.बापदादा 18.4.71

''अगर निश्चय हो कि भगवान बाप हमको पढ़ाते हैं तो अपार खुशी रहनी चाहिए।... अपन को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो तो मैं गारन्टी करता हूँ कि तुम 21 जन्म कभी रोगी नहीं बनेंगे। ... इस याद से पाप भस्म होते जायेंगे।'' सा.बाबा 7.5.05 रिवा.

''पढ़कर ऊंच बनना चाहिए। दिलशिकस्त क्यों होते हो कि सभी थोड़ेही राजायें बनेंगे! यह ख्याल आया, फेल हुआ। स्कूल में बैरिस्टरी, इन्जीनियरिंग आदि पढ़ते हैं तो ऐसे कहेंगे क्या कि सब थोड़ेही बैरिस्टर बनेंगे।'' सा.बाबा 9.5.05 रिवा.

किसी भी कार्य की सफलता-असफलता में निश्चय की महत्वपूर्ण भूमिका है। ऐसे ही इस पुरुषार्थी जीवन में सफलता के लिए परमात्मा से प्रीतबुद्धि होना भी आवश्यक है। परमात्मा से प्रीत उसकी ही जुटेगी, जिसको उस पर पूरा निश्चय होगा। परमात्मा से प्रीतबुद्धि होने के कारण उसको सर्वशक्तिवान परमात्मा की मदद मिलेगी, जिससे उसके जीवन में असफलता कभी हो नहीं सकती अर्थात् उसके जीवन में कभी दुख की महसूसता आ नहीं सकती।

''रुहानी सेना सदा विजय के निश्चय और नशे में रहते हैं ना!... रुहानी सेना, शक्ति सेना सदा इस निश्चय के नशे में रहते हैं कि न सिर्फ अब के विजयी हैं लेकिन कल्प-कल्प के विजयी हैं।... अभी भी भक्त गायन करते हैं।... प्रीतबुद्धि विजयन्ति।''

अ.बापदादा 27.02.86

''गाया भी जाता है विनाशकाले विपरीत बुद्धि विनश्यन्ति ... अभी तुम्हारी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार प्रीतबुद्धि है। पूरी नहीं है क्योंकि माया घड़ी-घड़ी भुला देती है।''

सा.बाबा 28.9.04 रिवा.

''बाप के साथ वर्सा भी याद आना चाहिए। ... बेहद के बाप का वर्सा है ही स्वर्ग। बाप स्वर्ग की स्थापना करते हैं तो बाप की श्रीमत पर चलना पड़े। ... बाप आते हैं विनाशकाले प्रीतबुद्धि बनाने। ... बाप आते ही हैं संगमयुग पर जब दुनिया को बदलना है।''

सा.बाबा 15.10.04 रिवा.

''विनाश काले प्रीत बुद्धि और विप्रीत बुद्धि - यह याद के लिए कहा जाता है। ... प्रीत भी

अव्यभिचारी चाहिए। ... बाबा से प्रीत रखते-रखते जब कर्मातीत अवस्था होगी तब यह शरीर छूटेगा और लड़ाई लगेगी।... जब सबकी प्रीत बुद्धि हो जाती है, उस समय फिर विनाश होता है।''

सा.बाबा 12.5.05 रिवा.

''पूरा निश्चयबुद्धि बनना है। बाप हमारा साथी है, बाबा सदा मददगार है। निश्चयबुद्धि विजयन्ति। ... यह सदा स्मृति में रख कदम उठाओ तो फिर सदा सिद्धि-स्वरूप हो जायेंगे। अगर विधि यथार्थ है तो कोई संकल्प, बोल वा कर्म में सिद्धि न हो, यह हो ही नहीं सकता।''

अ.बापदादा 6.8.72

''चैलेन्ज की है ना 4 वर्ष की। जब यह बातें सुनते हो तो थोड़ा-बहुत संकल्प चलता है कि - 'अगर सचमुच नहीं हुआ तो, यह भी हो सकता है कि 4 वर्ष में ना हो'... इसका मतलब यह है कि संकल्प में कुछ है तब तो आता है।... ऐसे नहीं कि 4 वर्ष में कम्पलीट विनाश हो जायेगा। नहीं, 4 वर्ष में ऐसे नजारे हो जायेंगे, जिससे लोग समझेंगे कि बरोबर यह विनाश हो रहा है।''

अ.बापदादा 2.8.72

''जब विजय निश्चित है तो निश्चिन्त रहेगा ना। कोई भी बात में चिन्ता की रेखा दिखाई नहीं देगी। ऐसे निश्चयबुद्धि विजयी, निश्चित और सदा निश्चिन्त रहने वाले हो ?...बाप में निश्चयबुद्धि के साथ-साथ अपने आप में भी निश्चयबुद्धि होने चाहिए और साथ-साथ जो भी ड्रामा के हर सेकेण्ड की एक्ट रिपीट हो रही है, उसमें भी 100 प्रतिशत निश्चयबुद्धि चाहिए - इसको कहा जाता है निश्चयबुद्धि।''

अ.बापदादा 27.2.72

''जैसे प्रीत बुद्धि चलते-फिरते बाप, बाप के चरित्र और बाप के कर्तव्य की स्मृति में रहने से बाप के मिलने का प्रक्टिकल अनुभव करते हैं, वैसे विपरीत बुद्धि वाले विमुख होने से सूक्ष्म सज़ाओं का अनुभव करेंगे।... उनके सीरत से हरेक अनुभव कर सकेंगे कि इस समय यह आत्मा सज़ा भोग रही है। कितना भी अपने को छिपाने की कोशिश करेंगे लेकिन छिपा नहीं सकेंगे।''

अ.बापदादा 2.2.72

''अगर ज़रा भी गफलत की तो जैसे कहावत है - एक का सौ गुणा लाभ भी मिलता है और एक का सौ गुण दण्ड भी मिलता है, यह बोल अभी प्रैक्टिकल में अनुभव होने वाले हैं। इसलिए सदा बाप के सम्मुख, सदा प्रीत बुद्धि बनकर रहो।''

अ.बापदादा 2.2.72

''जब माया से हार खाते हो तो क्या प्रीत बुद्धि हो ? प्रीत बुद्धि अर्थात् विजयी।...प्रीत बुद्धि बाला कब श्रीमत के विपरीत एक संकल्प भी नहीं उठा सकता।... प्रीत बुद्धि अर्थात् बुद्धि की लगन वा प्रीत एक प्रीतम के साथ सदा लगी हुई हो। जब एक के साथ सदा प्रीत है तो अन्य

किसी भी व्यक्ति वा वैभवों के साथ प्रीत जुट नहीं सकती, क्योंकि प्रीत बुद्धि अर्थात् सदा बापदादा को सम्मुख अनुभव करेंगे।'' अ.बापदादा 2.2.72

''जो अपने में 100 प्रतिशत निश्चयबुद्धि हैं, उनकी कब हार नहीं हो सकती। ... हिम्मत के साथ उल्हास भी चाहिए, जिससे दूर से ही मालूम हो कि इन्हों के पास कोई विशेष प्राप्ति है।''

अ.बापदादा 1.8.71

''अगर अटेन्शन कम रहता है तो चेहरे पर टेन्शन की रेखायें दिखाई पड़ती हैं। ... कोई भी बात मुश्किल लगती है तो कोई कमी है जरूर। अपने आप में निश्चय बुद्धि बनने में कब कुछ कमी कर लेते हो।'' अ.बापदादा 11.7.71

''सपूत तो हो ही।... सपूत बच्चे हैं तब तो श्रीमत पर चल रहे हैं। बाकी रही सबूत दिखाने की बात, वह तो यथा शक्ति दिखा रहे हैं और दिखाते रहेंगे। जितना बाप बच्चों में निश्चयबुद्धि हैं, बच्चे अपने में निश्चयबुद्धि कम हैं। इसलिए हर कार्य में विजय हो, वह रिजल्ट कब-कब दिखाई देती है।'' अ.बापदादा 22.6.71

''भट्ठी में पड़े पूंगर सेफ रहे, आप इस निश्चय से क्यों नहीं कहते ? अगर योग-युक्त हैं, तो भल नजदीक वाले स्थान पर नुकसान भी होगा, पानी आ जायेगा लेकिन बाप द्वारा जो निमित्त बने हुए स्थान हैं, वे सेफ रह जायेंगे, यदि अपनी गफलत नहीं है तो। अगर अभी तक कहीं भी नुकसान हुआ है, तो वह अपनी बुद्धि की जजमेन्ट की कमजोरी के कारण हुआ है।''

अ.बापदादा 13.9.74

''कमजोर संकल्प करना अर्थात् स्वयं में संशय का संकल्प... कमजोरियों के रूप में एक भूत के साथ और माया के भूतों का आह्वान करते हो अथवा बुद्धि में स्थान देते हो।... भय के भूत को भी जब तक बुद्धि से नहीं निकाला तब तक इस भूत के साथ बाप की याद बुद्धि में कैसे रह सकती है ? ... निश्चयबुद्धि विजयन्ति।'' अ.बापदादा 4.7.74

''बाप कहते हैं - विनाश काले प्रीतबुद्धि और विनाश काले विप्रीत बुद्धि। विनाश तो इस समय ही होना है। बाप आते हैं संगमयुग पर, जब चेन्ज होती है।... बाप बड़ा व्यापारी भी है। बिरला ही कोई बाप से व्यापार करे। इस व्यापार में अथाह फायदा है।''

सा.बाबा 30.12.04 रिवा.

''अभी तुम्हारी है चढ़ती कला। बाप घड़ी-घड़ी कहते - मन्मनाभव। गीता में भी ये अक्षर हैं परन्तु उनका अर्थ कोई भी सुना नहीं सकेंगे। वास्तव में उसका अर्थ लिखा हुआ भी है - अपने को आत्मा समझ, देह के सब धर्म छोड़ मामेकम् याद करो। ... पहले ये पक्का निश्चय करो कि हम आत्मा हैं, शरीर नहीं। बाप ने हमको एडॉप्ट किया है।''

सा.बाबा 1.9.04 रिवा.

''निश्चय का फाउण्डेशन में विशेष चार बातों का सम्पूर्ण निश्चय चाहिए। एक तो बाप में सम्पूर्ण निश्चय ... अपने में निश्चय अर्थात् अपने श्रेष्ठ स्वमान, श्रेष्ठ भाग्यवान आत्मा स्वरूप को जानना, मानन और चलना। ... अपने श्रेष्ठ ब्राह्मण परिवार में निश्चय अर्थात् ब्राह्मण परिवार जैसा है, वैसा जानना, मानना और चलना ... चौथी बात सारे कल्प में इस श्रेष्ठ पुरुषोत्तम संगमयुग के समय को, उसी महत्व से जानना, मानना और चलना ... उसको कहेंगे सम्पूर्ण निश्चयबुद्धि।'' (बाप में सम्पूर्ण निश्चय होगा तो उसके हर महावाक्य में निश्चय अवश्य ही होगा)

अ.बापदादा 15.4.92

''ब्राह्मण अर्थात् निश्चयबुद्धि और निश्चयबुद्धि अर्थात् विजयी। तो हर एक ब्राह्मण निश्चयबुद्धि कहाँ तक बने हैं और विजयी कहाँ तक बने हैं। क्योंकि ब्राह्मण जीवन का फाउण्डेशन है निश्चय और निश्चय का प्रमाण है विजय।''

अ.बापदादा 15.4.92

''अभी तुम सम्पूर्ण नहीं बने हो, बनना है जरूर। ... बाप को सर्वशक्तिवान कहेंगे, लक्ष्मी-नारायण को नहीं कहेंगे। शक्ति की बात अभी ही होती है। अभी तुम बाप से शक्ति ले राजाई ले रहे हो। ... निश्चय से ही विजय होती है। निश्चय भी पक्का होना चाहिए।''

सा.बाबा 10.4.07 रिवा.

प्रश्नावली

बापदादा ने अनेक बार मुरलियों में हम सभी ब्रह्मा वत्सों को चैलेन्ज किया है कि तुम गीता का भगवान सिद्ध करो अर्थात् गीता का भगवान कौन हो सकता है अर्थात् साकार मनुष्य शरीरधारी श्रीकृष्ण, जैसे कि मनुष्य मात्र की अवधारणा प्रचलित है या ज्ञान सागर निराकार परमात्मा शिव, जैसा कि अभी परमात्मा शिव के द्वारा हमने जाना है। बाबा ने कहा है - इस बात को सिद्ध करने में ही तुम्हारी जीत है। जब इस बात को सिद्ध करने के विषय में सोचते हैं तो तीन प्रकार के प्रश्न बुद्धि में बिजली की तरह कौंध जाते हैं, जिन पर विचार करना अति आवश्यक है। वे तीन प्रकार के प्रश्न हैं -

1. परस्पर विचारणीय प्रश्न
2. स्वयं से स्वयं ही पूछने योग्य प्रश्न
3. जनता जनार्दन से पूछे जाने वाले प्रश्न

परस्पर विचारणीय प्रश्न

1. गीता ज्ञान दाता कौन है ? क्या ये किसी न्यायालय में सिद्ध होगा ?

क्या कोई लौकिक दुनिया वाला जज, जो नष्टोमोहा-स्मृति स्वरूप स्थिति में न हो, वह ये निर्णय कर सकता है कि गीताज्ञान-दाता श्रीकृष्ण नहीं, निराकार परमात्मा शिव हैं ?

दुनिया में भी केस किया जाता है दूसरों को हराने के लिए, नीचा दिखाने के लिए। गीता ज्ञानदाता, सर्व के कल्याणकारी परमात्मा ने गीता ज्ञान किसको हराने या नीचा दिखाने के लिए नहीं दिया है। परमात्मा ने गीता ज्ञान दिया है सर्व आत्माओं के कल्याण के लिए। बाबा ने किसको हराने के लिए या नीचा दिखाने के लिए कभी नहीं कहा है। बाबा ने गीता ज्ञान और गीता ज्ञानदाता को सिद्ध करने के लिए कहा है। इसलिए इस बात पर विचार करना अति आवश्यक है कि गीता ज्ञान दाता कब और कैसे सिद्ध होगा ?

आध्यात्म या धर्म किसको हराना नहीं सिखाता। आध्यात्म या धर्म दूसरों का कल्याण करना सिखाता है। जो दूसरों को हराने का संकल्प करता, वह स्वयं ही हारा हुआ है क्योंकि आध्यात्म में किसको हराने का कोई प्रश्न ही नहीं। यथार्थ आध्यात्मिक व्यक्ति किसको हराने का संकल्प भी नहीं कर सकता है। बाबा ने हमको हराने की भावना रखकर अपना नहीं बनाया, बाबा ने हमारे कल्याण की भावना से अपना बनाया है। बाबा ने प्यार से अपना बनाया है। बाबा ने हमको अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित करके, अपने स्वरूप का अनुभव कराकर अपना बनाया है। यही गीता ज्ञानदाता को सिद्ध करने का यथार्थ और सफल मार्ग है और इससे ही गीता ज्ञान-दाता सिद्ध होने वाला है, किसी न्यायालय में नहीं।

किसी भी धर्मपिता ने अपनी बात को सिद्ध करने के लिए पहले वालों पर केस नहीं किया है, उसने अपनी बात कही है, केस दूसरों अर्थात् पहले वालों ने उस पर किये हैं और वे स्वयं ही हारे हैं या अन्त में उन्होंने ही पश्चाताप किया है। शंकराचार्य को मण्डन मिश्र ने चेलेन्ज किया, शंकराचार्य ने नहीं और जब शंकराचार्य से मण्डन मिश्र हार गये तब उसकी पत्नि ने अपने पति का पक्ष लेते हुए शंकराचार्य को चेलेन्ज किया, जिसके उत्तर के लिए शंकराचार्य ने परकाया प्रवेश किया और अनुभव करके उसके उत्तर को दिया, जिसके बाद मण्डन मिश्र शंकराचार्य के आगे समर्पित हो गये। शंकराचार्य की भावना उनको हराने की नहीं थी, उनके कल्याण की, उनके सामने सत्य को सिद्ध करने की थी। भले ही अभी हमको ज्ञान सागर परमात्मा पिता ने जो ज्ञान दिया है, उससे समझते हैं कि शंकराचार्य ने जो बात कही, वह भी यथार्थ सत्य नहीं था परन्तु शंकराचार्य को उस पर पूर्ण निश्चय था, इसलिए उस निश्चय और कल्याण की भावना ने उनको विजय दिलाई। ऐसे ही गीता ज्ञान-दाता को गीता ज्ञान का

अनुभवी, गीता ज्ञान की यथार्थ धारणा वाला ही सिद्ध कर सकेगा। अनुभवी अर्थात् नष्टोमोहा, स्मृति स्वरूप स्थिति वाला और निश्चयबुद्धि आत्मा। अब हम अपने दिल पर हाथ रखकर देखें कि हमारी ऐसी स्थिति है? शिवबाबा ने अनेक बार कहा है कि जैसे ब्रह्मा बाबा ने तुमको अनुभव कराया, वैसे तुम औरों को कराओ, बाप समान बनो।

Q. नष्टोमोहा-स्मृति स्वरूप, निश्चयबुद्धि-विजयन्ति की स्थिति क्या है और हम उस स्थिति में कहाँ तक स्थित हैं?

इस सत्य को चेक करके स्थिति धारण करने वाला ही गीता ज्ञानदाता को सिद्ध कर सकेगा। इसीलिए बाबा ने जहाँ और जिस मुरली में गीता ज्ञानदाता को सिद्ध करने की बात कही है, वहाँ ही और उसी मुरली में हमारी स्थिति कैसी हो, वह बात भी कही है। उस स्थिति वाला ही गीता के भगवान को सिद्ध कर सकेगा।

देह सहित देह की दुनिया से नष्टोमोहा और अपने अनादि-अविनाशी आत्मिक स्वरूप में स्थित होना ही नष्टोमोहा-स्मृति स्वरूप की स्थिति है। स्मृति-स्वरूप अर्थात स्वरूप में स्थित होने के लिए सोचना या संकल्प भी न करना पड़े, स्वाभाविक स्थिति हो, जैसे ब्रह्मा बाबा की थी। उस स्थिति के लिए अभीष्ठ पुरुषार्थ है - मन्मनाभव-मध्याजीभव।

दूसरी बात बाबा ने कामजीत जगतजीत की कही है। लौकिक गीता में भी कामोपजायते क्रोधः... की बात कही गई है। काम की परिभाषा काम अर्थात् विषयभोग भी की गई है और काम अर्थात् कामना भी कहा गया है। बाबा ने भी कहाँ-कहाँ काम की परिभाषा कामना से की है। यदि हम सच्चे दिल से गीता ज्ञान और गीता ज्ञान-दाता को सिद्ध करना चाहते हैं तो हम अपने को चेक करें कि हम कामजीत और कामनाजीत हैं? किसको हराने का संकल्प भी एक कामना है और वह संकल्प भी हमको विजयी बनने नहीं देगा।

जो गीता पाठी हैं या गीता को मानने वाले हैं, उनको हमारे शब्द गीता की सत्यता का, अपने स्वरूप का आभास कराये। आत्मिक स्वरूप में सहज स्थिति ही आत्मा की पवित्रता का प्रतीक है। ब्रह्मचर्य की धारणा तो आत्मिक स्वरूप में स्थिति अर्थात् पवित्रता की मंजिल की एक पौड़ी(Step) मात्र है। एक छोटा बच्चा ब्रह्मचारी हो सकता है परन्तु पूर्ण पवित्र नहीं क्योंकि आत्मा में अपवित्रता के संस्कार तो रहते ही हैं, भल वह बच्चा अंग छोटे और बाह्य ज्ञान से अनभिज्ञ होने के कारण विकारों की ओर आकर्षित नहीं होता परन्तु वह आत्मिक स्वरूप में स्थित नहीं हो सकता है। आत्मिक स्वरूप रोग-शोक, दुख-दर्द सबसे मुक्त, जीवनमुक्त है। अब हम अपने को चेक करें, हम कामजीत कहाँ तक बने हैं अर्थात् गीता ज्ञान का स्वरूप कहाँ तक बने हैं और कैसे गीता-ज्ञान और गीता ज्ञान-दाता को सिद्ध करेंगे।

Q. क्या गीता का भगवान किसी लौकिक न्यायालय में सिद्ध होगा ? या ये भी पुरुषार्थ की एक विधि है, जिसके द्वारा बाबा पुरुषार्थ के लिए प्रेरित करते हैं, जिससे सर्व आत्माओं को बाप का सन्देश मिले ?

''अभी प्रत्यक्षता का प्लेन है - प्रैक्टिकल जीवन। बाकी प्रोग्राम्स करते हो, वह तो बिजी रहने के लिए बहुत अच्छा है लेकिन प्रत्यक्षता होगी आपके चलन और चेहरे से।''

अ.बापदादा 15.12.03

''अभी आप लोगों ने बापदादा की एक आशा पूरी नहीं की है। की है ? ... गीता के भगवान पर हिलाकर दिखाओ। ... थोड़ा-थोड़ा रिहर्सल तो करो, हिलाकर देखो क्या कहते हैं।''

अ.बापदादा 31.12.03 जूरिस्ट विंग

''बापदादा की एक बात अभी तक कोई भी वर्ग वाले ने नहीं की है। याद है, कौन सी ? (गीता के भगवान की) ये गीता वाली बात छोड़ो, वह तो बापदादा ने कहा भी है कि यह बात बहुत श्रेष्ठ है परन्तु यह बहुत सम्भाल कर करनी है। पहले एक ग्रुप ऐसा तैयार करो जो आपके साथी बनें। वे माइक बनें और आप माइट बनो। ...अभी बापदादा की सभी बच्चों को यही शुभ राय वा श्रीमत है कि ऐसा ग्रुप तैयार करो, जो यह आवाज़ फैलाये कि यही परमात्म कार्य है। निर्भय होकर, नि:संकोच होकर बाप को प्रत्यक्ष करे। दृढ़ता से बोले, अथॉरिटी से बोले। आजकल के जमाने में स्थूल अथॉरिटी भी काम में आती है। लौकिक अथॉरिटी और परमात्म अथॉरिटी दोनों अथॉरिटी वाले आवाज़ फैला सकते हैं।''

अ.बापदादा 2.02.04

''अपने नॉलेजफुल स्वरूप को प्रत्यक्ष करना है। अभी समझते हैं कि शान्ति स्वरूप आत्मायें हैं, यह स्वरूप प्रत्यक्ष हुआ भी है और हो भी रहा है लेकिन नॉलेजफुल बाप की नॉलेज है तो यही है। अब यह आवाज़ हो। ... सबके मुख से आवाज़ निकले कि सत्य ज्ञान है तो यही है।''

अ.बापदादा 9.3.85

बाबा ने हमको आत्मा, परमात्मा, सृष्टि-चक्र, कल्प-वृक्ष, कर्मों की गुह्य गति, विभिन्न धर्मों आदि का जो ज्ञान दिया है, उसकी सत्यता सिद्ध होगी तब ही गीता ज्ञान दाता सिद्ध होगा। उसके लिए पहले वह ज्ञान हम सब बच्चों की बुद्धि में स्पष्ट हो, उस पर पूरा निश्चय हो, उसकी जीवन में धारणा हो तब ही वह गीता-ज्ञान दूसरों की बुद्धि में बैठेगा और जब उस ज्ञान की सत्यता को अनुभव करेंगे तो गीता का भगवान स्वत: ही सिद्ध हो जायेगा। हम अपने दिल से पूछें - हमको ज्ञान की सत्यता पर कहाँ तक निश्चय है और वह हमारे जीवन में कहाँ तक प्रैक्टिकल में है। जब वह ज्ञान हमारे जीवन में प्रक्टिकल में होगा, तब ही हम गीता के

भगवान को सिद्ध कर सकेंगे। जैसे ब्रह्मा बाबा ने ज्ञान को अपने जीवन से प्रत्यक्ष किया, ऐसे ही जब ज्ञान हमारे प्रैक्टिकल जीवन से प्रत्यक्ष होगा, तब ही सत्य ज्ञान का दाता अर्थात् गीता ज्ञानदाता परमात्मा प्रत्यक्ष होगा। बाबा के महावाक्य हैं - निश्चयबुद्धि विजयन्ति।

''तुम्हारा फर्ज़ है मनुष्य मात्र को यह पैगाम देना कि यह पुरुषोत्तम संगमयुग है। बेहद का बाप बेहद का वर्सा देने आया है। बाप कहते हैं - मामेकम् याद करो तो विकर्म विनाश होंगे, पाप कट जायेंगे। यह है सच्ची गीता।'' सा.बाबा 15.4.04 रिवा.

Q. क्या कोई लौकिक दुनिया वाला जज ये निर्णय कर सकता है कि गीता का भगवान श्रीकृष्ण नहीं, निराकार परमात्मा शिव है ?

नहीं। जिसको यथार्थ गीता ज्ञान का ही पता नहीं तो उस ज्ञान का दाता कौन है, वह इसका निर्णय कैसे दे सकता है।

Q. सत्य-असत्य का निर्णय कोई कब और कैसे कर सकता है ?

ज्ञान की सत्यता-असत्यता का अथवा किन्हीं दो पक्षों में यथार्थ का निर्णय वही कर सकता है, जिसको दोनों पक्षों का ज्ञान हो, उसकी स्थिति साक्षीदृष्टा अर्थात् वह किसी एक पक्ष के लगाव से मुक्त हो।

Q. क्या वह समय आयेगा जब कोई ब्रह्मा कुमार-कुमारी लौकिक दुनिया में किसी उच्च या उच्चतम न्यायालय में जज बनेगा और उसके सामने गीता ज्ञान के विषय में केस जायेगा और वह निर्णय देगा कि गीता ज्ञानदाता श्रीकृष्ण नहीं निराकार परमपिता परमात्मा शिव है ?

नहीं। उपयुक्त सब बातों पर विचार करके ही इस बात निर्णय किया जा सकता है कि गीता का भगवान श्रीकृष्ण नहीं है, निराकार ज्ञानसागर परमात्मा शिव है - कैसे सिद्ध होगा अर्थात् यह सत्य किसी न्यायालय में सिद्ध होगा या पब्लिक कोर्ट अर्थात् जनता जनार्दन के बीच में सिद्ध होगा, ये बात विचारणीय है।

हमारा विवेक तो कहता है कि गीता का भगवान किसी न्यायालय में सिद्ध नहीं होगा और न लौकिक दुनिया का कोई जज, जो स्वयं ही यथार्थ गीता ज्ञान और गीता ज्ञान-दाता को नहीं जानते, वे 'गीता ज्ञान-दाता कौन' का निर्णय कर सकते। ये जन-साधारण का कोर्ट (Public Court) है, जहाँ गीता ज्ञान-दाता कौन ? सिद्ध होगा। जैसे ब्रह्मा बाबा ने शिवबाबा को अपने स्वरूप से प्रत्यक्ष किया, उनके कर्मों से शिवबाबा के कर्म प्रत्यक्ष हुए। ऐसे ही बच्चों को गीता-ज्ञान की यथार्थ धारणा से गीता-ज्ञान और गीता ज्ञान-दाता को सिद्ध करना होगा। जब हम बाप समान 'नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप' बनेंगे तो गीता का भगवान स्वत: ही सिद्ध हो जायेगा।

जब हम अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होंगे तो हमारे आत्मिक स्वरूप की स्थिति के प्रभाव से वे अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित हो जायेंगे और ज्ञान की सत्यता महत्ता को अनुभव करेंगे। हमारे आत्मिक स्वरूप में स्थित होंने से उनको साक्षात्कार हो सकता है। जैसे ब्रह्मा बाबा के द्वारा अनेक आत्माओं को हुआ और वे बाबा के बन गये।

भगवानोवाच्य - तुम्हारी स्थिति ज्ञान की सत्यता को सिद्ध करेगी, जब ज्ञान सिद्ध होगा तो ज्ञान-दाता सिद्ध होगा। बाबा ने कहा है -

तुम अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होंगे तो तुम्हारी दृष्टि-वृत्ति से वे अपने स्वरूप में स्थित हो जायेंगे और ज्ञान की सत्यता को मानेंगे और जब ज्ञान की सत्यता को मानेंगे तो ज्ञान-दाता को भी अवश्य ही मानेंगे।

तुम अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होंगे तो उनको साक्षात्कार हो जायेगा।

तुम अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होंगे तो तुम्हारे स्वरूप में परमात्मा के स्वरूप को देखेंगे।

तुम अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होंगे तो वे तुम्हारी दृष्टि-वृत्ति से सुख-शान्ति का अनुभव करेंगे। जैसे ब्रह्मा बाबा ने हमको कराया।

जब तुम अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होंगे और परमपिता परमात्मा की याद में लीन होंगे तुम्हारे स्वरूप में परमात्मा के स्वरूप को देखेंगे, परमात्मा के कर्तव्यों का अनुभव करेंगे।

तुम अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होंगे तो वे तुम्हारी दृष्टि-वृत्ति से सुख-शान्ति का अनुभव करेंगे। जैसे ब्रह्मा बाबा ने हमको कराया।

Son shows Father, जब बच्चे प्रत्यक्ष होंगे तब बाप प्रत्यक्ष होगा अर्थात् जब हमारी अवस्था ऐसी ऊंची होगी कि दुनिया हमारी तरफ आकर्षित होगी और हम उनको अपनी स्थिति का राज़ बतायेंगे तो वे आप ही इस सत्य को अनुभव करेंगे।

परमपिता परमात्मा ने जो गीता ज्ञान दिया है, उसके अनुरूप हमारे जीवन की धारणायें हो जायें, तब गीता ज्ञान सिद्ध होगा। जैसे ब्रह्मा बाबा ने कर के दिखाया।

गीता ज्ञान की धारणा ही गीता ज्ञान को और गीता ज्ञान दाता को प्रत्यक्ष करेगी। गीता ज्ञान का सार है - देह सहित देह से सर्व सम्बन्धों से नष्टोमोहा और स्मृति स्वरूप में स्थित। हमारी निराकारी, निरहंकारी, निर्विकारी स्थिति होगी तो वह स्थिति ही गीता ज्ञान दाता को सिद्ध करेगी।

''आपका चेहरा बताये कि यह दर्शनीयमूर्त हैं।... चैतन्य में भी जैसे ब्रह्मा बाप को देखा, साकार स्वरूप में, फरिश्ता तो बाद में बना लेकिन साकार स्वरूप में होते हुए आप सबको क्या दिखाई देता था ? ... आपका कर्म, चलन, चेहरा स्वत: ही सिद्ध करेगा। भाषण से नहीं

सिद्ध होगा। भाषण तो एक तीर लगाना है लेकिन प्रत्यक्षता होगी चेहरे और चलन से। इनको बनाने वाला कौन! रचना, रचता को प्रत्यक्ष करती है।'' अ.बापदादा 15.12.03

''गीता नई दुनिया को क्रियेट करती है। यह किसको भी पता नहीं कि नई दुनिया को कैसे क्रियेट करते हैं। अभी यह है पुरुषोत्तम संगमयुगी दुनिया। यह पुरानी दुनिया भी नहीं है तो नई दुनिया भी नहीं है। यह है ही संगम। ... अब संगमयुग पर तुम्हारी पाप-आत्माओं से लेन-देन नहीं है। पाप आत्माओं को दान किया तो पाप सिर पर चढ़ जायेगा।''

सा.बाबा 22.4.04 रिवा.

''बाप बच्चों को क्या सिखलाते हैं? जीते जी मरना। जीते जी मरना कैसे होता है, यह और कोई सिखला न सके, सिवाए एक बाप के। ... वहाँ तमोप्रधान शरीर खुशी से छोड़ देते हैं। यह रस्म भी शुरू यहाँ से होती है। ... मैं शरीर से अलग हूँ, तुमको भी वही सिखलाता हूँ। तुम भी अपने को शरीर से अलग समझो।'' सा.बाबा 23.4.04 रिवा.

''गीता का रचयिता जरूर चाहिए। ... मूलवतन, सूक्ष्मवतन, स्थूलवतन - इन तीनों लोकों को कहा जाता है त्रिलोकी, इनको जानने वाला त्रिलोकीनाथ, त्रिकालदर्शी परमपिता परमात्मा शिव है, यह उनकी महिमा है न कि श्रीकृष्ण की। कृष्ण की महिमा है - सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी, मर्यादा पुरुषोत्तम। उनकी भेंट करते हैं चन्द्रमा से। परमात्मा की भेंट चन्द्रमा से नहीं करेंगे।'' सा.बाबा 11.11.03 रिवा.

Q. गीता के भगवान को कौन सिद्ध करेंगे?

जो स्वयं गीता-ज्ञान के स्वरूप होंगे अर्थात् जो स्वयं बाप समान आत्मिक स्वरूप में स्थित होंगे, सम्पन्न और सम्पूर्ण होंगे। सम्पन्नता सम्पूर्णता का दर्पण है, प्रसन्नता सम्पन्नता का दर्पण है। हमारी यथार्थ सम्पन्नता और प्रसन्नता ही परमात्मा पिता को प्रत्यक्ष करेगी।

प्रसन्नता = सम्पन्नता = सम्पूर्णता = बाप समान आत्मिक स्थिति = बाप समान मास्टर ज्ञान के सागर = साक्षी दृष्टा स्थिति में होंगे।

गीता का भगवान सिद्ध करने के लिए अपने में सहनशक्ति और निर्भयता चाहिए तथा विश्व-कल्याण की शुभ भावना एवं दृढ़ संकल्प चाहिए।

''बड़े-बड़े अक्षरों में लिख दो - गीता का भगवान परमपिता परमात्मा शिव है, न कि श्रीकृष्ण। मूल यह एकज भूल ही किसकी बुद्धि में नहीं बैठती है और न ही बच्चे किसकी बुद्धि में बिठाते हैं। ... तुमको अब मत मिलती है देवता बनने की। श्रेष्ठ बनाने वाला बाप कहते हैं कि प्रदर्शनी में बड़े-बड़े अक्षरों में ऐसा बोर्ड लगा दो तो सबकी ऑख खुले कि श्रीकृष्ण भगवान नहीं है।''

सा.बाबा 2.4.07 रिवा.

''सेवा भल प्यार से करो लेकिन ज्ञान को जरूर प्रत्यक्ष करो। ... अथॉरिटी से बोलो, वायुमण्डल को देखकर नहीं। वह तो बहुत समय किया और उस समय के प्रमाण वही ठीक रहा। ... आखिर गुप्त वेष में कितना समय रहेंगे। ... स्नेह और अथॉरिटी दोनों साथ-साथ होना चाहिए।''

अ.बापदादा 16.2.07 रिवा.

Q. बाप को प्रत्यक्ष करने का आधार क्या है?

ज्ञान की प्रत्यक्षता और ज्ञान की प्रत्यक्षता का आधार है स्व-परिवर्तन अर्थात् अपने आत्मिक स्वरूप में स्थिति अर्थात् ज्ञान-स्वरूप स्थिति। बाबा ने कहा है जब ज्ञान प्रत्यक्ष होगा तब ही ज्ञान-दाता प्रत्यक्ष होगा। जब बच्चे प्रत्यक्ष होगा, तब बाप प्रत्यक्ष होगा। स्व-परिवर्तन से ही विश्व परिवर्तन होगा।

''परमात्मा बाप है, सर्वव्यापी नहीं है। इस एक बात को सिद्ध किया तो तुम्हारी जीत है। फिर गीता का भगवान भी सिद्ध हो जायेगा। ... सारा दिन यह बुद्धि में रहना चाहिए कि बाप का परिचय सबको कैसे दें। अब रात-दिन तुम इस चिन्तन में रहो कि कैसे सबको रास्ता बतायें।''

सा.बाबा 5.6.07 रिवा.

Q. चाहते हुए भी स्व-परिवर्तन क्यों नहीं होता है?

हद की आशायें, इच्छायें और परचिन्तन-परदर्शन। बाबा ने अनेक बार कहा है - इच्छायें अच्छा बनने नहीं देंगी, परदर्शन पतन की जड़ है।

''मैं बोली, बाबा सभी परिवर्तन चाहते परन्तु उमंग होते, सोचते भी क्यों नहीं कर पाते? बापदादा मुस्कराते हुए बोले - बच्ची परिवर्तन की इच्छा होती है लेकिन साथ में चारो ओर की हद की इच्छायें कि मेरा नाम हो, मेरी शान हो, मेरा मान भी होगा वा नहीं ... यह तो नहीं हो जायेगा। ... बापदादा ने देखा है - विशेष कारण है एक-दो को देखना और एक-दो को हद की प्राप्ति में कापी करना अर्थात् फॉलो फादर के बजाये फॉलो एक-दो को करना। ... नॉलेजफुल ज्यादा हो जाते लेकिन पॉवरफुल होकर परिवर्तन नहीं कर पाते। ... सर्व बच्चों को पहले स्वयं में सम्पन्नता की प्रत्यक्षता करनी होगी, तब बाप की प्रत्यक्षता होगी।''

अ.बापदादा का सन्देश 30.03.04

Q. क्या हम गीता ज्ञान को सिद्ध करने के लिए किसी न्यायालय में केस कर सकते हैं?

नहीं, क्योंकि कभी किसी धर्मपिता ने भी किसी पर केस किया है तो परमपिता अपने बच्चों पर कैसे केस कर सकता है और परमात्मा तो विश्व-नाटक का पूर्ण ज्ञाता है, इसलिए बाबा सदैव कहते हैं - बच्चे, किसका भी दोष नहीं है, सबका अपना-अपना पार्ट है और जब किसका दोष नहीं है तो केस किस बात का। इसलीए हम गीता ज्ञान या गीता ज्ञानदाता को सिद्ध करने के

लिए किसी न्यायालय में केस नहीं कर सकते हैं, हम गीता ज्ञान की सत्यता को सिद्ध करके अर्थात् अनुभव कराकर गीता ज्ञानदाता श्रीकृष्ण नहीं निराकार ज्ञान सागर परमात्मा शिव है सिद्ध कर सकते है।

Q. क्या गीता का भगवान और गीता ज्ञान केवल लिखने या भाषण देने से सिद्ध होगा ?

नहीं, बाबा ने कहा है - तुम्हारे संकल्प, बोल और कर्म तीनों में समानता हो, तीनों साथ-साथ हों। लिखने व बोलने में आपका स्वरूप गीता ज्ञान का हो तब गीता ज्ञान और गीता ज्ञानदाता सिद्ध होगा।

Q. क्या भक्ति से और भक्ति मार्ग की गीता पढ़ने से उतरती कला होती है ? यदि हाँ तो कैसे और यदि नहीं तो कैसे ?

नहीं। भक्ति से चढ़ती कला तो नहीं होती है लेकिन उतरती कला की गति मन्द अवश्य होती है। सतयुग से लेकर कलियुग के अन्त तक उतरती कला का विधि-विधान तो ड्रामा के नियमानुसार स्वाभाविक है। इसलिए सतयुग की आदि में जैसे ही आत्मा इस धरा पर आती है, देह में प्रवेश करती है, उसी समय से उतरती कला का विधि-विधान लागू हो जाता है। इसलिए ये कहना यथार्थ नहीं है कि भक्ति से उतरती कला होती है या भक्ति की गीता पढ़ने से उतरती कला होती है। भक्ति करने और भक्ति मार्ग की गीता पढ़ते हुए भी यथार्थ सत्य का पता न होने के कारण उतरती कला होती है क्योंकि गीता में स्पष्ट ज्ञान नहीं है। बाबा ने अनेक बार कहा है कि जो सच्चे भक्त होते हैं, वे गुणवान होते हैं, वे छल-कपट नहीं करते, मनुष्यों की भी उनमें भावना होती है कि ये ठगेगा नहीं। सत्य भी यहीं है कि भक्ति से उतरती कला नहीं होती बल्कि भक्ति मार्ग में उतरती कला होती है। यथार्थ भक्ति तो हमारी उतरती कला की गति को मन्द करती है जैसे पोछी लगाने के मकान के ह्रास की गति मन्द होती है। भक्ति में अनेक व्रत, नियम-संयम हमारी उतरती कला की गति को मन्द करते हैं। भक्ति नहीं होती तो मनुष्य और विकारों में जल मरता।

बाबा ने भक्ति के विषय में जो बातें कही हैं, वे हमको भक्ति से उपराम होने, शास्त्र आदि पढ़ने से उपराम होने, गुरुओं आदि की जंजीरों से छुड़ाने के लिए कही हैं क्योंकि अभी हमको सत्य परमात्मा से सत्य ज्ञान मिल गया है, इसलिए हमको भक्ति कापे की आवश्यकता नहीं है और न ही भक्ति मार्ग के कर्मकाण्डों की हमारे लिए आवश्यकता है। बाबा ने अनेक बार ये भी कहा है कि किसको भक्ति छोड़ने के लिए कहना नहीं है। नहीं तो वह भक्ति से भी चला जाये और ज्ञान भी न उठा पाये। ये बात सिद्ध करती है कि बाबा की दृष्टि में ज्ञान न उठाने से भक्ति करना भी ठीक है। बाबा ने ये भी कहा है कि गीता में आटे में नमक के समान

सत्य है और सब असत्य है। उस सत्य के कारण आत्माओं की अपने आत्म-कल्याण की, परमात्मा के प्रति श्रृद्धा-भावना तो रहती है।

इन सब बातों पर विचार करते हुए इस सत्य को भुलाया नहीं जा सकता कि भक्ति से या भक्ति मार्ग की गीता पढ़ने से आत्मा की और विश्व की चढ़ती कला नहीं हो सकती। चढ़ती कला तो ज्ञान सागर परमात्मा के द्वारा दिये गये सत्य गीता ज्ञान और सिखाये गये राजयोग से ही सम्भव है तथा कल्प के संगमयुग पर ही सम्भव है।

Q. क्या ये कहने या मानने से कि गीता ज्ञानदाता श्रीकृष्ण नहीं, निराकार परमात्मा शिव है - हमारा उद्देश्य पूरा हो जाता है या हमारा कर्तव्य पूरा हो जाता है?

नहीं। गीता का भगवान शिव बाबा आया है आत्माओं और विश्व का कल्याण करने के लिए। इसलिए जब तक आत्माओं को आत्मा, परमात्मा, सृष्टि-चक्र, कर्म-सिद्धान्त, कल्प-वृक्ष, योग आदि विषयों के बारे में यथार्थ सत्य की जानकारी न हो, उसका अनुभव न हो तब तक आत्माओं और विश्व का कल्याण हो नहीं सकता। इसलिए भक्त और गीतापाठी आत्माओं को प्रचलित गीता में वर्णित आत्मा, परमात्मा, सृष्टि-चक्र, कर्म-सिद्धान्त, कल्प-वृक्ष, योग आदि के विषय जो लिखा है, उसमें क्या सत्य है, क्या भूल है, भूल का कारण क्या है, किन-किन बातों में विरोधाभास (Contradiction) है आदि बातों को शुभ-भावना और शुभ-कामना से समझाना होगा तब ही हमारा विश्व-कल्याण का उद्देश्य पूरा होगा और गीता ज्ञान तथा गीता के भगवान की प्रत्यक्षता होगी। इस सत्य के स्पष्टीकरण के लिए बाबा ने कहा है कि गीता का भगवान तब सिद्ध होगा जब गीता ज्ञान सिद्ध होगा। इस सत्य को सिद्ध करने का पुरुषार्थ करना ही गीता ज्ञानदाता को सिद्ध करने का यथार्थ पुरुषार्थ है।

प्रचलित गीता और महाभारत को हम देखें तो सारा गीता ज्ञान सुनने के बाद भी गीता के महापात्र अर्जुन का मोह भंग नहीं हुआ, निश्चय नहीं हुआ और अन्त में जब परमात्मा ने अर्जुन को अपने विराट रूप का साक्षात्कार कराया तब उसका मोह भंग हुआ और निश्चय हुआ और वह धर्मयुद्ध करने को राज़ी हुआ। यदि हम सच्चे दिल से गीता ज्ञान और गीता का भगवान सिद्ध करना चाहते हैं तो हमको ऐसी स्थिति बनानी होगी जो हमारे शब्दों से, स्वरूप से, वृत्ति से सामने वाली आत्मा को अपने स्वरूप का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष साक्षात्कार हो जाये और वह अनुभव करे कि यही सत्य ज्ञान है। जैसे प्यारे ब्रह्मा बाबा ने हमको कराया है।

हम ये भी जानते और समझते हैं कि सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी, अहिंसा परमोधर्म की स्थिति तो आत्मा की अन्त में होगी परन्तु अभी हम जितना अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होंगे, उतना ही गीता ज्ञान का फल अर्थात् मुक्ति-जीवनमुक्ति

का अनुभव हम स्वयं भी करेंगे और दूसरों को भी करा सकेंगे। यह अनुभव करना और कराना ही गीता ज्ञान और गीता के भगवान को सिद्ध करने में हमारा योगदान होगा।

Q. गीता ज्ञान और गीता ज्ञानदाता को सिद्ध करने के लिए बाबा का लक्ष्य क्या है?

Q. गीता ज्ञान को सिद्ध करने के लिए क्या-क्या बातें सिद्ध करना आवश्यक है?

यथार्थ गीता ज्ञान क्या है?

गीता ज्ञान-दाता कौन है और क्यों है?

गीता ज्ञान कब दिया गया?

गीता ज्ञान का फल क्या हुआ?

गीता ज्ञान के पात्र कौन-कौन थे?

''गीता ज्ञान को सिद्ध करने के लिए क्या-क्या धारणायें चाहिए? गीता का ज्ञान तो तुमने बहुत सुना और सुनाया है परन्तु उससे भी तुमने सद्गति को नहीं पाया। ... मैं ही ज्ञान का सागर हूँ। ... पवित्र बनना है, फिर नॉलेज भी चाहिए और औरों को भी आप समान बनाना है।''

सा.बाबा 26.7.04 रिवा.

''सारी दुनिया को पैगाम पहुँचाना है कि बाप कहते हैं - मामेकम् याद करो तो पाप कट जायेंगे और आत्मा पावन बन जायेगी। गीता पढ़ने वाले जानते हैं। एक ही गीता शास्त्र है, जिसमें ये महावाक्य हैं। परन्तु उसमें कृष्ण भगवानुवाच लिख दिया है। ... इस समय ही तुमको मिलती है ईश्वरीय मत।''

सा.बाबा 28.7.04 रिवा.

''सबसे बड़ी शक्ति वा अथॉरिटी सत्यता की ही है। ... अथॉरिटी का अर्थ अभिमान नहीं है। जितना बड़े से बड़ी अथॉरिटी, उतना उनकी वृत्ति में रुहानी अथॉरिटी रहती है। उनकी वाणी में स्नेह और नम्रता होगी। ... सत्यता की अथॉरिटी वाले निरहंकारी होते हैं। तो अथॉरिटी भी हो, नशा भी हो और निरहंकारी भी हो। इसको कहते हैं सत्य ज्ञान का प्रत्यक्ष स्वरूप। ... ब्रह्मा बाप को सत्यता की अथॉरिटी का प्रत्यक्ष साकार स्वरूप देखा। जैसे ब्रह्मा बाप को कर्म में, सेवा में, सूरत में, हर चलन से चलता-फिरता अथॉरिटी स्वरूप देखा। ऐसे फॉलो फादर।''

अ.बापदादा 20.3.87

''आगे चलकर सन्यासी भी मानेंगे कि इन्होंको शिक्षा देने वाला परमपिता परमात्मा है। तुम सिर्फ यह सिद्ध करके बताओ कि बाप सर्वव्यापी नहीं है, गीता श्रीकृष्ण नहीं नहीं गाई है ... यह सब पिछाड़ी में होगा।''

सा.बाबा 5.4.07 रिवा.

1. दुनिया में भी देखें तो असमर्थ व्यक्ति समर्थ पर या दो बराबर वाले न्याय के लिए किसी उच्च अथॉरिटी के पास केस करते हैं। परमात्मा तो सर्व समर्थ है, ऑलमाइटी-अथॉरिटी है,

बुद्धिमानों की बुद्धि है, सर्व आत्माओं का बाप है, विश्व-नाटक का पूर्ण ज्ञाता है, वह कैसे अज्ञानी आत्माओं पर अर्थात् अपने बच्चों पर केस करेगा या बच्चों को बच्चों पर केस करने की छुट्टी देगा ? सर्व-समर्थ, बुद्धिमानों की बुद्धि होने के कारण वह स्वयं ही उनकी बुद्धि को पलटा सकता है। ये तो हमको बाबा उन आत्माओं की सेवा के लिए प्रोत्साहित करता है, हमको अपने भाग्य को बनाने के लिए प्रोत्साहित करता है, हमारी ज्ञान की समझ और अच्छी हो, उसके लिए प्रोत्साहित करता है क्योंकि सबको यथार्थ ज्ञान और आत्मिक स्वरूप का अनुभव कराना बाप का कर्तव्य है और बाप का कर्तव्य सो बच्चों का कर्तव्य।

2. यदि गीता के भगवान और गीता ज्ञान के लिए केस करते हैं तो वह केस किस पर किया जायेगा ? क्योंकि गीता तो व्यास ने लिखी है परन्तु वह व्यास कौन है, जिस पर केस किया जायेगा ? दूसरे व्यक्ति तो उसको पढ़ते हैं और अज्ञानतावश उसको सत्य मानते हैं।

क्या कोई ऐसा व्यक्ति या पार्टी है, जिस पर गीता ज्ञान-दाता और गीता-ज्ञान के विषय में केस किया जा सके ? यदि है तो वह कौन है ? हम अपने को देखें - क्या केस करने से पहले हम भगवान के बच्चे बनकर, आत्मानुभूति, परमात्मानुभूति, अतीन्द्रिय सुख में स्थित होकर उनके कल्याण की यथार्थ भावना से ईश्वरीय सन्देश लेकर उसके पास गये हैं ?

''बाप के बने हो तो पेट के लिए तो मिलेगा ही, शरीर निर्वाह के लिए बहुत मिलेगा। जैसे वेदान्ती बच्ची है, उसने इम्तहान दिया, उसमें एक प्वाइन्ट थी - गीता का भगवान कौन ? उसने परमपिता परमात्मा शिव लिख दिया तो उनको नापास कर दिया और जिन्होंने कृष्ण का नाम लिखा था, उनको पास कर दिया। बच्ची ने सच बताया तो उसको न जानने के कारण नापास कर दिया। फिर लड़ना पड़े, मैंने तो यह सच-सच लिखा। गीता का भगवान है ही निराकार परमपिता परमात्मा शिव, देहधारी कृष्ण तो हो न सके। परन्तु बच्ची की दिल थी इस रुहानी सर्विस करने की तो छोड़ दिया।'' सा.बाबा 23.6.04 रिवा.

3. केस भी एक शीतयुद्ध है, जो वादी-प्रतिवादी के मध्य होता है और एक-दूसरे को हराने के उद्देश्य से किया जाता है परन्तु सेवा एक कल्याणकारी कर्तव्य है, जो दया और रहम की भावना से किया जाता है, जो दुखी व्यक्ति को सुखी बनाने के लिए की जाती है। अब हमको युद्ध करना है या सेवा करनी है ? उनको गीता ज्ञान की यथार्थता की अर्थात् आत्मानुभूति, परमात्मानुभूति, अतीन्द्रिय सुख अनुभूति करानी है या युद्ध करके उनको नीचा दिखाना है, हराना है ?

4. यदि हराना है तो तार्किक प्वाइन्ट्स के साथ प्रतिवादी बनकर सामने जाना होगा और यदि सत्य की अनुभूति करानी है तो आत्मिक भाव से, दया की भावना से अतीन्द्रिय सुख में स्थित

होकर, परमात्मा का सन्देश-वाहक बनकर सामने जाना होगा। अब हमको क्या करना है, वह हमको विचार करना है।

5. पहले हम अपने को चेक करें - गीता ज्ञान का सार नष्टोमोहा-स्मृति स्वरूप है, तो क्या हम उस स्थिति में स्थित हैं? यदि नहीं हैं तो हमको किसी पर केस करने का क्या अधिकार है और यदि हैं तो हमारे अन्दर किसी पर केस करने या किसी को हराने का संकल्प ही नहीं आ सकता तथा इसका क्या प्रमाण है कि जो हम कहते हैं, वही सत्य है? वह भी हमारे पास स्पष्ट रूप में होना चाहिए।

बाबा ने अनेक बार कहा है कि ज्ञान-योग-धारणा का प्रत्यक्ष प्रमाण चाहिए, तब ही गीता-ज्ञान और गीता ज्ञान-दाता प्रत्यक्ष होगा अर्थात् गीता ज्ञान प्रत्यक्ष होगा तब ही गीता ज्ञान-दाता प्रत्यक्ष होगा।।

6. परमात्मा सबको निर्दोष मानता है क्योंकि वह ज्ञान का सागर है और ड्रामा का पूर्ण ज्ञाता है तो वह केस किस पर करेगा और किस लिए करेगा तथा किसके पास केस करेगा क्योंकि जब किसका दोष ही नहीं है तो किस पर केस करने का प्रश्न ही नहीं उठता है। केस करने के लिए परमात्मा से बड़ा तो कोई है ही नहीं, जिसके पास केस किया जाये या परमात्मा केस करने की छुट्टी दे।

* दादी गुल्जार जी ने 20.10.05 को ओम् शान्ति भवन में विदेशियों के क्लास में सुनाया कि एक बार किसी ने लिखा कि दादा लेखराज साइकिल रिपेरिंग का काम करता था, जिसको पढ़कर निर्मलशान्ता दादी जी को खराब लगा कि कहाँ डॉयमण्ड का धन्धा करने वाला और कहाँ साइकिल रिपेरिंग का काम। हम उस लिखने वाले पर मान-हानि का केस करेंगे और उसके लिए बाबा को पत्र लिखा कि बाबा छुट्टी दें। इस पर बाबा ने उनको लिखा - बच्ची क्या कोई बाप अपने बच्चे पर केस कर सकता है तथा कोई बहन अपने भाई पर केस कर सकती है, वह अज्ञानी है, उसको प्यार से समझाना तुम्हारा काम है, न कि केस करना।

अब उपर्युक्त बात पर विचार करके हम सोचें कि क्या हम गीता ज्ञान और गीता ज्ञान-दाता के विषय में किसी पर केस कर सकते हैं और क्या बाबा हमको केस करने की छुट्टी देंगे?

''कृष्ण के चरित्र तो कोई हैं नहीं। ... बहादुर तो किसी को तब कहेंगे जब कोई बड़े आदमी को समझाकर दिखाओ। सारा मदार है गीता पर। गीता निराकार परमपिता परमात्मा शिव की गाई हुई है, न कि किसी मनुष्य की।'' सा.बाबा 20.6.07 रिवा.

''तो लास्ट पेपर क्या देखा? स्नेह होते हुए भी नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप। यही लास्ट पेपर यादगार में भी गायन रूप में है। ... एक तरफ स्नेह को समाना और दूसरे तरफ रहा हुआ

लास्ट का हिसाब-किताब सहन शक्ति से समाप्त करना।... कर्मभोग को भी समाना और स्नेह को भी समाना।''

अ.बापदादा 18.1.76

''गीता वालों को मुख्य एक ही बात समझाओ कि भगवान ऊंच से ऊंच को ही कहा जाता है। वह है निराकार। कोई भी देहधारी मनुष्य को भगवान नहीं कह सकते।''

सा.बाबा 8.12.05 रिवा.

''वे भाषण करने वाले भले ही सभा को हँसा लेते हैं या रुला देते हैं लेकिन अशरीरीपन का अनुभव नहीं करा सकते हैं और न बाप से स्नेह पैदा करा सकते हैं। ... समझो गीता के भगवान पर प्वाइन्ट्स देते हो लेकिन जब तक उनको बाप क्या चीज है, हम आत्मा हैं और वह परमात्मा है - यह अनुभव नहीं कराओ तब तक यह बात सिद्ध कैसे होगी? ... जब यह अन्तर महसूस करेंगे तो गीता का भगवान भी सिद्ध हो ही जायेगा।''

अ.बापदादा 2.8.73

''बाप आकर सारा राज़ समझाते हैं। पहले-पहले तुम बच्चे इस बात पर जीत पायेंगे कि भगवान एक निराकार है, न कि साकार। ... श्रीकृष्ण कह नहीं सकता कि देह के सब धर्म छोड़ मामेकम् याद करो। ... यह नॉलेज और कोई नहीं जानते, बाप आपही आकर अपना परिचय देते हैं। वही गीता का भगवान है। यह तुम सिद्ध कर बतायेंगे तो तुम्हारा नाम बहुत बाला हो जायेगा।''

सा.बाबा 27.7.05 रिवा.

''हर बच्चे का संकल्प है कि जल्दी से जल्दी बाप को प्रत्यक्ष करें। लेकिन ड्रामा में राज यह है कि जब तक बच्चे अपने आपको बाप समान जीवन में प्रत्यक्ष नहीं करते तब तक बाप प्रत्यक्ष हो नहीं सकता।''

अ.बापदादा का सन्देश 4.4.05 गुल्जार दादी के द्वारा

''परमात्म-ज्ञान का प्रूफ है आपकी प्रैक्टिकल लाइफ है। एक तरफ धर्म-युद्ध की स्टेज, दूसरी तरफ प्रैक्टिकल धारणामूर्त की स्टेज। ... प्रैक्टिकल में ज्ञान अर्थात् धारणामूर्त, ज्ञानमूर्त, गुणमूर्त। मूर्त से ही वह ज्ञान और गुण दिखाई दें। आजकल डिस्कस करने से अपनी मूर्त को सिद्ध नहीं कर सकते। लेकिन मूर्त से उनको एक सेकेण्ड में शान्त करा सकती हो।''

अ.बापदादा 11.4.73

''शिव परमात्मा की और श्रीकृष्ण की महिमा बताकर कहो, अब जज करो कि गीता का भगवान कौन? ... भगवानुवाच - मन्मनाभव-मामेकम् याद करो तो स्वर्ग का वर्सा मिलेगा। यह किसने कहा? ... बाबा टॉपिक्स देते हैं, उनको रिफाइन करके कैसे किसको समझायें, सो बच्चों को ख्याल करना है।''

सा.बाबा 30.6.07 रिवा.

''जब तुम यह सिद्ध कर बतायेंगे तो समझेंगे कि यह बात तो बिल्कुल ठीक है। ये अपार दुख तो सिवाए एक बाप के और कोई दूर कर नहीं सकते।''

सा.बाबा 17.7.04 रिवा.

स्वयं ही स्वयं से प्रश्न

बाबा ने कहा है - प्रत्यक्ष प्रमाण ही सर्वश्रेष्ठ प्रमाण है। तुम्हारी जीवन सिद्ध करे कि यही गीता ज्ञान अर्थात् इनको परमात्मा के द्वारा ज्ञान मिला है। दुनिया में भी कहते हैं - प्रत्यक्ष को प्रमाण की आवश्यकता नहीं है।

''पर-धर्म, पर-देश दुख देने वाला है। स्वधर्म, स्वदेश सुख देने वाला है।''

अ.बापदादा 23.12.85

''जैसे स्थूल धन वा स्थूल पद के प्राप्ति की चमक चेहरे से मालूम होती है। ... ऐसे ही स्वराज्य अधिकारी बच्चों के चमकते हुए चेहरे दिखाई दें, मेहनत के चिन्ह नहीं दिखाई दें, प्राप्ति के चिन्ह दिखाई दें। ... अभी त्याग दिखाई देता है, भाग्य नहीं दिखाई देता है।''

अ.बापदादा 9.10.87

Q. जब हम गीता ज्ञान और गीता का ज्ञानदाता कौन है, इस बात को सिद्ध करने जा रहे हैं तो पहले हम अपने को चेक करें कि ज्ञान सागर परमात्मा ने हमको जो गीता ज्ञान दिया, उस पर पूर्ण निश्चय है और हमारी स्थिति गीता ज्ञान की है अर्थात् हमारे जीवन में उसकी पूर्ण धारणा है अर्थात् हम नष्टोमोहा-स्मृति स्वरूप स्थिति में हैं?

हम सच्ची दिल से, अपने दिल पर हाथ रखकर अपने को चेक करें कि हम गीता ज्ञान के स्वरूप हैं? बाबा ने नष्टोमोहा और स्मृति-स्वरूप की जो परिभाषा दी है, उस अनुसार हम नष्टोमोहा, स्मृति स्वरूप हैं? बाबा ने कहा अपनी देह से भी जो नष्टोमोहा होगा, वही सच्चा नष्टोमोहा है। स्मृति स्वरूप के लिए बाबा ने कहा - एक बाप दूसरा न कोई, आत्मिक स्वरूप के लिए संकल्प करने की भी आवश्यकता नहीं है, सदा आत्मिक स्वरूप में स्थित हों। यहाँ तक ब्रह्मा बाबा, जिसके तन में स्वयं शिवबाबा बैठा है, उसके लिए भी कहा है कि ब्रह्मा की याद भी व्यभिचारी बनना है, पतन करने वाली है। अब हम अपने को चेक करें कि हम गीता ज्ञान के स्वरूप कहाँ तक बने हैं? ब्रह्मा बाबा ने देह और देह की दुनिया से नष्टोमोहा होकर और एक शिवबाबा की याद से सम्पूर्ण स्थिति को पाया और गीता ज्ञानदाता शिव परमात्मा को हमारे सामने प्रत्यक्ष किया। हम अपने को इस कसौटी पर चेक करें और इसमें जब पास होंगे, खरे उतरेंगे तब गीता ज्ञानदाता परमात्मा शिव को प्रत्यक्ष कर सकेंगे।

Q. क्या हम काम अर्थात् काम विकार एवं कामना-जीत बने हैं? क्योंकि शिवबाबा ने भी काम शब्द का प्रयोग काम-वासना और कामना अर्थात् इच्छायें दोनों रूपों में प्रयोग किया है।

Q. हम जिनके सामने गीता ज्ञान को और गीता ज्ञान दाता परमात्मा को सिद्ध करने जा रहे हैं, उनके प्रति हमारी भावना क्या है अर्थात् हम उसको हराकर अपना लोहा मनवाना चाहते हैं या उनके कल्याणार्थ गीता ज्ञान की सत्यता को सिद्ध करना चाहते हैं? केस हराने के लिए ही किया जाता है, किसके कल्याण के लिए केस की कोई आवश्यकता नहीं है, उसके लिए तो उसके प्रति शुभ भावना शुभ कामना रख समझाया जाता है।

''यह याद रखना है कि हमको कोई कामना नहीं रखनी है, सामना करना है। अगर कोई कामना है तो सामना नही कर सकेंगे। ... तीसरा नेत्र कौन सा है? तीसरा नेत्र कायम होगा तब ही तपस्वी बन सकेंगे। ... जब अपने में प्रत्यक्षता आयेगी तब सृष्टि में भी प्रत्यक्षता होगी।''

अ.बापदादा 6.2.69

''गीता ज्ञान का पहला पाठ है अशरीरी आत्मा बनो और अन्तिम पाठ है - नष्टोमोहा, स्मृति स्वरूप बनो। ... पहले इस पाठ को स्वयं पढ़ना अर्थात् बनना फिर औरों को निमित्त बन पढ़ाना। ... निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी स्थिति को दुनिया के आगे प्रत्यक्ष रूप में लाओ। इसको कहते हैं बाप समान बनना।''

अ.बापदादा 18.1.87

Q. क्या किसी समर्थ को असमर्थ पर केस करने की आवश्यकता होती है?

दुनिया में असमर्थ न्याय के लिए समर्थ पर केस करता है, समर्थ तो स्वत: ही असमर्थ को उसकी बात मानने के लिए बाध्य कर देता है। परमात्मा तो सर्वशक्तिवान सर्व समर्थ है, तो क्या उसको या उसकी तरफ से हमको किसी पर केस करने की आवश्यकता है? हमारी सामर्थ्य स्वत: गीता ज्ञान को सिद्ध करनी चाहिए।

बाहर वालों से प्रश्न

Q. परमात्मा या भगवान की परिभाषा क्या है?

''शिवबाबा खुद कहते - मेरा जन्म दिव्य और अलौकिक है। ... मैं जो हूँ, जैसा हूँ, वैसे मुझे कोई भी नहीं जानते। मैं अपना परिचय आप ही देता हूँ। ... फिर गीता में लिख दिया है - कृष्ण भगवानुवाच। ... शिवबाबा कहते हैं - मैं तुमको जो ज्ञान देता हूँ, वह फिर गुम हो जाता है।''

सा.बाबा 18.9.04 रिवा.

''तुम सन्यासियों से भी पूछ सकते हो कि गीता में जो भगवानुवाच है कि देह सहित देह के सब

धर्म छोड़ मामेकम् याद करो। क्या ये कृष्ण कहते हैं - मामेकम् याद करो? ... वास्तव में एक गीता ही है, जो शिवबाबा ने सुनाई है।'' सा.बाबा 18.9.04 रिवा.

Q. क्या गीता का भगवान आकर प्रचलित गीता का पुस्तक उठाकर सुनाते हैं या वह स्वयं ही गीता ज्ञान देते हैं, जिसके आधार पर बाद में गीता शास्त्र बनता है? यदि बाद में बनता है तो उस गीता में लिखित महावाक्य गीता के भगवान के डायरेक्ट महावाक्य होते हैं या लिखने वाले स्मृति के आधार पर लिखते हैं? स्मृति के आधार पर लिखा हुआ पूर्ण सत्य तो हो नहीं सकता।

''यह सारी नॉलेज बुद्धि से समझने की है। कोई किताब आदि है नहीं। गीता का भगवान हाथ में गीता लेकर आता है क्या? वह तो ज्ञान का सागर है। ... यह सब ड्रामा में नूँध है। एक सेकेण्ड न मिले दूसरे से। ... यह है गीता पाठशाला। कौन पढ़ाते हैं? भगवान राजयोग सिखाते हैं।'' सा.बाबा 14.9.04 रिवा.

''कृष्ण भगवानुवाच - देह सहित ... मामेकम् याद करो। यह गीता के अक्षर हैं, जो पढ़कर सुनाते हैं। ऐसे नहीं कहते कि तुम ऐसे बनो। सिर्फ पढ़ते हैं भगवान जब पतितों को पावन बनाने आया था तो ऐसे कहकर गया था। गीता में परमपिता परमात्मा शिव के बदले कृष्ण का नाम डाल दिया।'' सा.बाबा 12.8.04 रिवा.

Q. गीता की आदि है मन्मनाभव और अन्त है नष्टोमोहा-स्मृति स्वरूप। उस स्थिति की धारणा करने में प्रचलित गीता पढ़ने वाले कितने मनुष्य सफल हुए और हो रहे हैं? यह विचारणीय है।

Q. प्रचलित गीता में भी महावाक्य हैं - कामोपजायते क्रोधः ... स्थिति की धारणा करने में प्रचलित गीता पढ़ने वाले कितने मनुष्य सफल हुए और हो रहे हैं?

Q. गीता के महावाक्य - तद्भासयते सूर्यो न शशांको न पावकः, यद्गत्वा न विवर्तन्ते तद्धाम परमं मम्। (32)

ये महावाक्य सिद्ध करते हैं कि परमात्मा एक देशवासी है परन्तु उसी गीता के महावाक्य परमात्मा को चराचर जगत में व्याप्त ... अर्थात् परमात्मा को सर्वव्यापी भी सिद्ध करते हैं। तो इन दोनों विरोधाभाषी (Contradictory) बातों में सत्य क्या है?

Q. आत्मा श्रीकृष्ण की याद से पावन बनेंगी या निराकार पतित-पावन परमात्मा शिव की याद से पावन बनेंगी? क्या किसी शरीरधारी मनुष्य की याद से आत्मा पावन बन सकती है? क्योंकि देह का धर्म है बाल, युवा, जरा, मृत्यु और योग के सिद्धान्त अनुसार उसको याद

करने से भी वैसे ही स्थिति परिवर्तन होगी। श्रीकृष्ण के लिए ये सब बातें लिखी हुई हैं, उसमें यह भी गायन है कि उनको भील ने वाण मारा, जिससे उनकी मृत्यु हो गई। अब भगवान की मृत्यु हो जाये, ये बात कहाँ तक जंचती है?

''बाप कहते हैं - मुझे याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। गीता में भी ये अक्षर हैं परन्तु कृष्ण का नाम लिखने से बुद्धि ठहरती नहीं है। ... कृष्ण तो ऐसा कह न सके। समझाने के लिए बड़ी मेहनत चाहिए, थकना नहीं है।'' सा.बाबा 11.7.07 रिवा.

''मूल बात है पावन बनने की। अभी तो पवित्र बनो तब ही नई दुनिया में आयेंगे और राज्य करने के लायक भी बनेंगे। बाप कहते हैं - मीठे-मीठे बच्चो, बाप को याद करो तो जन्म-जन्मान्तर के पापों का बोझा उतर जायेगा। पढ़ाई से पाप नहीं कटेंगे। बाप की याद ही मुख्य है।'' सा.बाबा 2.8.04 रिवा.

''कल्याणकारी बाप ने समझाया है - अपने को आत्मा समझ शिवबाबा को याद करो। ... याद से पाप कटते हैं। ... मुख्य है बाप की याद। भारत का प्राचीन राजयोग बहुत मशहूर है। ... शिव को न जानने के कारण भारत का बेड़ा डूबा हुआ है। अब शिवबाबा द्वारा ही भारत का बेड़ा पार होता है।'' सा.बाबा 9.8.04 रिवा.

''अभी प्रश्न है - पतित-पावन कौन? कृष्ण को तो नहीं कहेंगे। पतित-पावन परमपिता परमात्मा ही ज्ञान का सागर है। वही आकर पढ़ाते हैं। ज्ञान को पढ़ाई कहा जाता है। सारा मदार है गीता पर। ... भल कहते हैं - भारत का प्राचीन योग। परन्तु वह भी समझते हैं कि कृष्ण ने सिखाया था। गीता को ही खण्डन कर दिया है। बाप की जीवन कहानी में बच्चे का नाम डाल दिया है। शिवरात्रि भी मनाते परन्तु वह कैसे आते, यह नहीं जानते।''

सा.बाबा 23.7.04 रिवा.

Q. आत्मा का स्वरूप क्या है और क्या आप उसकी अनुभूति करते हो? जैसे कि गीता में है - नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः न चैनं क्लेदयन्ति आपो न शोषअति मारुतः। ... न जायते न म्रियते अजोनित्या शास्वतो अयं हन्यते न हन्यमाने शरीरे।

Q. आत्मा-परमात्मा में परस्पर क्या सम्बन्ध है और दोनों में अन्तर क्या है?

Q. गीता में आत्मा-परमात्मा के स्वरूप के विषय में, सृष्टि चक्र के विषय में, कल्प-वृक्ष के विषय में तीनों लोकों के विषय में, दैवी-आसुरी सम्पदा अर्थात् गुणों के विषय में, विभिन्न दर्शनों एवं धर्मों के विषय में वर्णन किया गया है। तो इस सबको देखने-विचार करने से प्रश्न उठते हैं कि -

Q. महाभारत युद्ध का स्वरूप क्या है, जिसके आदि में गीता ज्ञान दिया गया, वह कब हुआ,

उसको कितना समय हुआ और फिर कब होगा ?

Q. क्या गीता-ज्ञान एक हिंसक युद्ध के मैदान में दिया गया, जहाँ आमने-सामने खड़ी दोनों विरोधी सेनायें परस्पर युद्ध करने के लिए अधीर हो रहीं हैं ? यदि हाँ, तो कब और कहाँ और यदि नहीं तो यथार्थ क्या है ?

Q. क्या गीता-ज्ञान संस्कृत भाषा में दिया गया ? यदि हाँ तो उसे कितने लोगों ने समझा और अभी कितने लोग समझ रहे हैं ? क्या भगवान कुछ लोगों का कल्याण करने के लिए ही आया था ?

Q. गीता ज्ञान किसलिए दिया गया ? यदा यदा हि ... सृजाम्यहं। तो गीता ज्ञान सुनने के बाद उसका फल क्या हुआ और अभी क्या हो रहा है ? क्या धर्म की स्थापना हुई या हो रही है ?

Q. जैसे कि गीता में लिखा है - यदा यदाहि ... सृजाम्यहम्। इससे स्पष्ट होता है कि ये घटना पुनरावृत्त होती है। तो ये गीता ज्ञान के पुनरावृत्त होने का कोई निश्चित समय है या वह समय हर कल्प में बदलता रहता है ? यदि निश्चित है तो वह कितना समय है ?

''जब भारत पर राहू का ग्रहण बैठ जाता है तो भारत गरीब बन जाता है। भारत तो क्या सारे वर्ल्ड पर राहू का ग्रहण है। इसलिए बाप फिर भारत में आते हैं, आकर नई दुनिया स्थापन करते हैं, जिसको स्वर्ग कहा जाता है। ... सबको बोलो - हम रचता और रचना के आदि-मध्य-अन्त को जानते हैं। यह गीता का एपीसोड चल रहा है, जिसमें भगवान ने आकर राजयोग सिखाया है।'' सा.बाबा 23.7.04 रिवा.

Q. गीता ज्ञान धर्म की स्थापना और अधर्म के नाश के लिए दिया गया, तो धर्म की स्थापना और अधर्म के नाश का समय क्या हो सकता है अर्थात् वह समय द्वापर के अन्त का होगा या कलियुग के अन्त का होगा ? उस समय और वर्तमान समय की परिस्थितियों में कोई सामन्जस्य अर्थात् समानता है ?

Q. गीता पढ़ने का मनुष्य का उद्देश्य क्या है और वह अपने उद्देश्य में कहाँ तक सफल हो रहा है ? मुक्ति-जीवनमुक्ति की प्राप्ति ही हर आत्मा की मूलभूत प्यास है। तो क्या वे प्रचलित गीता को पढ़ने या सुनने से मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव कर रहे हैं ?

मुक्ति-जीवनमुक्ति हर आत्मा का ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार है।

Q. क्या धर्म की स्थापना किसी हिंसक युद्ध से सम्भव है ?

Q. क्या कोई देहधारी भगवान हो सकता है ? यदि हाँ तो क्या भगवान के भी कोई माता-पिता होते हैं ? क्या भगवान किसी माता के गर्भ से जन्म लेता है ? यदि लेता है तो वे माता-पिता

भगवान से भी बड़े हो गये, जिन्होंने भगवान को जन्म दिया। यदि ऐसा है तो विभिन्न धर्मों में परमात्मा को अयोनि क्यों कहा गया है ?

श्रीकृष्ण ने सांदीपन गुरु के यहाँ सुदामा के साथ शिक्षा भी ली थी - क्या जो ज्ञान का आधारमूर्त हो, उसको किसी गुरु से शिक्षा लेने की आवश्यकता होगी ?

श्रीकृष्ण के 16108 रानियां थीं, माखन चोरी करते थे, जन्म भी जेल में हुआ और उनके पिता वासुदेव उनको जमुना पार नन्द-यशोदा के यहाँ लेकर गये आदि आदि बातें कहाँ तक सत्य हैं और स्वीकार करने योग्य हैं ?

Q. क्या गीता का भगवान किसी एक धर्म वालों का है या सर्व धर्म वालों का है ? यदि सर्व धर्म वालों का है तो श्रीकृष्ण को भगवान कितने धर्म वाले मानते हैं ?

''यह है बेहद की पढ़ाई। पढ़ाई एक दिन भी मिस न हो। हम हैं स्टूडेण्ट, गॉड फादर पढ़ाते हैं। वह नशा बच्चों को चढ़ा रहना चाहिए। भगवानुवाच है, सिर्फ उन्होंने नाम बदलकर कृष्ण का नाम डाल दिया है। भूल से कृष्ण भगवानुवाच समझ लिया है क्योंकि कृष्ण है नेक्स्ट टू गॉड।''

सा.बाबा 06.9.04 रिवा.

Q. क्या गीता ज्ञान श्रीकृष्ण ने एक अर्जुन को ही सुनाया या गीता के भगवान ने गीता ज्ञान सर्व आत्माओं के कल्याणार्थ दिया ? अर्थात् क्या गीता ज्ञान किसी व्यक्ति विशेष, किसी धर्म विशेष या सम्प्रदाय विशेष के लिए है या सर्वात्माओं के लिए है ?

Q. क्या गीता के मूल शास्त्र महाभारत के पात्र ऐतिहासिक पुरुष थे या वे प्रतीकात्मक हैं ? यदि ऐतिहासिक पुरुष थे तो अर्जुन कौन था, पाण्डव कौन थे, कौरव कौन थे, यादव कौन थे, श्रीकृष्ण कौन थे ?

''जो ओटे सो अर्जुन। अर्जुन की विशेषता है सदा बिन्दी स्वरूप बन विजयी बनना। ऐसे नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप बनने वाला अर्जुन, सदा गीता ज्ञान सुनने और मनन करने वाला अर्जुन। ऐसा विदेही, जीते जी सब मरे पड़े हैं - ऐसे बेहद की वैराग्य वृत्ति वाले अर्जुन कौन बनेंगे ?''

अ.बापदादा 1.01.86

''श्रीकृष्ण तो दैवी गुणों वाला देवता है। बाप कहते हैं - मैं दैवी गुणों और आसुरी गुणों से न्यारा हूँ। ... गीता का ज्ञान कोई देहधारी मनुष्य वा देवता ने नहीं दिया है।''

सा.बाबा 13.7.04 रिवा.

Q. गीता-महाभारत और रामायण में क्या सामन्जस्य है ? क्योंकि गीता में है - यदा यदाहि ... सृजाम्यहम् और रामायण में भी है - जब जब होये धर्म की हानि, बाढ़ैं असुर-अधम अभिमानी। तब-तब धरि प्रभु मनुज शरीरा हरैं कृपानिधि सज्जन पीरा।।

Q. यथार्थ गीता ज्ञान का समय कौनसा है अर्थात् गीता ज्ञान कब दिया गया और कब लिखा गया ? अर्थात् उसी समय लिखा गया या कुछ समय बाद में लिखा गया ? यदि उसी समय लिखा गया तो किसने लिखा और यदि बाद में लिखा गया तो कितने समय बाद लिखा गया और किसने लिखा ?

Q. क्या प्रचलित गीता में वर्णित परमात्मा का परिचय श्रीकृष्ण पर घटित होता है ? यदि हाँ तो कैसे और यदि नहीं तो सत्य क्या है ?

''भगवान माना सर्वात्माओं का बाप। अभी वे हमको पढ़ाते हैं। वे तो समझते हैं - कृष्ण पढ़ाते हैं। यह तो पढ़ाने वाला है निराकार बाप। ... आत्मा अविनाशी है, वह 84 जन्म लेकर सारा पार्ट बजाती है। ... मैं तुमको राजयोग सिखाता हूँ, जिसका भक्ति मार्ग में नाम रख दिया है गीता ... इसको गीता पाठशाला कहा जाता है। गीता से नर से नारायण बनते हो।''

सा.बाबा 4.9.04 रिवा.

Q. क्या प्रचलित गीता में वर्णित ज्ञान में परस्पर कोई विरोधाभास (Contradictions) हैं ? यदि हैं तो वे क्या-क्या हैं ?

Q. प्रचलित गीता ज्ञान से विश्व की सर्व आत्माओं की सन्तुष्टि होती है अर्थात् सर्वात्मायें उसे मानती हैं ? यदि हाँ तो कैसे ?

Q. प्रचलित गीता पढ़ने के बाद आत्मा-परमात्मा के परिचय का क्या निष्कर्ष निकलता है ?

Q. श्रीकृष्ण और निराकार शिव में क्या अन्तर है, ये दोनों कौन हैं ? दोनों की प्रतिमायें बनाते हैं तो इनमें क्या अन्तर है ? दोनों का गुण-कर्तव्य क्या है ?

''ईश्वर सर्वव्यापी नहीं , यह ओपिनियन जरूर लिखवाना है। तुम बच्चों को यह पक्का निश्चय है कि ईश्वर सर्वव्यापी नहीं है। ... दूसरा फिर ओपिनियन चाहिए कि इस समझानी से हम समझते हैं - गीता का भगवान श्रीकृष्ण नहीं है। भगवान किसी मनुष्य या देवता को नहीं कहा जाता है। ... अभी जो ओपिनियन लिखते वे कोई काम के नहीं हैं। ... मुख्य बात, जिसमें ही तुम्हारी विजय होनी है, वह लिखवाओ। यह ब्रह्माकुमारियां सत्य कहती हैं कि ईश्वर सर्वव्यापी नहीं है, वह तो सर्वात्माओं का बाप है, वही गीता का भगवान है। तीसरा पतित-पावनी पानी की गंगा नहीं परन्तु एक बाप ही पतित-पावन है।''

सा.बाबा 3.9.04 रिवा.

''भगवानुचाच है कि गीता सबकी माई-बाप है। वर्सा गीता से मिलता है। ... बाइबिल आदि को कोई भी माता नहीं कहेंगे। ... तुम्हारा साजन है शिव, फिर तुम किसी देहधारी को क्यों याद करते हो ?''

सा.बाबा 4.5.07 रिवा.

''समझाने के बाद पूछो - गीता का भगवान कौन है ? जज करो। इस पहेली को हल करने से सेकेण्ड में जनक मिसल जीवनमुक्ति पा सकते हो। यह भी भारत में मशहूर है।''

सा.बाबा 26.7.07 रिवा.

''उतरती कला और चढ़ती कला - यह भी ड्रामा में नूँध है। यह सब समझने की बातें हैं। यह बड़ी अच्छी टॉपिक है। गीता का भगवान कौन - इस पहेली को हल करने से तुम बाप का वर्सा पाकर विश्व का मालिक बन सकते हो।''

सा.बाबा 26.7.07 रिवा.

''ज्ञान तो एक परमपिता परमात्मा में ही है। गीता से ही सद्गति होती है। वह ज्ञान तो बाप के पास ही है। ... गीता भी शिवबाबा ने ही गाई थी, उसने ही कहा है मामेकम् याद करो।''

सा.बाबा 11.8.04 रिवा.

''जो राजा होता है, उसकी अपनी भाषा होती है। सतयुगी राजाओं की अपनी भाषा होगी। संस्कृत वहाँ नहीं होगी। सतयुग की रस्म-रिवाज ही अलग है। ... बाप आते ही नरक को स्वर्ग बनाने।''

सा.बाबा 25.5.04 रिवा.

''मैं अब तुम बच्चों को सब शास्त्रों का राज़ समझाता हूँ। अब तुम जज करो कि कौन राइट है। ... बाप सचखण्ड के लिए सच्चा ज्ञान देते हैं, बाकी वेद-शास्त्र सब हैं भक्ति मार्ग के।''

सा.बाबा 27.7.07 रिवा.

''जैसे कर्मों की गति गहन गाई है, वैसे पवित्रता की परिभाषा भी अति गुह्य है। पवित्रता माया के अनेक विघ्नों से बचने की छत्रछाया है। पवित्रता को ही सुख-शान्ति की जननी कहा जाता है। ... किसी भी कारण से दुख का जरा भी अनुभव होता है तो सम्पूर्ण पवित्रता की कमी है।''

अ.बापदादा 14.11.87

इन सब बातों पर विचार करके आप स्वयं ही निर्णय कीजिये कि गीता ज्ञान दाता कौन हो सकता है अर्थात् देहधारी 'श्रीकृष्ण' या निराकार ज्ञान सागर परमात्मा 'शिव' है और गीता में वर्णित युद्ध क्या है, वह कब हुआ, उसका परिणाम क्या हुआ ? इन सब प्रश्नों पर विचार करने के बाद ही सत्यता को अनुभव किया जा सकता है और अनुभव करने के बाद ही अभीष्ट पुरुषार्थ करके अपने अभीष्ट लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं अर्थात् अधर्म का नाश और धर्म की स्थापना हो सकती है।

''जो इस खेल को अच्छी रीति समझते हैं, वे अन्दर में खुशी में रहते हैं।... शिव जयन्ति के बाद कृष्ण का जन्म होता है। शिव जयन्ति के बाद है कृष्ण जयन्ति। शिवबाबा ही भारत को

स्वर्ग बनाते हैं। कहते है कल्प के संगमयु पर मैं आकर राजयोग सिखलाता हूँ। महाभारत की लड़ाई हो तब तो नर्क का विनाश और स्वर्ग की स्थापना हो।''

सा.बाबा 28.7.07 रिवा.

''अभी जो स्कूलों में हिस्ट्री-जॉग्राफी पढ़ाई जाती है, वह तो अधूरा ज्ञान है। मूलवतन, सूक्ष्मवतन, स्थूलवतन का पूरा राज़ समझाना चाहिए। ... बेहद की हिस्ट्री-जॉग्राफी बाप ही समझाते हैं। ... यह सूर्यवंशी डिनॉयस्टी कैसे स्थापन हुई, यह नॉलेज किसी के पास है नहीं।''

सा.बाबा 28.7.07 रिवा.

''इस महाभारत की लड़ाई में कितने खत्म होने वाले हैं। आत्मायें परमधाम में जाकर स्टार मिसल अपने-अपने सेक्शन में रहेंगी। ... फिर जिनको जिस समय पार्ट बजाने आना है, आती रहेंगी। यह अविनाशी ड्रामा है। प्रलय तो कभी होती नहीं है। सतयुग से कलिसुग अन्त तक वृद्धि होती रहेगी।''

सा.बाबा 30.7.07 रिवा.

''गीता में भी है ना - अर्जुन को भगवान ने बैठ समझाया। अब घोड़े-गाड़ी में बैठ राजयोग सिखलाये, यह तो हो नहीं सकता। ... यह तो झूठ हो गया।''

सा.बाबा 02.8.07 रिवा.

''तुम बच्चे जानते हो निश्चयबुद्धि ही विजयी होते हैं। बाप में निश्चय रखेंगे तो जरूर बादशाही मिलेगी। ... शिव तो चक्र में आता नहीं है, इसलिए उनको गोरा वा सांवरा दिखा न सकें। ... गायन है सागर के बच्चों को काम ने जलाए भस्म कर दिया। अभी तुम्हारे ऊपर ज्ञानामृत की वर्षा होती है।''

सा.बाबा 2.08.07 रिवा.

गीता और साक्षीभाव / गीता और निर्दोष दृष्टि

साक्षीभाव और निर्दोष दृष्टि यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान का दर्पण है या कसौटी है तथा ये स्थिति ही सुख-शान्ति मय जीचन अर्थात् मुक्ति-जीवनमुक्ति के अनूभूति का एकमात्र आधार है।

क्या प्रचलित गीता में ऐसा कोई ज्ञान है, जिससे आत्मा हर आत्मा को निर्दोष अनुभव करे अथवा साक्षीभाव को धारण सके ? यदि है तो वह क्या है ?

अभी निराकार परमात्मा शिव ने ब्रह्मा तन से जो इस विश्व-नाटक का ज्ञान दिया दिया है, उसको यथार्थ रीति से समझने और निश्चय करने वाला निश्चित ही इस विश्व-नाटक को साक्षी होकर देखेगा, वह किसी भी घटना से प्रभावित नहीं होगा और वह हर आत्मा को निर्दोष अनुभव करेगा। प्रचलित गीता में भी है कि हर जीवात्मा अपना आप ही मित्र है और अपना आपही शत्रु है परन्तु उसमें कोई भी ऐसी बात समझ में नहीं आती, जिससे आत्मा की ये धारणा हो जाये परन्तु अभी शिवबाबा ने जो विश्व-नाटक का ज्ञान दिया है, उसकी यथार्थ रीति धारण करने वाले की अवश्य ही ये धारणा बन जाती है।

गीता और कर्म-सिद्धान्त

गीता में निष्काम कर्मयोग का वर्णन है परन्तु प्रश्न है क्या कोई आत्मा निष्काम हो सकती है ? यदि हो सकती तो कैसे हो सकती ? क्या प्रचलित गीता में ऐसा कोई ज्ञान है, जिससे आत्मा की निष्काम वृत्ति हो जाये ?

परमात्मा के ब्रह्मा द्वारा महावाक्य है कि कोई भी देहधारी आत्मा निष्काम हो नहीं सकती। हर आत्मा को अपने कर्म का फल अवश्य मिलता है।

जीवात्मा अपना आपेही मित्र और आपे ही अपना शत्रु है - का भाव

साराँश

गीता ज्ञान का आदि है मन्मनाभव-मध्याजीभव और अन्त है नष्टोमोहा-स्मृति स्वरूप अर्थात् परमात्मा पिता की मधुर स्मृति से नष्टोमोहा बनना है।

गीता ज्ञान द्वापर युग के अन्त में नहीं दिया गया बल्कि गीता ज्ञान कल्प के पुरुषोत्तम संगमयुग अर्थात् कलियुग के अन्त और सतयुग के आदि के संगमयुग पर दिया गया।

ज्ञान ज्ञानसागर निराकार परमपिता परमात्मा शिव ही यथार्थ ज्ञान देने में समर्थ है, इसलिए उसने ही गीता ज्ञान दिया क्योंकि वही ज्ञान का सागर और नये विश्व का रचता अर्थात् बीजरूप है अर्थात् पुरानी दुनिया को नई में परिवर्तन करने वाला है।

गीता ज्ञान निराकार परमपिता परमात्मा शिव ने ने साकार ब्रह्मा तन द्वारा दिया गया है, इसीलिए भारत में निराकार और साकार दोनों का समान महत्व है। साकार ब्रह्मा-तन को ही अर्जुन का रथ कहा गया है।

प्रचलित गीता में भी आत्मा और परमात्मा को अविनाशी बताया है, परमात्मा को सूर्य-चांद-तारों से परे परमधाम का वासी बताया है। गीता में नष्टोमोहा, स्मृतिलब्धा स्थिति के लिए इशारा दिया गया परन्तु आत्मा-परमात्मा के स्वरूप का यथार्थ ज्ञान और निश्चय न होने के कारण उस स्थिति को धारण करने की शक्ति किसी आत्मा में जाग्रत नहीं होती है। इसीलिए परमात्मा शिव ने भी कहा है कि गीता में आटे में नमक के बराबर सत्य है। अभी निराकार परमात्मा शिव जो गीता ज्ञान दे रहे हैं, उससे अनेकों आत्मायें नष्टोमोहा-स्मृति स्वरूप बनकर मुक्ति-जीवनमुक्ति का परम सुख अनुभव कर रही हैं।

गीता ज्ञान और गीता ज्ञान-दाता किसी न्यायालय में सिद्ध होने वाली बात नहीं है और न ही किसी न्यायालय में सिद्ध होगा तथा परमात्मा भी उसके लिए केस करने के लिए कभी भी छुट्टी नहीं देगा। ये तो हमको अपनी गीता ज्ञान के स्वरूप की स्थिति से जन-साधारण के बीच सिद्ध करने की बात है और वैसे ही सिद्ध होगी। जैसे ब्रह्मा बाबा ने हमारे सामने ज्ञान का स्वरूप बनकर ज्ञान और ज्ञानदाता परमात्मा शिव को सिद्ध किया, वैसे ही हम दूसरों के सामने सिद्ध कर सकते हैं अर्थात् उनको अनुभव करा सकते हैं।

जो आत्मा नष्टोमोहा, स्मृति स्वरूप, काम और कामनाजीत स्थिति में स्थित होगी, उसके सामने और सम्पर्क में आते ही आत्मायें उस स्वरूप को अनुभव करेंगी अर्थात् वे देह से न्यारी स्थिति में स्थित होकर मुक्ति-जीवनमुक्ति का परम सुख अनुभव करेंगी, जिससे उनके गीता ज्ञान और गीता ज्ञानदाता के विषय में तर्क करने के संकल्प स्वत: मर्ज हो जायेंगे और

वे गीता ज्ञान और गीता ज्ञान-दाता परमात्मा को बुद्धि और दिल से स्वीकार करेंगे। गीता ज्ञानदाता परमात्मा को सिद्ध करने के लिए हमको अपनी स्थिति गीता ज्ञान के स्वरूप की बनानी है और सारा कार्य परमात्मा स्वयं ही करेगा या ड्रामानुसार स्वत: ही होगा।

गीता ज्ञानदाता को सिद्ध करने की ये बात तो बाबा ने हमको ऐसे बुद्धिजीवियों की सेवा के लिए कही है, जो गीता को मानते हैं और वह सेवा करना हम सभी ब्रह्मा वत्सों का पावन कर्तव्य है। इसलिए ही बाबा कहते हैं कि ऐसे माइक तैयार करो, जो स्वयं तुम्हारी ओर से यथार्थ सत्य को बोलें।

गीता के महावाक्यों के अनुसार अभी पुन: शिवबाबा वही गीता ज्ञान दे रहे हैं, जिसका सन्देश सर्वात्माओं को देना हम सभी ब्रह्मा-वत्सों का पावन कर्तव्य है। बाबा के महावाक्य हैं - गीता ज्ञान प्रत्यक्ष होगा तब गीता ज्ञानदाता परमात्मा प्रत्यक्ष होगा। तो यथार्थ गीता ज्ञान कैसे प्रत्यक्ष हो, उस पर ही यहाँ कुछ विचार करना हमारा पावन कर्तव्य है।

ज्ञान सागर परमात्मा ने विश्व-नाटक के अनेक गुह्य रहस्यों का उद्घाटन किया गया है, जिसका कुछ वर्णन भक्ति मार्ग की गीता में भी हैं। सत्यता को अनुभव करने के लिए बाबा ने हम आत्माओं को समय प्रति समय चैलेन्ज किया है कि तुम जज करो कि क्या सत्य है।

शिवबाबा सत्य है, उसने जो भी महावाक्य उच्चारे हैं, वे सभी देश-काल-परिस्थिति को देखते हुए सत्य हैं और उस देश-काल-परिस्थिति के अनुसार अति आवश्यक भी हैं। उसमें हमको या किसी ब्रह्मा-वत्स को न सन्देह है और न ही हो सकता है परन्तु उस ज्ञान को धारण करने के लिए अभीष्ठ पुरुषार्थ तो करना ही होगा, इसलिए बाबा समय प्रति समय मुरली में कहते हैं कि ज्ञान का मनन-चिन्तन करो, अपनी घोट तो नशा चढ़े। वह हमारा शिक्षक भी है तो शिक्षक के रूप में भी अनेक बातें समझाई हैं। जैसे कई बार बाबा कहते हैं कि आई. सी. एस. की पढ़ाई पहले तो नहीं पढ़ाई जायेगी, पहले तो पहले क्लास की पढ़ाई ही पढ़ाई जायेगी। इसी लक्ष्य से बाबा ने आत्मा-परमात्मा का स्वरूप पहले अंगुष्ठाकार बताया और बाद में बिन्दु रूप स्पष्ट किया। ऐसे ही अनेक गुह्य रहस्यों का ज्ञान बाबा ने हमको दिया है, जिसको हमने यथा शक्ति धारण किया है।

अमृत-धारा

यह अटल सत्य है कि जो हुआ वह टल नहीं सकता और जो नहीं हुआ वह हो नहीं सकता। जो हुआ वह अच्छा हुआ, जो हो रहा है वह अच्छा है और जो होगा वह भी अच्छा होगा क्योंकि ये विश्व-नाटक सत्य, न्यायपूर्ण और कल्याणकारी है। पवित्रता ही जीवन है। पवित्रता अर्थात् आत्मिक स्वरूप में स्थिति, आत्मिक स्मृति, आत्मिक दृष्टि और आत्मिक वृत्ति। जहाँ पवित्रता है, वहाँ सर्व प्राप्तियां, सर्व सुख स्वत: होते हैं, इच्छामात्रम् अविद्या होती है। सर्व सम्बन्धों में मधुरता होती है, ब्रह्मचर्य की स्वभाविक धारणा होती है, राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, ईर्ष्या-घृणा, इच्छा-आकांक्षा का नाम-निशान नहीं होता है। पवित्र आत्मा में समय पर कृत्य का संकल्प स्वत: जाग्रत होता है, उसकी शुभ में अभिरुचि और अशुभ में अरुचि स्वत: होती है, इसलिए सदा निर्संकल्प होती है। सर्व आत्माओं के प्रति उसकी शुभ भावना, शुभ कामना होती है, जिसके परिणाम स्वरूप सर्व की उसके प्रति शुभ भावना, शुभ कामना अवश्य होती है।

विश्व एक नाटक है, इसमें न कोई अपना है और न कोई पराया है। न कोई अपना मित्र है और न कोई अपना शत्रु है। जो आज अपना है, वह कल पराया होगा और पराया अपना होगा। न कोई हमको कुछ दे सकता है और न कोई हमारा कुछ ले सकता है। न किसी ने हमको कुछ दिया है और न ही हमारा किसी ने कुछ लिया है। हर आत्मा अपना अनादि-अविनाशी पार्ट बजा रही है और अपने कर्मों अनुसार सुख या दुख को पा रही है। इसलिए किससे राग-द्वेष, भय-चिन्ता का कोई प्रश्न ही नहीं।

दाता एक परमात्मा है, उसने हमको जो दिया है, वही हमारे लिए हितकर है। भगवानोवाच्य - बच्चे, तुम परमधाम के रहने वाले हो, इस सृष्टि पर पार्ट बजाने आये हो, अभी तुमको वापस घर चलना है। इस सत्यता को समझकर देह और देह की दुनिया से न्यारे होकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर परम-शान्ति का अनुभव करो, बाप के साथ विश्व-कल्याण की सेवा कर परमानन्द का अनुभव करो और साक्षी होकर इस विश्व-नाटक को देखो और ट्रस्टी होकर पार्ट बजाते हुए परम सुख का अनुभव करो। यही सुख-शान्तिमय जीवन का सुगम पथ है।

इस सत्य पर दृढ़ निश्चय होगा और सतत् अभ्यास तथा सहज स्थिति होगी तब ही हम अपनी अन्तिम मंजिल सुखमय जीवन और सुखद मृत्यु को सहज प्राप्त कर सकेंगे अर्थात् राग-द्वेष, भय-चिन्ता से मुक्त होंगे। यही जीवन की परम-प्राप्ति, परमात्मा का परम वरदान है, इस ब्राह्मण जीवन का परम-पुरुषार्थ और इस जीवन का परम-कर्तव्य है।

यह बात भी ध्यान में रखना अति आवश्यक है - ड्रामा का ज्ञान और आत्मिक स्थिति रूपी दोनों पहिये साथ होंगे और उनके बीच में परमात्मा रूपी धुरी होगी तब ही गाड़ी सफलतापूर्वक चलेगी।

''ब्राह्मण अर्थात् निश्चयबुद्धि और निश्चयबुद्धि अर्थात् विजयी। तो हर एक ब्राह्मण निश्चयबुद्धि कहाँ तक बने हैं और विजयी कहाँ तक बने हैं। क्योंकि ब्राह्मण जीवन का फाउण्डेशन है निश्चय और निश्चय का प्रमाण है विजय।''

अ.बापदादा 15.4.92

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:-

स्पार्क – आध्यात्मिक अनुप्रयोग अनुसन्धान केन्द्र
(SpARC – Spiritual Applications Research Centre),
बेहतर विश्व निर्माण अकादमी,
ज्ञान सरोवर, आबू पर्वत - 307501
राजस्थान, भारत
मोबाईल: 94141 51879, 94140 03497,
94140 82607
फैक्स – 02974-238951
ई-मेल – bksparc@gmail.com,
sparc@bkivv.org